



राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली



मनुवाक  
हंसकुमार तिवारी

मूल्य ७ रूप्य



पहला सम्स्करण 1970, © ताराशंकर बन्धोपाध्याय

भारत मुद्रणालय गाजपुरा दिल्ली में मुद्रित

DUNIYA EK BAZAR (Novel) by Tarashankar Bandyopadhyay

Translated from the Bengali by Hans Kumar Tiwari      Rs 6 00

**साराल की हाट जाओगे ?**

मेरा भुनभुनी रोग लें जाओगे ?

गवई लाकाकिन है एक। 'सालार' है कटवा के पास। वह लोग की जीभ की नोक पर 'साराल' बैसे हो गया, यह पड़ित लोग बता सकते हैं। लेकिन लोग साराल कहते हैं। और, साराल की हाट बहुत बड़ी हाट है, बड़ी प्राचीन हाट है। लोग कहते हैं, किसीको भुनभुनी रोग हो, तो वहा खरीद बेची करने से—पास करके अगर कुछ बेचना हो तो अपने मन से 'फाव' दीजिए, उम फाव क साथ ही आपका भुनभुनी रोग जाता रहेगा। और अगर कुछ खरीदना हो, तो वाजिब दाम से एक पाई भी किसी तरह से ज्यादा द दीजिए। उस ज्यादा दाम के साथ रोग भी चला जाएगा। सो सालार क दुकानदार बड़ी सावधानी के साथ सामान बचते हैं। कभी किसीसे पाई-पैसा ठगते नहीं, नही तो उसीके साथ भुनभुनी रोग भी चना आता है।

भुवनपुर की हाट बनी पुरानी हाट है। इस इलाके मे भुवनपुर कई हैं। गंगा के किनारे है गंगाभुवनपुर, कई कोस पश्चिम हटकर है विप्रभुवनपुर, उससे भागे छोटा भुवनपुर। भाठान हलके के थीभुवन पुर की जमीन बड़ी उपजाऊ है। फी बीघा बारह चौदह भा, सोलह

मा तक भी पाता हो जाता है। एक बीघा जमीन का दाम बटा बट्टा है— ढाई हजार रुपया बीघा भी बिता है। जगमें बट्टा बड़िया दिग्गज का बनबचूड घान हाता है। उता पात का माता बड़ा उम्मा हाता है, बड मोती का दाना हो जत। पोषा म जब बालिया मगती है ता गुणसूत दूर तक महमहा उठता है।

लेकिन यह हाट भुवनपुर जो है यह तिक भुवनपुर है। यहां भुवनेश्वर घनातिलिय है—उट्टारे ताम पर भुवनपुर। बट्टर म लोग तिवभुवनपुर कहा करते है यहां के लोग तिव भुवनपुर बट्टा है। भादि भुवनपुर। विन्वदर की बागी है तारवनाप का तारवेन्दर है, बघातप का देवपर—भुवनेश्वर का भुवनपुर।

तिव से दुर्गा का भगडा हुआ था। दुर्गा ने गहने मांगे के बाद मांगे थे, घातिर म दास की चूड़ियां मांगी थीं। तिव ने साप गुना दिया था भई घपना तो पेट भीस पर चलता है। यह सब मैं बट्टा स लाऊ ? इससे दुर्गा बिगड लडी हुई और भने चली गईं। साधार तिवजी चूडीवाला बनकर वहां गए, दुर्गा को मताया।

मगर भगडा कभी मिटने को भी था। दुर्गा को गहने का बसा ही शोक और तिवजी भीख मांगने के सिवा दूसरा काम नहीं करने के। सो जब फिर इसी बात पर ठनी तो तिवजी बोले घरे यावा देवता-दानव सब तो तुम्ही को तीनो भुवन की मालकिन कहते हैं। घपना इतजाम तुम घाप भी तो कर ले सकती हो। मेरी जान बचानो, मैं बेचारा भीख मागूंगा भरघट म बिता के चूल्हे पर पका-पुकाकर खाऊंगा और पेड तले पडा रहूंगा।

दुर्गा न शिव को सबक सिखाने की सोची। विद्वकर्म से कहा, देखो मणिकर्णिका के मसान पर, शिवजी जहा घपना त्रिगूल गाडेबठे हैं वही पर रातारात मेरी राजधानी खडी कर दो। विद्वकर्म ने बसा ही कर दिया। दुर्गा राज राजेश्वरी अननपूर्णा के रूप म वही जा रहीं। तीनो भुवन का सारा भन्न हरण करके काशी म भन्नकूट का पहाड पर

किया और घोषणा कर दो, जो भी यहाँ हाथ पसारेंगा, पत्तल बिछाएगा, उसीको भर-पेट भोजन मिलेगा। गिव ने सारा विश्व-श्रद्धाढ छाना, भीष में दाना नहीं मिला। आखिर को वह काशी आए। अनन्यर्था की भीष पर जिए। मगर मन का मलाल नहीं गया।

मन ही मन सोच विचारकर एक दिन उहोने नदी को बुलाया। कहा, 'नदी, मैं भी एक राजधानी बनवाऊंगा। नदी न छूटते ही कहा, बहुत खूब भगवन्! मा जी की जया विजया दो दाइया हैं न, उनकी झिड़किया तो अब बरदास्त नहीं होतीं।'

—लेकिन राजधानी बनाएगा कौन? कबलन विदवकर्मा की दौड़ तो मही कागी बनाने तक है। इससे अच्छी नगरी बनाना तो वह जानता नहीं। मगर मुझे तो काशी से बेहतर नगरी चाहिए।

नदी ने कहा, फिफ किस बात की है दयालु! आपके भूत प्रेतों की यह जमात है। जानें कितने मंदिर बनानेवाले, महल बनानेवाले, किला बनानेवाले कुशल कारीगर भर-भर कर भूत हुए हैं और आपके दरबार में हैं। मारते-पीते हैं आपके डमरू की ताल पर नाचते हैं हरि नाम के साथ। उहीसे कह दीजिए, बना देंगे। विश्वकर्मा ने रात भर मे बनाया था, ये मिनटा मे बनाकर रख देंगे।

मिथ्यी भूतों ने सुना तो बड़े खुश हुए। कबलन विदवकर्मा को हराकर रहेंगे। वे बोले हुकुम हो भूतभावन प्राणुतोस। अभी बनाने हैं। लेकिन गाज का हुकुम हो भगवन्।

गिव बोले, नदी, इन कम्बस्तों को पाच सौ मन गाजा दे दो। लेकिन भुन लो, यह नगरी काशी में कतई न मिले। यह नदी किनारे नहीं, सूखी परती पर होगी। पत्थर पत्थर को नहीं मणि माणिक, स्फटिक ममर कुछ भी नहीं। सिफ मिट्टी। और मेरा जो घर होगा, उसकी नींव माटी की होगी, दीवान हवा की, छत आसमान की, और तुम सबके के लिए होगा बहुत बड़ा किला। बल के पेड़ों का बरक, बरगद का बरक, मिहोड का बरक। लोगों के लिए होंगे घर, पानी के लिए विनाल जलागम

और एक बाजार ।

भुवनपुर के लोग कहते हैं पगले शिव की पगली धुन, भूता का भूतहा काम एक पहर बीतते न बीतते उस धू धू करती परती में एक टलमटल जलवाल विशाल सरोवर के चारो ओर भुवनपुर खडा हो गया । सरोवर क घाट पर नर-खोपडी पर मिट्टी का टीला खडा हुआ, वही हुआ भुवनेश्वर स्थान । आज भी वहा पहुंचने के लिए बीस सीढियाँ चढ़नी पडती हैं । हवा की दीवाल और आकाश की छत को तो लोग नहीं देख पाते देवता देखते हैं । भूत देखत ह । चारा तरफ बाबा के भूतो का किला बन महल बरगद महल सिहाड महल । बल के बगीचे म ब्रह्मदत्त सेना पनियो का बास हुआ बरगद बगान म रही भूतो की सेना और सिहोड महल म प्रेतो की पलटन बस गई । नदी ने ढाक पिटवाया सिंगा फुकवाया । माटी के भुवन के लोगो को जता दिया—भुवनेश्वर के इस भुवनपुर में जो घसंगे उ हैं भूत का भय नहीं रहेगा । उन पर प्रेतनियो की नजर नहीं लगेगी ।

दल के दल लोग घ्राए । लोगो स खचाखच भर गया भुवनपुर । मगर मुसीबत आइ लोग बाग खाएगे क्या ? अनपूर्णा और उनके साथ लक्ष्मी तो इधर को पीठ किए काशी म बैठी हैं । सो शिव ने गधेश्वरी को बुलाया । बोले गधेश्वरी तुम्हें भुवनपुर की मा बनना होगा । अनपूर्णा और लक्ष्मी का घमण्ड तोटना होगा । गधेश्वरी ने कहा ठीक है । लगाया मैंने भुवनपुर के बाजार म आसन । मूग मसूर चना मिच और मसाले—ये चीजें भुवनपुर के सिवाय और कही नहीं मिलेंगी । घान चावल लिए अनपूर्णा पडी रह बागी मे !

भुवनेश्वर न कहा, और मेरा कहा रहा मेरा वचन—इस भुवनपुर मे जो भी चीज विकने आएगी सब बिक जाएगी वापस नहीं लौटेगी । कुवेर को भादेग रहा कि वह सब खरीद लेंगे ।

वही हुआ । भुवनेश्वर की हाट खूब जम उठी । कुवेर के अनुचर ने मनुष्य का जम लिया भुवनपुर म गदा खालकर बठ गए । घवतरि के

बेले बंद बने वहा । कोई रोगी आए तो यहा चंगा हाकर ही रहंगा । दवा से नही ता भुवनेश्वर की घन है चरणादक है ।

तमाम स लोग आने लगे । खबर आई कि काशी म अनपणा सोच म पड गइ है । भुवनेश्वर बोले, मैं मगर गही जाता ।

देवगण आए—प्रभो ! यह कैसा पागलपन है । आप काशी बलिण ।

भुवनेश्वर बोले, हरगिज नही । ब्रह्मा विष्णु भी आए तो भी नही । मैं गणेश्वरी के साथ ही यहा राज करंगा ।

देवगण हताश होकर लौट गए ।

कई दिन के बाद गणेश्वरी और कुबेर आए ।

बोने—आपन आज पडी है ।

—कैसी आपन ?

एक सूबसूरत जवान औरत आई है । हाथ म एक पिटारा है । पिटारे म बह अपने मन का दुख लाई है । वह दुख उसम कौन खरीदे ? हम खरीदन गए । न हागा तो खरीदकर उसे पानी म फेंक देंगे । मगर कीमत मुनकर लौट आया । वह कीमत तो अपन पल्ल नही है ।

गिब ने पूछा, क्या कीमत भागती है वह ? राज स्वय का राज ? हीरा मोती ?

—गही देवता, वह कहती है एक पिटारा सुख देकर दुख मरा यह पिटारा नो ।

—बस यह कौन-सी बडी बात है । बला, उस एक पिटारा सुख दे आए । उहर का गने म रक्वा है दुख को न होया तो कजर मे रम लूगा ।

शिव गए । जावर सामन खडे हुए तो उस औरत का रूप देखकर पलकें ही न गिरी । भवाक अपन को जरा ममाल कर बाने, अपना दुख का पिटारा दो मुझे ।

—पहले सुख का पिटारा तो दा देवता ।

—प्रभो या कुबेर, लामो एक पिटारा तो लाया ।



पिटारे को हाथ में लेकर शिव बोले, मेरे वरदान से यह पिटारा तुम्हारे मन के सुख से भर जाए !

श्रीरत्न ने सुख का पिटारा लिया। शिव की जय-जयकार की। कहा अरे श्री शिव के दूतगण कहा हो। शिव के वचन को सत्य बराने के लिए आओ। मेरा पति भाग गया है। उसे वापस मेरे घर पहुंचा दो। पति के बिना स्त्री को मन का सुख कहा ?

वह स्त्री हनहनाती हुई बड़ चली। इधर खेल सेमल बरगद के पेड़ों से शिव की सेना उतरी सबके आगे स्वयं नदी—रस्सा लेकर वे सब शिव को बाधने लगे।

अरे ! यह क्या ? अरे ऐ ! करता क्या है ? शिव रज होकर गरजने लग।

नदी ने कहा चीख-पुकार न करिए देवता ! हाठ दबाए चुप रहिए। खुद ही तो वरदान दिया है और फिर आपने ही बाधने का हुक्म दिया है। अब चीखने चिल्लाने से क्या होना ! ऐ भूतों बाधो, पगले बाबा को, खूब कसकर बाधो ! देखना खोलकर भाग न जाए। तोड़ न डालें !

शिव ने गरजकर कहा नदी !

नदी ने हाथ जोड़कर कहा आपसे आपका वरदान आपका वचन बड़ा है प्रभो ! हम क्या करें ! पहचान नहीं रहे हैं इन्हें ये मा दुर्गा जो है !

शिव ने एक लंबा निश्वास छोड़ा तो तो चल। न न भया तत्रिक् रुक् जा। यह कहकर पुकारा दुर्गा मैं हार गया, हार मानता हूँ। तुम्हें पहचान नहीं पाया। आज सबसे नशा जरा जोर का हो गया था। आखा से देख ही नहीं पा रहा था। खर ! जब हार हो गई, तो मैं आप ही चल्तूंगा। लेकिन मेरे बड़े शीक से बनवाए इस भुवनपुर की कोई व्यवस्था कर जाओ। आखिर यह तुम्हारे पति की ही कीर्ति है—बरबाद होने से तुम्हारी ही बदनामी होगी।

दुर्गा १ हसकर बहा, धृञ्ज। मैं यह वर देती हूँ कि तुम्हारा घोडा-सा घस यहा रहेगा भुवनेश्वर शिव होकर, मैं गधेन्वरी होकर रहूंगी और यह हाट रहेगी। इस हाट में अनबिकी कोई चीज नहीं रहेगी। सुख की कीमत पर यहा दुख बिबेगा। दुख की कीमत पर सुख। लेकिन हा मेरे जैसी निष्ठा होनी चाहिए मन की। विश्वास होना चाहिए। दोमना होने से, दे कि न दे, यह दुविधा मन में होने से नहीं होगा। दुख का बोझा बचने को जाने पर दूना होगा। सुख के बदले दुख नहीं मिलेगा, सुख को बढ़ाकर घर लौटने लोग। हुए खुश ? शिव ने कहा, हा। खुश। तो फिर चलो।

चलो। बघन खोलने को बह दो।

दुर्गा बोली बघन खुलेगा, लेकिन नदी के बंधे पर बढकर चलना होगा। वरना मुझे तो तुम्हारी हरकत का पता है, जाने किस मछुप्रा टोली में कौन-सी शरीरत को देखकर भाग पडोगे। याकि डामटोली में गाजे की गध से जा जमोगे।

तो शिव नदी के कंधे पर सवार हुए। साह को सिंह की दुम में बाध दिया गया। दुर्गा सिंह पर सवार हो काशी लौटीं।

यहा लोगो में यही कथा प्रचलित है। बगाल में शिव-दुर्गा की बहुतेरी कहानिया हैं। यह भी उनमें-से एक है। बगाल में शिव खेती करते हैं। शय की चूडिया के लिए रज होकर दुर्गा नहर चली जाती हैं। शिव के चरित्र को परखने के लिए दुर्गा मछेरिन बनती हैं मछली पकडती हैं। उनके रूप पर रोझ कर शिव मछुप्राटोली के चक्कर काटत हैं कीचड-पानी घाटकर मछुप्रा के साथ साथ मछली पकडने हैं। भुवनपुर में भुवनेश्वर भंरव आज भी शलकित रहकर खरीद विक्री पर निगरानी रखते हैं। गधेन्वरी पूजा के समय मेला लगता है, उस समय शिव पूण रूप में भुवनेश्वर में प्रधिष्ठित होते हैं।

भ्राजकल भ्राजादी के बाद सन् चौवन-पचपन साल में सैतलमत हुमा—उसमें सरकारी छानबीन से यह सब गप्प-गालिया खुली। यह

सब किसी गजेडी पुरोहित आदि की धरतून है—भुवपुर व पीरत  
 सिहोड के जंगल से घिरे उम टील पर पर्यर गागर यात्रिया की भीट  
 जमाने के लिए यह कहानी मनी गई है। भुवनपुर के पास का गांव  
 गधयणिके का गाव है। मुसलमाना के अमल म पौडार का भौव भाजन  
 होकर कटवा अचल से तपान दे यहा सगे सवधिया व बीच भाग आए  
 थे। कारोबार-कुशल उन नवीन देने यन्माय यत्त हुए अपना मागा स  
 बिना कोई वर विरोध किए दो कोस दूर की इस धरती का बदारस्त  
 लिया था। उस समय पाच कोस लया ताल माटी के इम पयरोन  
 मदान का नाम था तीर भुवन का मदान। इसने तीर बीचाबीच उस  
 जमान की सडक खली गई है। सडक के पाम उत्तर की ओर तीन कोम  
 पर ओर दक्खिन की ओर दो कोस पर दा गाव हैं। वरगद अल पीपल  
 का यह जंगल उस समय खूनी डाकपा का अडडा था। इम पाच कोम  
 की दूरी म कोई अच्छा तालाब नही था। बदोवस्त लने के बाद नवीन  
 देने यहा एक छोटा सा पालरा खुदाया था और डा चोर छिडारा स  
 समझोता करके उहे थोणे थोडी जमीन देकर रमत बनायर बसाया  
 था। उसके बाद यहा एक चट्टी कायम की थी। ये डानू ताग ही यत्त  
 के पहरेदार थे। चट्टी से धीरे धीरे इमे धान चावल का आदत बनाया।  
 फिर उस छोटे से पोखरे को बडा जलाशय बनवाया। बडा ही निमल  
 पानी निकला। नीचे से सोता फूटा था। गड इलाके म कुछ हाथ माटी  
 खोदते ही जस पानी निकल आता है सोभाग्य से दे को बसा ही सोता  
 मिल गया था। धीरे धीरे वह आन्त जम गया। देने मकान बनवाया।  
 कुछ अपने सग आ बसे आसपास। उनके गुरु भी वही आ बस। देने  
 उनके लिए मकान बनवा दिया। कुछ जगह-जमीन भी दो। यही गुरु  
 साभ विहान उस टीले पर बठा करते थे। रात के सन्नाट म कुछ जप-तप  
 भी करत। अचानक एन दिन उहाने सपना देखा। यही सपना। और  
 एक दिन सचमुच ही माटी ठेलकर गिबजी निकल आए। देखने के लिए  
 लोग की भीट उमड पडी। गुरु ने कहा अगली पूणिमा वशाखी पणिमा

का तुम गधेवरी की पूजा करो नवीन । लोगो से पहा, इस सरोवर के एक हजार घाठ भंग पानी में गिब को स्नान कराना होगा ।

सरोवर का तान पडा भुवनदीधी । तीन भुवन के मदान का नाम हुआ भुवनपुर । बाबा का नाम भुवनेश्वर । लोगो की भीडभाड होने से ही बाजार-हाट नग जाता है । आप ही बाजार लगा । सगीद विक्री खूब हुई । इसी प्रवाद से तालाब के बाघ पर हाट की नींव पडी । शिव के बचन को पूरा करने के लिए नवीन दे हाट की सारी अनविकी चीजों को गरीब निया करते थे । उन चीजों को दूसरे दिन गाडी पर लादकर पाच कोस दूर की गोपालगज हाट को भेज दिया करते । नुकसान भी होता तो उसे व्यापारी नवीन दे भेज जाते । सोम और गुरु शिव का दिन है । उहीं दिन बाबा भवनेश्वर की हाट लगती । शिवजी की पूजा भी होती, भेंट-पूजा भी चढती । हाट से वसूती भी की जाती । भेंट पूजा और हाट की वसूली का दो हिस्सा होना । भेंट-पूजा का तीन हिस्सा गुरु का, एक हिस्सा दे बाबू का, और वसूली का तीन हिस्सा दे बाबू का एक हिस्सा गुरु का होता । आगे चलकर सन १९०३ में इसके लिए गुरु शिष्य म मुकदमे-बाजी हुई । शिष्यों ने टाकुर के टीले के प्रवेश द्वार पर एक दान पटी रख दी थी और लोगो का उसीमे पूजा प्रणामी ढालने को कहा था उहीं पैसा स तालाब का संस्कार पक्के का घाट, टीले पर जान की मीठी और ऊपर के चौतरे पर सगमरसर लगाया जाएगा । उस मुकदमे में ये जानें सामने आईं । मामल का मुलहनामा दोना ही तरफ है । सेटनमेट के समय उस मुलहनाम की नखिया निकली । उससे और भी अजीब अजीब दातें जानने में आईं । हाट की वसूती में शिष्यो ने गुरु के हिस्से पर एतराज किया था । भुवनेश्वर के पडे उसका हिस्सा क्या पाएगा ? हाट की जमीन कुछ देवोत्तर नहीं है । वह देवों की अपनी मास जायदाद है ।

गुरु का के वृद्धे त्रिपुराचरण मिश्र ने इसके जवाब में कहा था हाट गिब का कारण चलती है । शिव का जो दिन है सोमवार उसी दिन हाट

सगती है। जो लोग शिव की पूजा करने आते हैं, वही लेने-देते हैं। और फिर व्यवसाय के हिस्सेदार के रूप में यह मिश्रण गंगा से परिश्रम करता आया है। इसके मज़ीर में यह बताया कि अभी यहाँ मिथिला की नाईं शिवरात्रि के समय ब्याह-मवध पकाने करने की प्रयास करने की कोशिश की थी उन्होंने। वे स्वयं मयिल ब्राह्मण हैं। मिथिला में ऐसा मेला लगता है जहाँ वर और नया-पक्ष के लोग जाते हैं देवता के दान करते हैं और बेटा-बेटी के ब्याह का सबंध तय करते हैं। यह मेला मिथिला में आज भी लगता है। शिव के वरदान से भुवनेश्वर में सुख-दुख की सरीद बेची होती है लिहाजा बेटों का ब्याह दुख और बेटे का ब्याह सुख है। शिव की साक्षी मानकर इस विनिमय से विवाह आनंद का होगा—इसका भरोसा किया था। रामकेलि के भेने में वष्णव लोग वष्णवा खोजते हैं वष्णवी वष्णव। माला बदल जाती है। यहाँ भी गुरु न बसा ही कुछ करने की सलाह दी थी। शिष्यों ने मानो भी था। विवाह पीछे सवा पांच आना शिव की प्रणामी और चार आना हाट का कर लेने से काफी आमदनी होती। कोशिश की गई थी। कुछ दिन चला भी था। उसके बाद उठ गया। १८८०-८१ की बात है। त्रिपुराचरण उस समय युवक थे। उन्हें याद है। देवश के बूते पुरनिए शोभाराम दे हैं वे बताए। यह रिवाज तो उठ गया पर अभी भी ब्याह के समय लोग यहाँ से बाबाधान का सिंदूर और हाट से सूप घादि ले जाते हैं। इससे ब्याह नायद गुभ होता है।

मामले में आपसी सुलह हुई। उस सुलह के मुताबिक शिव की आमदनी गुरु की और हाट की आय शिष्य की होती है। हा तरकारी की जो बसूली होती है उसमें गुरु का हिस्सा होता है। एक टोकारी तरकारी बसूल करके उसे शिष्य ही भेज दिया करते। थोड़ी बहुत तरकारी शिवजी पर भी चढ़ती। कंदे की डठल छोटा करणी। नीम का मौसम हा न हो नीम। क्यादा चढौवा इसीका चढता। कभी कभी मिठाई दूध और सुगन्धदार अरवा चावल शहद।

यहाँ घनेक प्रकार की बाँतें यहाँ के बाँटे में प्रचलित हैं—

भुवनपुर की हाट जाग्रो,  
माटी दबर डबनी लाग्रो ।  
भनपच रोग सहज ही जाता,  
दुल के बढने सुख है आता ।

बड़ा लबा-सा है । कंदे की डटन, कलमी शाक—जो भी वहाँ से जाइए, बिक जाएगा । देवी दवा म साग, सटाई, गुड मुरमुरा—इनकी मनाही होती है । मगर बाबाघान की दवा खाने से साग—यही की हाट का साग—खाना ही पडता है । यहाँ से जरा ही दूर पर मयूरक्षी नदी से बनी एक भोल-सी है । उसके चारों तरफ तरह-तरह का साग बगुमार होता है । वह जगह दे बाबुधो की है और साग खाने का नियम सेवायत मित्र परिवार का चलाया हुआ है ।

ये छोटी-छोटी बाँतें हुई । बनी बाँत है यहाँ का गज । इस हाट के पास ही सडक के दोनो तरफ एक समय बहुत बड़ा गज जम गया था । छोटा तो अभी भी नहीं है पर टुटन गुन्हा गई है । यहाँ के गिब और हाट के महातम से तथा इस सुंदर जलानय के कारण धान, चावल, मूग, मसूर मिच, उडद लदी गाडिया यहाँ जमा होती थीं । भुवनपुर से दो कोस के फासले पर गोपालपुर है । गधवणिको की प्रधानता है वहाँ, जहाँ आकर नवीन दे ने शुरु मे पनाह ली थी, पुराने समय म आदतगारी का वहाँ बडा गज था । उसके परली तरफ तीन कोस पर एक छोटा-सा बाजार था । इही दोनो की चलती को मद करके भुवनपुर की हाट और गज का सितारा बुलद हुआ था । खालीमेक साल पहले भुवनपुर से तानिक कोस दूर पर एक लाइट रेलवे की सहूलियती आई । गोपालपुर से कोस भर की दूरी पर तब से भुवनपुर का वसा बुक्सान तो नहीं हुआ पर मदी-सी आई । गोपालपुर के व्यवसायियो ने स्टेशन के करीब एक गज बसाने की कोशिश की । कुछ-कुछ कामयाब भी हुए । सोलह साल पहले मुस्क आजाद हुआ । उसके दस साल के बाद फिर पामा पलटा । इस सडक की सरकार ने

कोलतार का बनवा दिया। बस लारी टुकें दौड़ने लगी। एक भारवाडी ने चावल को मिन सोल दी। फिर सन साठ मे अनोखी ही बात हो गई। रास्ते के दो।। किनारे बनार से लोहे के खभे खडे किए गए। एक बनार हुई टेलीग्राफ के तारा के खभो की फिर दूसरी बनार उन खभा पर तीन भूलते हुए तार दूर तक दौड गए। खभा के निचले हिस्से को कटील तारा से घेर लिया गया, उनपर लाल रंग से आकी खोपडी के बोट टाग दिए गए। उन पर लिखा रहा—सावधान ! कल्पना से परे की बात। विजली की बत्तिया गलेंगी !

भुवनपुर व गोले के इलाके में विजली के लटटू जल उठे। गोपालपुर में भी जल स्टेगन के इलाके में भी जल। विजली की यह लाइन माइथन से जा रही है। दुर्गापुर होकर यहा-वहा यो कहिए सारे देश में दौड जाएगी। अभी भागव बड़े-बड़े गहरा में ही यह जगर मगर पहुंचा है छोटे छोटे गावो तक नहीं पहुंच पाया। आगे चलकर पहुंचगा। भुवनपुर की हाट के बीच में भी एक खभ के माथे पर एक लटटू लटक गया।

हाट तीन बजे तिन से लगनी। टूटन में साभ हो जाती। या कहिए साभ हान में ही बढ़ाना पड जाता। सोमवार की हाट अवश्य रोगनी जसावर भी चलती है। कोई लालटन जलाता कोई दो मुन्ही कुप्पी कोई दजक। घांघी-यानी में मुसीबत होती। वह मुसीबत विजली की बजह से जाती रनी।

इसमें समय क्यादा सुगी टिकली की भा के परिवार का हुई। घोर हुई पर-बन्ग घुनरिया के बाप का घोर पीवा जमानार को। सबसे रजिग हई दमन रागान को। बन्ग रासाल गाजा पीता है। हफनी होता है।

सकेगी। टिकली को चुनरिया की तरह वाप का डर नहीं है। उसकी माँ सब कुछ जानती है। उसे सबसे ज्यादा खुशी हुई। रात का गाहक आने पर वह दूर से ही देख लेगी और वही चुनरिया उसके गाहक को बहका ले तो उससे भगड सकेगी।

हाट में जैसे कूड़ा-बचरा एक ओर ढेर हाकर पड़ा रहता है, ये भी हाट में ही जमी पड़ी हैं। यही इनकी पदाइश हुई, यही मौत होगी। इन लोगों में शादी-व्याह की बसी बड़ी कठिन पावदी नहीं है। एक दिन एकाएक टिकली की माँ में सिंदूर दमक उठा। किसने दिया—किसीने इसकी खोज-खबर नहीं ली।

भुवनपुर की इस हाट में अचानक एक दिन रूपवती मालती आ पहुँची। भरी जयानी। उन्नीस-बीस साल की बचारी लडकी। अजीब लडकी। बदन पर सादी कमीज, टकटक रंगीन कोर की साड़ी, कमर पर एक टाकरी। एक अचबूड़ी औरत के सिर पर दूसरी एक टोसरी रखकर वह हाट के अंदर पठी और ताती के छज्जे के सामने खड़ी होकर बोली घरनीदास की दुकान कौन-सी है बता सकते हैं? सुरभि गाँव का घरनी दास—तात के कपड़े बेचते हैं। हाट में उस समय भीड़ भाड़ कम थी। बेचनेवाला का आना शुरू ही हुआ था। सौदा-पाती खरीदनेवालों की भीड़ नहीं आई थी। फिर भी जो थोड़े से लोग आए थे, सबका मुँह उस छज्जे की तरफ घूम गया। एक छोकरा—कमर पर खड़ी एक लाठी, उस पर आस-सा बनाता हुआ आड़ा आड़ा पड़ा एक डडा, उसपर झूलता हुआ रंग विरगा फीता, कार, बाल में खासने के काँटे, हैयर क्लिप। हाक लगाकर बेचा करता है—

दो-दो आना, फीता, कार  
लबाइ में हाथ चार।  
बाल बाघो, खुलेगा ना  
चल देगा तो मिलेगा ना।

दामाद की बाघा, नहीं टूटने का। दामाद बाघने की कार चाल बाघने



का पीता ! दो दो आना ! दो दो आना ! वह छोकरा चिल्ला पडा—  
कुमकुम टीका महावर ।

उसका बोलना बेकार नहीं गया । उस युवती ने भाग उगलनेवाली  
नजरा से एक बार उस देखकर मुह फेर लिया ।

तात के कपटों का वही दुकानदार घरनीदास था । पुरनिया आदमी ।  
मालती की ओर दुविधा की नजर से ताकते हुए बोला—घरनीदास से  
तुम्हें क्या काम है बिटिया ? घरनीदास से ?

‘आप ही हैं ? मैं पहचान गई थी । फिर भी पूछा । आपन मुझे  
पहचाना नहीं ? मेरे बाप

—तुम श्रीमनदास की बेटा हो ?

—जी हा । मैं मालती ।

—तुम ? तुम घरनीदास माना बोल नहीं पा रहा था ।

मालती ने कहा, सात दिन हुए, छूटकर आई हू । घरनीदास ने कहा  
मैं तुम्हारे बाप के बराबर हू बिटिया कुछ ख्याल न करना जेलखाने में  
कुछ बुरी तो नहीं रही । बड़ी खूबसूरत हो गई हो ।

मालती हसी । बोली जी । घर से वहा कही अच्छी तरह थी । घर  
रही होती ता दाईगिरी करनी होती या फिर समुराल जाकर लौंडी-बादी  
बनती ।

—तुम्हें तो चार साल की सजा हुई थी ?

—हा लेकिन साढे तीन ही साल में छूट गई ।

वह धारा फिर से हाक लगा उठा—कुमकुम, महावर स्नी, सावुन  
पावडर—सस्ता लगा दिया, सस्ता । आलूवाला भी आदमी पुरनिया  
है । वह उठकर मालती को देखने गया था । लौटकर अपनी चटाई  
पर बठने हुए बोला धरे ओरे रसिया छोर वह कोई आसान छोकरा  
नहा है । सूनी है सूनी । जरा सोच-समझकर सस्ते में बेचने जाना ।  
हा ।

सूनी ! वह छोकरा चौंक उठा ।

श्रीमत् वरागो माथे पर टोकरी उठाए मनिहारी सामान बेचने के लिए इस हाट में आया करता था। और और दिन घूम घूमकर इस-उस गांव में फेरी करता था। मनिहारी का मतलब सस्ता तेल फूलेल, सिद्धूर माला, फीता, कार, हेयर किचप, हेयर पिन, ताला-कुजी, पेंसिल, रबर, कापिया, चीनी मिट्टी के खिलौने स्नट, स्लेट पेंसिल, पहाड़े की किताब, पहली किताब बचड़े घोंन का साबुन, बदन में लगाने का साबुन, खूब सस्ता सेंट। यही सब, इनके सिवाय श्रीमत के पास मछली शिकार का सरजाम होता। दो चार हिल किस्म किस्म के काटे मूंग का घागा, सूता सहित तगी। सूता श्रीमत के खुद के हाथ का बनाया होता। और फिर उसके दास्त गौदक लुहार का बनाया काटा। श्रीमत उसे स्पेशल काटा कहता। श्रीमत अपने सूत में आध मन का एक बटलरा भुलाए रखता था। तगी के काटे सूत से मयूराक्षी की भील में दो-दो मगर पकड़े गए थे। एक का चमड़ा श्रीमत के अपने ही घर में था। नमक लगाकर चमड़े का सुखा लिया था, फिर उसके अंदर पुथाल भरकर एक टेढ़ा मेढ़ा मगर बनाकर उसने अपनी घर की दीवाल में लटका दिया था। खुद श्रीमत मछली का पक्का शिकारी था। जिस दिन मनिहारी की फेरी में नहीं निकलता, उस दिन वह भील में मछली

मारने जाता। और रात को गान के सुयी गृहस्थो के पोषर से  
 चुराकर मछली मारता। उसका वह मछली मारना गजब का  
 हाता। जिस तालव म खासी अच्छी मछलिया हाती उसम लगातार  
 मात आठ दिन तक छिप छिपाकर मसाल डाल धाया करता। उसके  
 बाद एक दिन बास की एक करची के घोघा-घीच बपडे म काफी घारा  
 बाधकर उसे पानी म गाड आरा। करची का घोडा-मा हिम्सा पानी  
 के ऊपर होता। उसीपर घाघ की तीन चार खोलिया सूत म बाध  
 दता। लगातार आठ दिना तक खाद्य की खुगवू पाकर वहा मछलिमा  
 बटुरती चक्कर काटा करती। करची म बधी पोटली पर धुयने मारती  
 जिसस ऊपर बधी घोघे की खोलिया से खुट-खुट सुट-खुट आवाज होती  
 रहती। और तब एक दिन श्रीमत रणवाकुरा सा बहा जाता। रात  
 म एक छोटी मोटी छिप मे लगी का मजबूत घागा डालकर उसम  
 तीन चार काटे गूथ दता और उन काटा को करची की पाटली म घागे  
 से बाध देता। खुद कमर भर पानी म बडे हाकर छिप को घेती  
 के फेंटे का सहारा देकर दाना हाथो स बसकर पबडे रहता। जमादा  
 देर नही लगती। लुभाइ मछनिया काटे लगाने के बक्त हट तो जाती  
 पर आदमी के हटत ही फौरन आकर पोटली पर मुह मारना गुह कर  
 देती। घोघे की खोलिया सुट-खुट करती। शिकारी की करामात  
 यही पर है। बाध का शिकारी जस अघेरे मचान पर ब बठे मरी की  
 हडडी चवाने की आवाज से ही ताड जाता है कि यह आवाज गीदड की  
 है यह भेडिय की यह धारीदार बडे बाध की—मछली का शिकारी  
 श्रीमत ठीक वसे ही आवाज से ही समझलेता कि यह मछली ढाई  
 सेर की यह पाच सेर की यह दस सेर की है, यह कतला यह रोहू  
 या गिरकी है। वह घात लगाए खडा रहता जसे ही काई पद्रह सेर  
 की राहू की ठाकर से खटाखट-खटाखट की आवाज होती कि वह दोनो  
 हाया से जौरो का भटका मारकर हाया को अपने पीछे की ओर तक  
 खींच लेता।

श्रीमन बग ही साहसी मर था। उसके उस भटके से पइह सेर की रोहू काट म गुमबर गिर के ऊपर से धूय म उठवर एकवारगा पीछे सूखी जमान पर जा रहती। यह कोई आसान काम नहीं। यह माटी पर खे-मड पूसार बाघ व गिकार के समान है—बाघ वा उसकी बुदान के साथ ही पछाड डारन जता कठिन काम है। कमर म बधी हुई छिप के भटके से मछली यदि सिर के पीछे जाकर गिर गई, ता गिकारी की जीन जानिए, कही मछली पीछे जाकर नहीं गिरी, यह पानी म ही रह गई या जरा-सा उठवर फिर पानी म ही गिर गई, ता उसक घक्के से गिकारी का घौघे मुह पानी मे गिर जाना पडेगा और उतनी बडी मछली की पानी म उतनी ताबत की खच से डूब मरन की नौबत आ जाएगी। लकिन मरत कम ही हैं। ऐसे म जमीन पर लडे होकर बाघ के गिकार म इमका घडा फर है। क्योंकि बाघ व गिकार म ऐसे गिकारी बहुत मरत हैं।

श्रीमन ऐसे गिकार म कुगल था और बदन से भी वास्तव मे मरदाना था। और महेज मरदाना ही नहीं, खूबमूरत भी था।

भोग्य पर गुजर-बसर चलानेवाले गापालपुर के चैरागी का यह लडका छुटपन से द बाबू के यहा खानसामागिरी म भर्ती हुआ था। बाबू के यहा और जगतपुर व बाजार म नई बयार बही। पहले महामुद के बाद, १६२६ २७ साल। एक और बदमातरम दूसरी और मोटर गाडी का प्रागमन, एक घर त्रिदेगों म लागे के आवाग मे उठने की खबर, और दूसरी घर जाल पति उठ जान के नारे से देग म अब कुछ उलट-पुलट, बिखर बिखर गया-सा हार। द बाबूआ न सन् १६२४ म मोटर बम खरोदकर सविस चलाई थी। वस का नाम था—जय गणेश्वरी। द परिवार व लडका ने जगतपुर म बनव खोला था। उन लोगो के खराती दवाखान म जूता, धिर टाप व ढग का कपडा तथा चश्मा वाली नस आई थी।

श्रीमन का बाप अलखल्ला, भूछ-दानी-बानवाला अथधूल चैरागी

था। करताल बजाकर टहल लगाया करता। कम उम्रवाले छोटे छोकरो न उसे अवधूत कहना गुरू कर दिया था। इन सब कारणों से श्रीमन् वाप दादो की लीक छोड़कर और ही तरह का हो गया। बाबुश्री का मछली के शिकार का शौक था। उसने सूना बनाना वही सीखा था। बरागी का देटा हाते हुए भी उसने दोतल से चुस्की लेनी भी सीख ली थी। नई जवानी में भुवनपुर के बाबुश्री का खानसामा श्रीमन् अचानक एक दिन मालती आ मा विमला के प्रेम में पागल होकर उसके साथ भाग गया। सन २७ २८ की बात। विमला वान विधवा और रूपवती थी। चरित्र उसका बुरा ही था। उसके बाप आ घर भुवनपुर से डेढ़ कोस दूर था उस भील के किनारे। समुराल में उसकी अनेक तरह की बदनामी ही नहीं हुई थी और भी ज्यादा कुछ हुआ था। ठिठोरे रात को जबरन उसे उठा ले भागे थे और उसे बहार में फेंकर धले गए थे। सो समुराल वाने उसे उसके बाप के घर छोड़ गए थे। मा बाप वचारे क्या कर व उसे निकाल नहीं सके। वे उसे बाबा भुवनेश्वर के सेवायत मिश्रजी की शरण में रख गए कि दो मुट्ठी खान को दिया कीजिएगा। यह बाबायान को बुहार करेगी बतन वासन माना करेगी। उस समय तक भी मा बाप को यह विश्वास था कि बाबायान की सेवा में लग रहने से उसका परकाल बनगा और जाग्रत देवता बाबा भुवनेश्वर की परिचारिका के बदन पर हाथ डालने की किसीको हिम्मत नहीं होगी। लेकिन कलियुग में खास करके यूरोप की पहली सड़ाई के बाद समुद्र मथन के विष की नाद युद्ध के विष से घोर हो बाबा सो जी गए थे। पेट्रोल और वास्द का घुआ गस तोप बंदूक की आवाज से वचन के लिए नाक-कान में रुई डालकर साने के सिवाय उपाय नहीं था। लिहाजा बाबा की ऐसी एक गूबमूरत और सदा प्रगन दासी की आर वेपरवा ही बहुतेरे हाथ बढ़ गए।

धरनीदास भी उस समय जवान था। तात के कपडे बेचता था।

विमला जिस दिन पहली बार कमर पर टोवरी लिए हाट की बसूनी ले जान के लिए मालती जसी ही यहा घाई थी, उस दिन की बात उसे याद है। बाबायान की आखिरी सीढ़ी पर बाबू मे टोवरी लिए जरा बाकी घदा से जैसे ही विमला गडो हुई थी, वसे ही हाट के सार लोगो की नजर बाबायान की धार फिर गई थी। गा कि इधर सडक हाने की बजह से हाट का मुह—दम पंद्रह साल से भी ज्यादा पहले बाबायान को पीछे की ओर रखत हुए सडक की तरफ को घूम गया है। मिसिर जी के पीछे-पीछे टोवरी लिए विमला जब उसकी दुकान के सामन खडी हो गई थी, बसूली के एक पसे के लिए, तो मिसिर जी को पेसा देकर घरनी आज के इस धार पीते वाले छोर जैसा ही धीचक चीख उठा था—मनमोहिनी लाल भगोष्ठा, पक्का रग—ले ला ! भगल बगन के लोग खिलखिला कर हस पडे थे। विमला गरदन घुमाकर मुनकराकर बटान मारती हुई बोल उठी थी—फतिमा खान वाले गिरगिट का शीक तो जरा देखो, मना मार कर खाएगा ! हाट की उस जगह हसी की बाढ-नी आ गई थी। बाबा भुवनेश्वर ने उस दिन घरनी की इच्छन रख ली थी। एकाएक सबकी नजर पडी कि श्रीमंत का शीकीन मालिक ने बाबू चुननदार भोनी, बुरता पहने, छाता लगाए बाबायान की सीढ़ी पर खडे हो एकटक विमला को देख रहे हैं। घरनी तुरन बाल उठा, पेड की फुनगी पर बाज बँठा है। गई बचारी मना ! मालिक के पीछे श्रीमंत था। उसके वदन पर बाबूवाली बडिया गजो थी पुरानो, पटनावे म गौकीन कोर की घोती। वह भी विमला की तरफ ताक रहा था।

इस घटना के महीन भर बाद ही विमला और श्रीमंत कही चपत हो गए। भागे तो भागे, दे बाबू की गधेश्वरी बस से ही भागे। वरना बाबा की दासी को लकर यो भाग जाना भुमकिन न था दो म से एक का पैर जाता, एक की घ्राण जाती। राम्ने म ही रह जाते।

तीन साल क बाद श्रीमंत लौटा, जब बाबू गुजर गए। उसके साथ

माग में सिद्धर भरे विमला थी और थी मनिहारी की छोटी-सी एक दुकान ।

कुछ दिनों तक तो श्रीमत् दुकान लेकर हाट नहीं आया । फिर प्राने लगा । उसने विनापन भी किया था । घागे से टटका दिया था आध मन का एक बटखरा और उसके साथ सोल की बहुत बड़ी-सी मछली । घरनीदास से श्रीमत् की पहले से ही पटती थी । उसने घरनी से कहा भई, अपने चलिए के एक और थोड़ी-सी जगह दोगे मुझे । दुकान खोल दू ।

घरनी ने जगह उसे दे दी । इसी एहसान से श्रीमत् घरनी को अपने घर ले गया । उसे विमला के हाथ का ताड बड़ा और दुकान की मिठाई खिलाई । विमला ने जरा मुसकराकर उसे पुरस्कृत किया था—श्रीमत् के सामने ही ।

बीच-बीच में श्रीमत् उसे मछली भी खिलाता था । मछली शिकार के मामले में वह ज्यादातर चालाकी का परदा डाले रहता । पीखरे में घाट वह रात को चराया करता । करची गाड़कर चारे की पोटली रात को बाधा करता जब वह भील से मछली मारकर घर को लौटता । और मछली भी मारा करता तो भील से घर लौटने की राह में ही । मछली मारकर गमछे में लपेटकर ले आता । उसपर किसीको संदेह करने की गुजाइश नहीं थी । कोई करता भी नहीं था संदेह । भील में इसके पहले मगर मार कर सब पर उसने अपने जादू का रंग चढा रखा था ।

मछली मारकर वह घर में खाता, मित्रों में बाटता बेचा भी करता । रोजगार भी अच्छा ही चल रहा था । दूर दूर से आकर लोग उससे कांटा-भूता खरीदने ले जाया करते थे । लेकिन जा श्रीमत् भवपूत बरागी के बेटे से बाबू का खास खानसामा बना उसका बाद उस खानसामा गिरी का लाल मारकर मालिक के ही शिकार को दबोचकर घत दिया और फिर लौटा ( सो बाबू के मरने के बाद ही सही ), वह श्रीमत् कुछ सहज जीव नहीं । घरनीदास कहता है—सहज जीव कृष्ण

का जीव वृष्ण की ही वृषा से जीता है। श्रीमत् किसीको दया पर नहीं जीता। वह किसीकी काट नहीं खाता, पहले ही किसीको काट खाना है। सबमुच ही श्रीमत् विमला का भगा ले जाकर जिम साहस और जिम बलेने के जोर से सिर ऊवा किए फिर लौट आया, उससे सगति गलते हुए जा सब वाक्य कह कहता, उह हजम कर मक्का खरीदारो के लिए कठिन था।

उसका सूता लेकर खींच-नान करने हुए कोई अगर ज्यादा निरख-परख करता, तो काट का धागे में बांधकर वह कह उठता, लो, भव जरा हाता कर मेरे मोता !

— हा कर ?

— जी। गलफरे में काटा लगा देता हू, धींचकर तोड़ने हुए निकल जाओ, आजमा ही या कि टूटता है या नहीं। इससे अच्छी परख और क्या है। या फिर छोड़ दो और अपनी राह लगे।

एक दिन की बात है, उसके पुराने मालिक का एक मुसाहब मित्र रहर न आम माह्लारी या दलाल का काम करता है, वह कचहरी के काम से दे बाबू के महा आया था। हाट गया तो मित्र के पुराने खानसामा श्रीमत् को देखकर स्नेह या बरुणा या ऐसा ही कुछ उमड आया था। उसने अवाक होकर कहा, अरे ! श्रीमत् ! तू !

श्रीमत् ने जवाब नहीं दिया।

उसने फिर कहा, अब ऐ मिरीमता।

श्रीमत् न सर उठाया और धभीगता से कहा, क्या व, क्या कह रहा है ?

— अरे !

— अर क्या ? अर ? क्या, मैं व हा गया। नीकर हू तेरे बाप का ? अरे ?

नाराज होकर वह जनाव बाबुआ के यहा गिनायत करने गए थे। श्रीमत् उन दिनों के नापेस-दफ्तर में गया था। लेकिन एक रोड ब-



बेकाम्ये पड गया। दारोगा की नाक पर अचानक एक धूसा जमा बठा। थाना पहने गोपालपुर म था। बाद मे भुवनपुर उठ आया था। दारोगा था—शिवेन चटर्जी। परले सिरे का लपट और धूसखोर। उसने विमला पर नजर गडाई थी। श्रीमत् के पुराने मालिक क चचेरे भाई को उसने इसमे अपना सगी बनाया था। विमला पहले चाहे जो भी रही हो श्रीमत् के साथ बह सती स्त्री थी। विमला ने श्रीमत् से यह बात कह दी थी। दारोगा ने श्रीमत् पर चोरी का माल रखने का इलजाम लगाया और उसके घर की तलाशी के लिए आया था। खानातलाशी म उसने उसके घर की चीजे तहस नहस कर दी। चोरी का कोई माल लेकिन नहीं मिला। श्रीमत् अपन को और नहीं सभाल सका उसने दारोगा की नाक पर मार दिया एक धूसा। दारोगा की नाक टूटी नो नहीं मगर बेतरह लहू बहा और कई दिना तक नाक सूजी हुई रही। द बाबू के चचेरे भाई के गाल पर जोर का एक चाटा जमाया और दीवान फादकर रफूचक्कर हो गया। हुआ तो मगर फरार कब तक रहा जा सकता है? पकटा गया। ६ महीने की सजा भी हुई। लेकिन हा शिवेन दारोगा की भी बदला हा गई और बाबू क चचेरे भाइ भी होश मे आए। जल जाते बकन श्रीमत् कहता गया कोई परवा नहीं विमल। जेल की सजा हुई है कोई सूली फामी नहीं। छह ही महीने वाद लौट आऊगा। और लौट कर अगर पता चला कि किसीने तुम्ह पर कनखी भी चलाई है ता उस कवस्त की थाखें निवाल लूगा। इसके लिए फासी भी हो तो परवा नहीं।

एसा था श्रीमत्। और उसी श्रीमत् की बेटी है मालती। बाप उसे बचपन म माला कहकर पुकारता था।

माननी ने खून किया था। चार साल की सजा कागी। वह भी श्रीमत् क मछली मारन के ही कारण।

पहली बार जब श्रीमत् जल म लौटा, तो कुछ नम्र पड गया था। अपना मिजाज का उसने जूता पहन पाव की तरह और कुरता-बपडा पहने बदन की तरह समय शृस्त्रता से साफ और भला कर लिया था। उसके

बाद पदा हुई यह लड़की। श्रीमत श्री भी हिंसावी दुनियादार बना। बच्ची को तीनेक साल की छोटकर विमला चल बसी। श्रीमत ने बाकी जिना तक हमरी गादी नहीं की। बच्ची को साथ ही साथ लिए पूमा करता। हाट घाता तो ब्रिटिया को लिए ही घाता। श्रीमत दुबानदारी न मगगूल रहता नही-नौ बच्ची हाट मे घूमती फिरती। रूप उसे उसी वकन म था। कभी बाप के बगल म बठी वसवीर वाली कोई किताय पलतनी रहनी कि कोई तिलीना लिए खेला करती। श्रीमत भील म मछनी मारल जाना, बच्ची साथ जाती। चारा डालनी, काटे म चारा गुपना। चारक साल बाद श्रीमत को जान क्या दुप्रा, वही से एक बेल्लवी का उठा गया। उमर की छोटी मोटी नही भरपूर जवान ! उसे वह सन घडनालीस में लाया। पूर्वी बगल की घोरत। नवद्वीप ल जाकर कठी घदल उदलकर ले प्राया। देवन मुने म घोरत प्रच्छी थी, स्वभाव लेकिन प्रच्छा नही था। उसम पहला दोप तो यह था कि हसती बहुत थी। गुरगुरी-सी कोई बात लगनी कि हमने हसते लोट-पोट। बातचीन म भी कोई जिमाव नही। बूढा कहने से श्रीमत बिगड जाता था घोर वह कि बूढा वह बिना रहन की नही। बात-बात मे चपा कहती, गर बुढे या कि बहनी, जग बुझे का रवीया देतो। या कहती, होगा नही मला बुटाप म इतना मला ? श्रीमत गरज उठना। चपा लेकिन कयो माने।

घाविर श्रीमत घमाघम जमाता पीठ पर। चपा कुछ देर तक तो रोनी, उसके बाद गुमसुम ही बठी रहती फिर हसनी। कहती, जितका जसा भाग। मेरे भाग म सारी जिदगी ही भादो का महीना है। पीठ पर भदाभद जो पका ताड गिरता है गिरता ही है। भादा म सकरात भी नही घोर पड म ताड का भी अत नही। कभी कभी वह ताडतल से यानी घर स भाग भी खडी होती। पहले पटल तो दो बार मार साते ही वह नवद्वीप भाग गई थी। श्रीमत वहा से पकड लाया था। उसके बाद वगर वहे मुने गगा दगाहरा मे गगा नहाने, यहा-वहा का मेला घूमने चन देती। दो-तीन दिन के बाद घर लौटती। जाया करती मुहल्ले के

लोगों के साथ । साथ ठीक नहीं पीछे पीछे चल देती । कभी-कभी धकेली भी चल दी । लोग वाग लेकर बुरा कहते । फिर भी श्रीमत् उसके छोटे नहीं सका । गायद हो कि उमर ज्यादा होने का मोह हो । और फिर इस बच्ची मालती के लिए । चपा ने मालती को मुट्टी में कर लिया था । चाहती भी थी उसे । उसके साथ घरोँदा खेलती । अगना म मगर मानुस का खेल खेलती । यह खेल मालती के लिए ही खेलती हा सा नहीं । अपने लिए भी खेला करती । घर से भागती तो अपने आप ही लौट आया करती । मालती के लिए काठ का खिलौना मिट्टी का घोडा लोह की छोलनी हाडी, चाली जो भी हो कुछ न कुछ लेकर ही आती और आती समय समझकर जब श्रीमत् घर में नहीं होता । घरोँदे में मालती के साथ खतन लग जाती । श्रीमत् घर में कदम रखते ही कहता, हू यह रही ।

चपा कनखियों से ताककर आप ही आप बोल उठती पीठ की सूजन पुरानी हो गई मारो मुक्का । मारा आहिस्त मारा । या कहती माला था तो बिटिया मेरी पीठ पर चढ़ जा !

लेकिन जन चाहे पुरानो हो या फिर मालती ही पीठ पर सवार हो, मुक्का जो मारना होता श्रीमत् मार ही लेता ।

कभी-कभी मार पीट न करके श्रीमत् उसे घर से निकाल देता । चपा बाहर दरवाजे पर बठी राती रहती—अजी परो पडती हू तुम्हारे दरवाजा गाली । जी चाहे जितना मुक्का मार लो मगर दरवाजा खोलो ।

कभी-कभी श्रीमत् ने अपने ही बात मोचे खद किया, हाय हाय यह क्या किया मैंने ! कौन-से पाप को घर ल आया !

कि चपा सामन आ गई । कहन लगी परो पडती हू एसा न करो । मारा मुझे । जितना चाहो मार लो । मेरी पीठ में खुजली हा रही है ।

और इसी स्थिति में सौनली मा और बाप श्रीमत् के भगडे रगडे में अपने आप ही बडी होनी जा रही थी मालती । श्रीमत् जब चपा को ल आया था तब मालती की उमर छह साल के लगभग थी । या चपा का स्वभाव चरित्र जसा भी हो चाह उसमें जहर मा काटा इन दो में से एक

भी नहीं था। स्वभाव उसका भीठा था। भाग जानी, फिर लौट आती।  
 गिट्टी। हर हालत में वह हसती और एक रसिकता थी उसमें। चपा की  
 प्रायु उस समय बीस से पच्चीस—कोई भी हो सकती थी। मालती को  
 परम देखकर न तो उसने मुह लटका लिया नहीं उसे उसने माँ के स्नट से  
 भ्रमनाया। मुह पर कपड़े डालकर हसत हसते बेहाल हो गई थी वह,  
 हाथ राम, इती बड़ी लडकी की माँ हो सकती हूँ मला।

श्रीमत् इनसे नाराज हुआ था। चपा ने कहा, भरे बाबा नाराज न  
 हो। उससे तुम्हारा नाता डबलकर दूगी मैं। वह बाप को मौसा कहगी।  
 मैं उसकी माँ नहीं बन सकती, मौसी बनूगी।  
 और मालती की ठोड़ी पकड़कर कहा मुझे मौसी कहना हा। सोना  
 परी।

मालती ने हसकर कहा मैं सोना नहीं, माला हूँ। मालती।

—हूँ तुम मेरी सोने की मालती हो। बिहुला का गीत जानती हो ?  
 साने की मालती भरे हो, बहती जाएँ जल में। मालती बोली, तुम तो  
 बहुत अच्छा गाती हो मौसी।

—सिर्फ गीत ही ? नाच भी सकती हूँ सोना। घर का दरवाजा  
 बंद करके नाचकर दिखाऊँगी। तुम्हें।

चपा मानती को भ्रमनी स्नेह-भ्रमता भ्रमनी जैसी मानकर ही देती  
 श्रमत् भी भ्रमने जसा ही भ्रमना स्नेह उसे देता प्रकृतिम स्नेह। लेकिन  
 ताप हो, देखभाल जितनी चाहिए, नहीं थी। वह भ्रमनी ही प्राणरक्ति  
 और मनमानी रुचि में ही बड़ी हुई। पढो पर चढा करती, तैरती, टोले  
 की लडकी लडकों के साथ उछल-कूद किया करती। ही-ही-ही-ही हसती।  
 बिगडने पर जोर-जोर से गालियाँ देती। फल फूल घुराया करती। किसी  
 के बगिचे में कोई अच्छा-सा पौधा देखती तो चुपके से किसी बदन घुसकर  
 उसे उखाड़कर फेंक देती। डर उसे छू नहीं गया था। बाप से उसे विरामन  
 में साहस मिला था।  
 पहले मुबह ही छह साल की वह लडकी हाथ में पना

रास्ते पर निकल पड़ती। वह अपनी गया को खोजन जाया करती। उाक एक गाय थी। अजीब किस्म का स्वभाव था उसका। सांभ को जब वह गुहाल म लाइ जाती तो अचानक बूट पड़ती। हाथ से डारी पुचन जाती और वह दौडकर भाग निकलती। रात भर किसीके दगीचे क पौधा को चरती किसीके खलिहान का पुम्राल खाती किसीके खत की फसल चाटती और इस तरह अपना पेट भरकर सुबह की किरण फलते ही निरीह की नाइ किसी पड तले बठी जुगाली करती रहती। मालती सुबह उठकर उसी गाय को खाजन जाया करती। खोजकर उस घर ल जाती। उसके बाद कोइ सांढे दस बजे दो और गाय को उसके साथ भगाता हुई ले जाती और बस्ती स बाहर किसी पोखर के बाघ पर या घासवाली जगह म लबी डोरी से खूटे म बाघ आती। तीसरे पहर जाकर फिर उह घर लिवा आती। सांभ को कभी-कभी वह बकरिया की स्राज म निकलनी। बकरियो को सवेरे ही खोल दिया करती वह सब गाव मे इधर-उधर चर-चराकर शाम का आप ही घर लौट आती। जिस दिन लौटकर नही आती उम दिन मालती खोज म निकलती चलते चलते कहा कही रक कर आ अरर आ—आवाज लगाती।

उस दिन पोखरे क बाघ पर खडी चपा बतखा को घर नाती—कोई-कोइ ति ति ति ! और दिन यह काम मालती ही करती।

चपा के आने से पहले पाच बप की उम्र मे मालती न खुद ही ये जिम्मेदारिया अपने कंधे पर उठा ली थी। चपा ने आकर उसका काम कुछ बढा ही दिया बल्लि। श्रीमत से कहा, विटिया को स्कूल क्या नहीं भेजते ?

—क्या बरेगी ?—अधरज म श्रीमत न पूछा।

—निसना-पटना सीखेगा।

—फिर ?

—फिर क्या ? मुनुक आजाट हुपा है। औरतें नीचरी करती हैं। नहीं करती हैं ? तुम्हारा बस्ती क ही उस मुनार की बेटी विधवा होने

पर उसने लिखना पटना सीसा इमीलिए स्कूल म नौवरी बरती है ।  
 नहीं सीसा होता तो क्या करती भाविर ? दाईंगिरी ।

बाज श्रीमत को बजा नहीं लगी । उसने मालती को नि गुल्क प्राइ-  
 मरी स्कूल म भर्ती करा दिया था ।

जिम रोज बकरिया खो जानी, उस दिन मालती समझ जानी कि  
 आज मर नसीब म कुछ लिक्मा है । बकरी जब घर नहीं चोटी ता  
 दाईमारा न जरूर ही किसीके बगीचे म घुसकर लता-पौधा खाया है  
 या किसीके भागन म घूप म सूख रहा अनाज चट किया है और  
 भाविर पकड़ाकर या तो किसीके घर मे बधी पडी है या हाफिज  
 मिया के अडगड में चली गई है । किसी के घर बधी होगी तो नसीब  
 में मजा बुरा सुनना बदा है, सुनना ही होगा । और वहीं अडगडा की  
 हवा सा रही है तब तो कल सबरे के पहले छूटने का रास्ता नहीं कुछ  
 परमदद भी देना हागा । अडगडा श्रीमत जाता । छुटाकर बकरीको  
 पीटते पीटते घर लाता । कहता, भागन का जब दम ही नहीं, तो किसीके  
 यहा घुमने ही क्यों गई थी ? बकभक जो होती, वह सुनती मालती ।

होठ बंद किए ही खडी रहती । धीरे धीरे ये धक्कर चुप हो  
 जाते ।—जा, ने जा ! लेकिन बकभक बरदास्त से बाहर हो जाती तो  
 मालती फन उठाकर तन जानी । कहती अजी, खाया बेचारे बेजुबान  
 जो ने है उसने अकल नहा है । तुम्हारा नुकसान हुआ है, मानती ह ।  
 पकड़ लिया है ठीक ही किया है । मगर अडगडे क्यों नहीं भेज दिया ।  
 उसे बाधकर किस कानून से रक्खा है ? छोडना हो, तो छोड दो बरना  
 मैं कप्या स कहती ह । वह थाने जाएगा । बाधकर रखने का कानून  
 नहीं है ।

यह सब उम श्रीमत ने सिखाया था ।

चपा न आकर दूसरा सबक सिखाया ।

चपा ने सिखाया, मीठी बात करके थोड़ी बहुत खुशामद करके मन मलाकर देखो कोई तकलीफ नहीं होगी। कड़वी बातें नहीं बालो मौसी !

उस दिन मालती पिटककर लौटी थी।

उस दिन बकरी भुवनपुर के बाबा के पड़ों के एक फरीक के यहाँ घुस गई थी। पूजा के फूला का बगीचा था। उस साल सँदिया में नए सिरे से मौसमी फूल लगाए थे। परिवार का झकलौता लटका। शोक था। बाप के अस्वामयिक निधन से वही उस समय मालिक था। उसका नति हाल था बदवान में। मौसमी फूल के पीछे वहाँ से लाकर लगाए थे। रंग रंग के फूल भी खिले थे। उमर लटके की बारह साल की ही होगी पर पक्का लडका था सख्त। बगीचे में ही चौकी डालकर बठा रहता है, गीत गाता है। देखने में भी सुंदर। घर में फूला है। उसीका दुःखग्रा। उसका नाप भी अच्छा गायक था।

बकरी घुसी। बगीचे के एक झोर के पीछे को फूल समेत साफ कर लिया। इसीलिए पक्कड़कर बकरी को बाध रखा था। मालती खोजती चल रही थी झोर पुकार रही थी—आ अरर, आ।

मालती की हाक पर जवाब देने की आदत थी बकरी की। वह दे बाबुओं के घर के अदर से में में कर उठी। उस दिन मालती को बड़ा चक्कर खाटना पड़ा। इनका घर था दे-गज। गाव में एक प्रतिम छोर पर जहाँ सजायतों का टोला एकबारगी मिल गया है बलमुही बकरी उतनी दूर चली गई थी। दे-गज में जब वह न मिली तो मालती ने सोच लिया, हो न हो घटगटे चली गई है या कि राम्ने में अकली देगवर बकरिया के व्यापारी ने उस अपनी बकरिया की टोली में मिला लिया है या गीन्ह के देत में चली गई है। जैसे ही अदर से में-में की आवाज आई वह अदर गई और आवाज मगाई अरर

बकरी ने जवाब दिया। उसके साथ ही कोई बोल उठा—हूँ प्ररर !  
आओ इधर। बकरी तुम्हारी है ?

मालती ने देखा, दम बारह साल का बालक सा सुंदर एक लड़का।  
माग बना वाल। हाथ में वाम की एक बरची लेकर निकला। बोला, इसे  
तुम्हारी पीठ पर तोड़ूँगा।

मालती सक्पका कर चुप रह गई।

—इधर आ, इधर।

मालती ने कहा, बकरी को छोड़ दो। बाघबकरी क्यों रखा है ?

—टा हा, छोड़ देता हूँ। पहले तुम्हारी पीठ पर यह छोटी तोड़ लूँगा  
तब छोड़ूँगा। कहीं बकरा होता, काटकर खा जाता। मादा है। खाई  
नहीं जा सकती। यह छोटी तेरी पीठ पर तोड़ूँगा।

—किया क्या है मेरी बकरी ने ?

—देख, वह देख क्या किया है।

दपकर मालती को सबमुच ही अफमोस हुआ। बगीचे के एक प्रोर  
फूल ही फूल थे प्रौर उस प्रौर फून सहित वह पौधा को जड़ से चाट गई  
थी। लेकिन हा जयादा दूर तक नहीं।

—क्या, चुप कैसे रह गई ?

अबकी मालती ने कहा, बस, उतना सा तो खाया है। बाकी तो  
सब बच ही गया है।

—उतना माता खाया है ? खंर, तेरे सर में तो बाल बहुत हैं। एक  
मुटठी काट तो लूँ भला !

—आबारगी की प्रौर कोई जगह नहीं मिली। कहती हूँ छोड़ दो  
बकरी को। खाया है तो अडगडा क्यों नहीं भेजा ? बाघ किस कानून  
से रक्ना है ? छोड़ दो, नहीं तो थाने में खबर करूँगी।

—थाने जाएगी। कानून दिखानी है, जा नहीं छोड़ता।  
मालती को बरदादन के बाहर हो गया। वह अबरदस्ती बकरी को  
खोलने गई। उस लड़के ने कसकर उसका भोटा पकड़ा प्रौर उन घर



स बाहर निकाल दिया ।

मासगी रोने रोते घर लौटी । बाप ने सुना । विगडकर यह उसके साथ उग पर पर गया । उस समय घर से स बड मच्छ गले की तान निकल गी थी । काई—कोई और कौन वही लडका । बगीच मे लौकी पर बटा भा भा-भा भा-ताम ना तोम ना तरे तोम ना दाम ना—छेडे हुए था ।

थोमत न हगकर पूछा इमा घर म ?

—जी ।

—घर दर तो बटा मच्छा गा रहा है । बडी मुरीली मवाज है ।

मासगी का भी यही लगा था मगर मुह से वह कुछ नहीं बोली । घर जाकर बाप दंगी न दगा वही सडका उस्ता जैसा बाए गात पर हाप रलकर दाया हाप टिना टिनाकर द्रीम ना द्रिम कहते हुए बीच-बीच

रही थी ? पुलिस की घमकी क्या दी ? जरा देखो तो सही, मेरे पीछा की क्या गन कर दी है ? और फिर मुह पर जवाब क्या देती है ? बड़ी भांडालू है यह लडकी ।

अजीब बात ! श्रीमन का पारा हरगिज गरम नहीं हुआ । इतना ही नहीं मालती को भी पिटने का गम नहीं रहा । बल्कि गम ही आ रही थी उसे ।

श्रीमन ने कहा, जी यह लडकी कुछ बेसी है । ये, ठाकुर के पाला-गन कर !

मालती ने लेकिन प्रणाम नहीं किया । झड़ी पड़ी रही । उस लडके ने कहा, ले जाओ बकरी । बाघकर रखना ।

दा दिन के बाद फिर वही । उस दिन बकरी को विलायती फून का रस जो मिला, सो चाट लग गई । फिर उसी बगीचे में जाकर घुसी । फिर पकड़ी गई ।

उस दिन मालती को बीच ही रास्ते में खबर मिल गई । सुना फिर वही बंध गई है बकरी । गाव में जब दूढ़े नहीं मिली तो मालती को भी ऐसा ही अनुमान हुआ था । लेकिन उस दिन उसके कदम नहीं बढ़े । बीच ही रास्ते से घर लौट आई । कहा, मुझमें नहीं होगा । नईमारी ने फिर वहीं जाकर पीछा का सफाया किया है । बप्पा जाए । मैं नहीं जाती ।

बपा नं कहा, अरे जाओ मौसी । बप्पा तो तुम्हारा मछली मारने गया है । लौटने में एक पहर रात होगी । जाओ । जरा मोठा बोलकर देखो । भीठा काता से सुगामद करके देखो कोई तकलीफ नहीं होगी । बहवी बान न ही बोलो मौसी !

—तुम जाओ न !

—मैं । बाप रे ! बहू हू मैं । साम्नी की बेला, मद सुरत

—बारह साल का लडका मद !

—बहो तो ।

—वही तो क्या ?

चपा हस पड़ी थी। बोली बड़ी होगी, जब समझागी मीमी ! लडका है न ! बारह साल का। मैं उससे क्या बात करूंगी ? तुम जाओ। तुम बोलोगी तो पसीजेगा। समझी ?

बू से बात की कुछ कुछ समझा मालती ने। गाव घर की लडकी — तिसपर श्रीमत की लडकी चपा की दुलारी सौतेली लडकी। चपा दोपहर को कमर भ किवाड घद करके गाती है नाचती है मालती को सिखाती है। श्रीमत से चपा की बातचीत होती है—लडकी के लिए वे कुछ दबा छिपाकर नहीं बोलते। सो मतलब पूरा चाहे न समझे, कुछ-कुछ समझती है वह।

और इसीलिए जवाब में मुमकराकर वह बोली, ज, तुम बड़ी बाहियात हो।

चपा सुर में बोली

बाहियात होके ही रही

फाव दिए भी ले ना कोई।

कहकर ही-ही हस उठी थी वह। फिर बोली, चलो मैं बल्कि साथ चलती हू। घूघट काढे मैं खड़ी रहूंगी तुम बात करना।

—क्या बहूगी ? हाथ जोडती हू परो पडती हू छोड दो।

—यही कहने में क्या दोष है ? बाम्हनका लडका है भला आदमी

—न। मुझसे न होगा।

—खर। पैरा पडती हू हाथ जोडती हू न कहोगी न सही।

—तो ?

—कहना ठाकुर नासमझ बवरी की गलती का क्या करना ! गुस्सा नहीं करना चाहिए सोना !

मालती बिलतिलाकर हस पड़ी थी— गुस्सा नहीं करना चाहिए सोना !

—वह बिना उपाय क्या है ? पर म इत्ते इत्ते स दो ममन हैं। दूध

के बिना मरेंगे नहीं। चलो चपा।

साचार मालती गई। पीछे-पीछे चपा भी गई। उस दिन भी बंटा-बंटा गीत गा रहा था सौदाशबुद। तान नहीं, गान—

वह उज्ज्वल नीला तारा,  
सतज माधुरी मनी हाठ में  
हमी सुधा को धारा।

दोना जन घर के बाहर ही ठिठक गई। मालती ने हाथ के इशारे से बताया, वह सुनो! आज उम और भी अच्छा लगा। क्याकि आज तरे ना-तेनाना ना नहीं था। गान भी ये। और कितने अच्छे गान। साम को पश्चिम आकाश में जा नीला-सा तारा धुक धुक जल उठना है उसकी याद आई। सुबह के भुखवा तारा की याद आई। यह भी याद आया कि इस गीत को उमने गर्धन-रतिला में यात्रा में सुना है।

चपा बोली, अरी ओ बहिन बेटी, यह तो खूब है रो! उज्ज्वल नीला तारा!

मालती बोली, हा! कितना सुंदर गा रहा है।

—वह तारा हाने की साहिन नदी होनी है मौसी?

—घत!—फिर कहा, यह सब खालीगी तो बप्पा से कह दूगी।

—मैं तो तुम्हारे बप्पा की बही तारा हूँ।

—चुप! कोई खडा है।

गव ही कोई उसके टूट हुए दरवाजे के सामन खडा था। वह भी चुपचाप गीत सुन रहा था।

चपा बोली, कोई मरद खडा है बहिन बेटी!

—हा!

गानेवाला लेकिन बडा मस्ती में गा रहा था। उस मस्ती से उमने माना साम को ही मस्त बना दिया था। गीत खत्म हुआ कि वह आदमी, जो खडा था, अदर चला गया। चपा ने कहा, बहिन-बेटी, चलो चलो। वह आदमी अदर गया हम भी चलें। इस समय वह कुछ

बोल नहीं पाएगा । हजार हो आदमी के सामने हुआ न ।

व भी अदर खली गई । जाकर जा देखा वह एक अजीब बाढ़ । जो आदमी चुपचाप खड़ा गीत मुन रहा था, वह जाकर सोकाठाकुर के सामने खड़ा हुआ कि सोकाठाकुर मानो वृद्ध बन गया । उस आदमी ने उसके दोनों कान पकड़ लिए—हू । उज्ज्वल नीला तारा ! स्कूल क्या नहीं गए ? ए ?

मालती खिलखिलाकर हस पड़ी । उम हसी से सोकाठाकुर का वृद्धपना शायद कट गया । वह बोल उठा, गूढ़ होकर कान मत पकड़िए । मैंने मतर लिया है । गुरु का कान ! छोड़ दीजिए ।

—गुरु का कान ? अच्छा । बाल ? बाल किमका है ? उम आदमी ने उसकी चुरकी पकड़ ली ।

—छोड़ दीजिए ।

—छोड़ दूंगा ? देता हू । स्कूल क्यों नहीं जाता है ?

—बुखार आया था मास्टर जी । आज ही पथ्य खाया है । वह क्या कर रहे हैं ? छोड़िए, छोड़ दीजिए ।—घूघटा को जरा खिसकाकर चपा बाल उठी ।

मास्टर जरा सकपका गया । मगर उसने भोटा नहीं छोड़ा ।—बुखार ? ऐसा चमकता चेहरा और बुखार ! तुम कौन हो ? गवाही देन आई हो ?

चपा बोली मैं यहा काम धाम करती हू । आती जाती हू । कई दिन स बुखार था । आज भात खाया है । सर कीए का खाता हा गया था । इसीस तेल डाला है । आप मारत क्यों ह ?

मास्टर ने अब छोड़ दिया । कहा बुखार है ता सरदिया की बस गाम म खुली गीत म बठकर उज्ज्वल नीला तारा क्या कर रहा है ?

सोका ठाकुर ने इसपर जो किया उमकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । उसने बगीचे म पट बाम के एक डहे को भट उठा लिया और

उसे ढग से तानकर कहा, मैं जा कर रहा हूँ, ठीक ही कर रहा हूँ रे बेटा ! तेरे मुह में, तेरे स्कूल के श्राद्ध का कीतन गा रहा हूँ। मैं पूछना हूँ, जाता है यहा से कि लू इस डडे से खबर ?

मास्टर ने फिर एक शब्द भी न कहा। पीछे मूडर चुपचाप चला गया। दरवाजे के पास जाकर कहा, तुम्हें रस्टिकेट करूंगा।

— ठंके से। मैं बाबा भुवनेश्वर के सर पर बेलपत्ता चटाकर घाना हूँ, गधेश्वरी थान में पून चढाता हूँ, मा सरस्वती कोई दुलाने मे भानी है ? तेर स्कूल को छोड दिया। जा।

मास्टर फिर भी खडा था। इन दो औरला के सामने शायद यह अपमान सहन नहीं हो रहा था। बोला, कवख ने बाप को खाया, मा को खाया वृत्ती फूभा के लाड सं बहक गया है। अरे, आखिर तक गाजा शराब पिण्णा जो कि पडे सदा करन रहे हैं।

सोनाठाकुर बोला, जाता है कि तुम्हें बिना इजाजत के अदर घुसने के कारण इस बकरी की तरह बाध दू ? मैं कानून जानता हूँ।

अब मास्टर चला गया।

सोनाठाकुर ने डडे को फेंक दिया और जनेऊ पकडकर बोला, मैं शाप देना हूँ, तुम्हें गूल पडगा।

फिर रुत्ते स्वर में बान उठा, क्या है ? आज तुमलोगा ने फिर बकरी छोड दी है। यह छोरी ! आज सचमुच ही मारूंगा मैं !

— पहले सुन लीजिए। बात सुन लीजिए सोनाठाकुर !

— सोनाठाकुर क्या ? तें ? — खुद भी अचक्का गया वह।

चपान कहा भोने जसा रग है आपका, बामुरी जसा गला। तुम सोन के गौर हो ठाकुर। जमी में सोना ठाकुर कह रही हूँ।

— यह सब कहने सुनने से नहीं होगा। रोज रोज तुम्हारी बकरी पीया खाएगी मैं नहीं छोडने का। बाघवर क्यों नहीं रगती ?

— जमी तो कहती हूँ सोनाठाकुर, बात सुन लीजिए। मेरी बहिन बेटो ने जाकर मुझसे कहा, भोह मौसी, तुमने सुना नहीं। क्या गाने हैं !

बामुरी बजती हो जसे ! बंदम तले की मुरली ! रात को बिटिया सोती नहीं है। आज मैंने कहा जान गीत सुन आता वाली किस बहाना जाऊ। मैंने कहा बहिन बेटी, इस बकरी को छोड़ दो। यह फूल के पौधों के लोभ से वहाँ ज़रूर जाएगी और पकड़ी भी जाएगी। फिर तुम जाना। सो उसके साथ मैं भी आ गई। तुम्हारा गीत सुनकर कान जुड़ा गया सोनाठाकुर। दया करके अब बकरी का तो छोड़ दो। घर में दो भेड़ों ने मिमियाकर मर रहे हैं।

खोकाठाकुर ने बिना कुछ कहे बकरी को छोड़ दिया।

चपा ने रास्ते में कहा बहिन बेटी जरा बठ जा। हस लें।

और सच ही वह खूब हसी। उसके साथ मालती भी हसी। आज की साझ की सारी बातें उसके लिए उपभोग्य हो रही। कितना अच्छा लगा वह गीत! गीत सुनती रही और आसमान में उस नील तारे को खोजती रही। लेकिन पश्चिम की ओर शिव के सवायता के छप्पर और पेड़ पौधा से घिरा हुआ है। नज़र नहीं आया। आसमान में आज ज्यादा सितारे नहीं थे। आज पूर्णिमा है या इजोरिया पाख की चौदस। जो हैं भी वे चादनी में मिटमिटा रहे हैं। सरनी भी खामी पड़ गई। लेकिन उसकी याद भी नहीं आई। खोकाठाकुर का गाना कितना अच्छा था। और मास्टर के साथ जो वार्दात हो गई? खूब है खोकाठाकुर। कहा कान गुड़ का है। खबरदार जो पकड़ा। याद आते ही हसी आती है। और फिर वास का डंडा उठाकर ठाकुर ने नहे भीम का खयाल कर दिखाया। मास्टर दुम दबाकर भागा। गलती भी थी मास्टर की। इतनी अच्छी आवाज़ इतना अच्छा गा सकता है वह अपने घर में बठा गा रहा है तो कौन सा गुनाह हुआ? पढ़ना उस अच्छा लगे भी क्या? और पढ़ने की ज़रूरत भी क्या है उसे? यात्रा पार्टी में चला जाएगा गधे-बरी यान में बलकत्ते की बड़ी-बड़ी कपनिया आती है। उन कपनियों का भी तो गाना सुना है मालती ने। उनमें से क के ऐसा गाना है? खूब कहा, बाबा के माथे पर बेनपत्ता चढ़ाकर खाता हू

गणेश्वरी की पूजा करता हूँ सरस्वती प्राप ही आती हैं। और अपनी चपा मौसी। मौसी भी खूब है। खूब ही तुम मौसी। खूब जावाज, खूब चाहियात, पक्कड़। जरा भी हसी बिना बसे कह दिया, तुम्हारा गीत सुनन का कोई बहाना तो चाहिए। इसीलिए बकरी को छोड़ दिया। और बस सवार सवूरकर यह कहा कि सोन के गौर जसी शकल है तुम्हारी, बामुरी जसा गना। तुम सानाठाकुर हो। माला को कुल मिलाकर बड़ा मजदार मामला लगा। मगर जीत चपा मौसी की है, इसम सदेह नहीं।

य वारें श्रीमत् ने दूसरे दिन घरनीदास का बताया था। गुश्नार की हाट के दिन। श्रीमत् को चपा मौसी ने बताया था। हाथ-पाव हिला-डुलाकर हसते हसते लाट-पोट होने-होते कहा था।

श्रीमत् एक बार रज हो उठा था, खेंव-खेंव करके हसती है ?

चपा और भी हस उठी थी। श्रीमत् ने कहा, लोठे से तुम्हारे दात तोट दूंगा मैं।

चपा ने कहा, ठगा जाआगे। फिर तुम्ही उछल-बूद मचाओगे, तुम इतना बिगड क्या जान हो मला। तुम्हारे तो दात नहीं टूट हैं।

श्रीमत् न कहा, अच्छा माला, तू बता, इतनी हमी की क्या बात है ?

माला ने कहा, मैं नहीं कह सकती। मुझे हसी आ रही है।

—तुम्हे भी हसी आ रही है !

—बाग, बाम का डडा उठाकर तुम कहीं खोका ठाकुर की गुस्जी को भगान की मूर्ति देखते। तुम भी हस पडते।

बिना दखे भी सिफ सुनकर ही श्रीमत् काफी हमा। चपा न ही किसी तरह स अपनी बात पूरी की थी।

दूसरे दिन खोकाठाकुर पडा बनकर हाट गया था। इसके पहले दिन तक उसकी पूजा ही आती थी, बाबायान में खडी होती थी। हाट भान वाले और तीरथयात्रियों को पुष्प दिया करती थी। अनपच व्याधि की



दवा देती थी, पसा लेती थी। बाबा घात म जो पैस घड़ते उसका पसा हिस्सा लेती। दे के घटा से घसूली भेजने का नियम था। घसूली पोलदार का होता, तो भी एक् बगन, दो मूली चार घानू यह जबरनस्ती घाचल म बाघ लेती। बहती, नावालिग लठवा है। वहाँ पाएगा ? बडा होगा तो नहा लेगा।

इसपर भी कोई कुछ बहता तो बहती देगी भया बखबन मत करो। मेरा भतीगा बडा होने पर पढागिरी करने नहीं घाएगा। देख लेना।

फूझा ने बडे अरमान स उस पढन भेजा था कि यह नौकरी करेगा। या कि नोबू कोई बडा उस्ताद होगा। नोबू यानी लोका बाबू का नाम नवगोपाल था। नवगोपाल का बाप भी उस्तादी करता फिरता था। इलाके मे नाम-नाम भी था। उस समय गान बजाने की चलती चल पडी थी, खास करके 'याह के' लिए भल घर की लडकिया म। लडकिया यहा मिडिल तक पढतीं। कोई पास करती कोई नहीं करती। लेकिन उठने से ही पढी लिखी है यह हो जाता। लेकिन मात्र पढने लिखने से शादी नहीं होती। कोई सबघ आता तो वर-पक्ष के लोग पूछने गाना बाना जानती है ?

ठीक पूछते ही नहीं शहर बाजार म यह पूछा जाता इसीलिए यहा भी पूछें शायद इसलिए भी और फिर लडकी की शादी शहर के लडके से करेंगे इस इच्छा से भी यह रिवाज चल पडा था। नोबू के पिता नित्यगोपालमिश्र का गला भी बडा अच्छा था गाना उमका भी जन्म जात दौलत था—अच्छे उस्ताद से तालीम भी ली थी। उस्ताद से गीत भी सीखा था नशा भी। नशा बाबा के पडे करते ही है। वह उस्तादी करता फिरता था। गावो म उन दिनों थिएटर का चलन हुआ था। वतानिक बनकर थिएटर म भी गीत गाता। थोडी बहुत आय भी होती थी। गाव म इसी समय नया डाक्टर निशि बाबू आया था। वहा के डाक्टरखाने की नौकरी म आया था। साथ मे उसकी स्त्री

और दो लड़कियाँ थीं। लड़कियाँ को स्कूल में भर्ती करके ही वह बाज़ नहीं आया, प्राइवेट ट्यूटर भी रक्खा था। बड़ी लड़की ने मिडिल की पढ़ाई पारन की थी। उसे गाना सिखाने के लिए नित्यगोपाल को भी रक्खा था। उसी की दम्पती दबाऊ के यहाँ भी इसका रिवाज़ चला।

नित्यगोपाल तीस ही साल की उम्र में अचानक मर गया। नवगोपाल उस समय अपनी माँ की गोद में तीन साल का था। नवगोपाल से पहले दो बच्चे होकर मर चुके थे। नदगापाल पाँच साल का हुआ कि माँ मर गई। घर में फूझा थी। फूझा—माँकू यानी मोक्षदा—ने ही पाला पोसा। और चूँकि बचपन में ही लड़के ने माँ-बाप का सँ लिया, इससे फूझा को उम्मीद थी कि लड़का बहुत बड़ा आदमी होगा।

नवगोपाल के लिए घर पर भी मास्टर रक्खा गया। पर उसके फेन होते ही मास्टर बदल जाता करता। यह जो मास्टर था, जिनसे उसका कान पकड़ा, अक्की बरखास्त किया गया था।

नवगोपाल ने कल गाम ही फूझा से कह दिया—यह पढ़ना निखना मुमम न होगा। कल से मैं बादायान जाया करूँगा। अपना अपनी काम करूँगा।

फूझा न शर्त सुना रोई घोई, मगर नवगोपाल अडिग रहा। बारह साल की उम्र में उसने बाईस साल जसा कानून सीख लिया। कहा, तुम मेरी अमिभाविका नहीं हा। बाप के मरने पर माँ उठके की अमिभाविका होनी है। बाप-माँ दाना ही गुजर जाए तो चाचा बाचा होते हैं। तुम फूझा हो, तुम्हारा गोत्र दूसरा है। तुम तो अमिभाविका हो ही नहीं सकती। मैं अपना अमिभावक आप ही हूँ।

उसने आज तुरंत का उपड़ा पहना माथे पर भभूत का लबा-सा टीका लगाया, हाथ में बँत की एक छड़ी लेकर बदस्तूर पढ़ा बनकर हाट और भुवनेश्वर के टील के सामने जा खड़ा हुआ।

शुक्रवार की हाट बड़ी नहीं होती। सोमवार को खूब नगती है।

सोमवार को चार दिन की यानी सात, मंगल युध बह्मन की हाट पडती है, शुक्रवार को तीन दिन की—गुण दिन रवि । द्रुगक गिवा सोमवार पूजा का अच्छा दिन है । लेकिन हा, शुक्रवार को सागडला बाघन के लिए बाबाघान घात है । भवनन्वर घात व उमघार जग बाबा की भूतिया पीज का बरगद बल समस सिहाड का दिला था बहा के कई पुराने घरग घाज भी हैं उनस घगस्य जटाए निरलबर भूलती हैं । लोग घाते है भुवन सरोवर म नहाने हैं घोर घन मन की कामना बाबा को बतावर भीमे बान घादे कपड स परधर डला या डट का टुकडा उस जटा म बांध जात हैं । इसस क्या तो मनम्बा मना जहर पूरी होती है । जब पूरी हो जाती है तो लाग फिर घात हैं, बाबा को प्रणामी चन्ते हैं घोर डल को गोल देते हैं । किसी किसी का डेला अपने आप खुलकर गिर जाना है । कोई कोई पाडा-सा चूना गाछ में लगा जाते हैं । चूना लगाने का जो मतलब होता है वह समभन म कठिन नहीं होता—लोग समभ लते हैं, किसीम घात्रोग है इसीलिए चूना लगाया है । इसस यह होगा कि जिसपर घात्रोग है उसक बान म ऐसा ही श्वेत रोग फूट निकलेगा । गुरुवार को चूना बेचनेवाले घाते हैं— बाबाघान के बिलकुल पास ही बटते ह ।

किसीका डेला बाघते या चूना पोतते देखत ही पड पास जा सडे होते है । कहते हैं कोई सकल्प करके बाघना पडता है भया । सकल्प करो । कहो अद्य पीप मास कृष्णपक्ष द्वितीया तिथि म—कहो अपना नाम लो उसके बाद मन ही मन अपना सकल्प कहो—जो भी हो—गरीबा मिटाना चाहते हो, वही कहो—मुकद्मे म जीत चाहिए वही कहो—किसीका प्यार करते हो वही कहो—कहो फला को—ब्राह्मण हा तो देवी कहो गूढ हो तो दासी—तस्य मन प्राप्ति हेतु अद्यमह लास्ट बघनम करिस्ये । बाबा भुवनन्वर अगर सत्य हैं तो मुराद पूरी होगी । मगर अपने मन को ठीक बजाकर देख लो भया कामना तुम्हारी सत्य है या नहीं । हा बाघो ठीक से बाघो । अब इधर घाघो

बाबा का वरणोदक पियो, फूल ले जाओ, जतन से रख देना। दक्षिणा दो पमा, पाच पमा जो जो म प्रावे दो। एक पैस की दक्षिणा नहीं होनी। काचनमूल्य है न। बाबा को एक पैस की प्रणामो घडा सकत हो। भुवनन्दर की हाट, माता गणेश्वरी का दरबार—यहा दुप देकर सुत मिलता है रोग देकर घारोग्य मिलता है सोन के हिरन-सा भागा हुभा मन जाल म पसता है। स्वम बाबा का वरदान है यह। घोर भत म बोल उम्ना—हर हर वम, हर हर वम। वम भुवने श्वर विश्वनाथ।

हाट तीसरे पहर लगनी है। सौदा पाती बेचनेवाले ज्यादातर बारह से दो बजे तक के बीच घाते हैं। मान गाड़ी से घाता है, वही से घाता है भांघे पर टोकरी मे घाता है। जिसकी जो जगह बघी बघाई है वही बड़ी-बड़ी चटाई डालकर चीजो को सजाते हैं। सरदियो मे सजिया का मौसम होता है। तरह-तरह की तरकारी किस्म किस्म की सज्जी। बगन, मूली, नया भालू कोट्टा, हरी मिच, नया प्याज—यहा तक कि गोभी घोर मटर की छिमिया भी घाती है। फूलगोभी कम घानी है—बदगोभी जरा ढेर से घाती है, मगर घाती है बेसुमार घोर भाकार मे होती भी बहुत बड़ी बड़ी है। भुवनपुर की जिस भीत म श्रोमत मछलिया मारा करता, उसीके किनारे की जमीन म घोर मयूराही नदी के चौर पर गाभी की खेती बडे जोर की होती है। गाभिया क्या, घब तो दो चार बतखें घोर मुगिया भी बिक्ने को घाने लगी हैं। मछलिया खास नहीं घातीं, मछलिन टोले टोले घूसकर बेच जाती है। हा कभी कोई बहुत बड़ी मछली पम गई तो उमे लेकर बेच म भी बैठती है। बराबर जो मछली यहा घाती है वह है काठ से, डाबर से, गडडो से यही मछलिया पकडा करता है। पकड पकडकर घर म पानी भरे घड म उह जिदा रखता है। हाट के दिन उसकी बीबी उह बेचने लाती है। ठीक वही पर बेचती है, जहा पर कुम्हारों

के बतन बिकते हैं। उसका पास ही बिकती है ताड़ और गजूर का पत्ता की चटाई, उसके बगल में मोटा टोकरिया सूप और चाचावाल। फूल की साजिया भी दो चार होती हैं। मजूर का पत्ता का नाम बीर-वशी लोग करते हैं। उनके बगल में दूनों गांव के रुदाता की दा मिश्रिया बतस और बतस के अड लिए बटती है। महीन गल स बहनो है बतस लोगे जी बतख ! अडे ! लोगे अडे बतस !

आवाज रागाने का तरीका खूब है। पहल जरा नम गल स बहता है बतख लोग जी ! उसके बाद जोर से पुकार पडती हैं—बतस ! फिर उती ऊचाई से बहती है—अडे लोगे अड ! फिर आवाज उतारन लगती है—अड ! बतख ! बीच बीच में बतख क बलज या पजर को उगली स दबा देती है वह भी पेंक पक कर उठता है।

एक और रस्सी 'म खसी बकरी वाघ उसमान मिया खडा-खडा हाक लगाता है खसी लो खसी। बकरी। गाय जितना दूध। उसीक बगल में पर बधी कुछ मुगिया हाती है। उसमान मिया के आहक सब बधे हुए है। दे बाबू के परिवार के छोकरे सब रजिस्ट्रार। दारोगा। दा-एक स्कूल-मास्टर भी है। हाट के हो हल्ले का छिपाते हुए जैसे ही उस मान मिया की आवाज उठती है वे लोग खसी का दर-दाम करन आ जाते है, मुरगी खरीदकर धली में भरकर ले जाते हैं। उसमान के बगल में बटती है हमीदन चाची। वह चित्लाती है मुरगी के अड मुरगी क !

ये सब लोग हाट के पीछे एक तरफ बठत हैं। सामने बठत है फूल-वाल। फल भी क्या। गरमी के दिनों आम जामुन कटहल आत है। मयूराक्षी के किनारे तरबूजे हात हैं। बहा तरबूज। जाड में सकर कदी सुगिया बर। कुछ दिनों से सतरे आम लग है। आम कम आते है। आते हैं थोड़े बहुत। और बगल से बाहर के साहनी लोग बारहो महीन बागज में राजूर सूख बिदाने, बक्सवनी दागी अगूर मिमिस और थोडा-बहुत बादाम पिस्ता लाते हैं।

ये सब बाबायान के ठीक सामन बठते हैं। उसीके पास धरनीदास की छपरी है। कपडा, मसहरी, गमछा। उमीके आघे हिस्से म श्रीमत गोविंद बनिया की दुकान सिले सिलाए कपडो की। दाना तरफ दूर तक छज्जा की बनार चली गई है। मिटाई की दुकान। पकौडी की दुकान। सीने के आस-पास चटाई पर बहुत-सी दुकान बिछी होती हैं। उनमे से बुम्हारो के माटी के घोडे की दुकान बडी पुरानी है। माटी के घोडे बाबायान मे चढाए जाते हैं।

प्रवाद है, विश्वेश्वर के यहा माढ बघा है। भुवनेश्वर इमीलिए घोडे पर चढते हैं। लेकिन घोडे का एक पाव छाटा होता है। यानी लगडा।

लटपट दामा पांव और

बापा है लगडा घोडा—

बाबा भुवनेश्वर का घोडा।

कहते हैं, उसी घोडे पर चढकर रात को बाबा गधेश्वरी स्थान तक जाते हैं।

टिकली की मा यहा तब आई थी, जब वह भरपूर जवान थी। वह आई थी गगाराम के साथ। अब तो टिकली ही लगभग जवान हो गई है। टिकली की मा बहती है, उसने घोडे की टाप सुनी है।

चुनरिया का बाप भी बढा है। वह भी कहता है कि मैंने भी सुनी है।

जमादार यहा तीन पुस्त से भाडूदार हैं। व कहते हैं, हमने अपने बाप-दादे के मुह से सुनी है।

इन सबके अलावे दो एक दुकानें बित्तोवो की है। सत्यनारायण कथा विष्णु सहस्रनाम। हरिश्चंद्र नाटक। सचिन प्रेमपत्र। वशीकरण विद्या कामरूपतत्र। और फिर पहाडा और वण-परिचय।

इस हलचल और हो हल्ला मे रह रहकर पढा की वही हाक सुनाई

पडती—हर-हर वम । व म भुवनेश्वर ।

जाड़ा का वह तिन बड़ मज्र का तिन था । पिछली रात करारो सरदी पडी । लेकिन दूसरे दिन तिन व दा वजत-वजने रासी धूप निकनी । वडी मीठी लग रही थी कि हठात मीठे बिगार वठ स गोवाठाकुर नोबू ने हाव नगाई—

वाधा भुवनेश्वरो

मनोवामना पूरी करो !

हर हर वम । हर-हर वम । व म भुवनेश्वर ।

घरनीदास ने अचरज स तावकर देखा । कहा—नितो ठाकुर का लडवा ! यह तो स्कूल म पढता था । इसकी फूमा कहा करती थी नोबू हाकिम होगा । सो

मालती हस पडी थी—ही ही ही ही ।

श्रीमत से भी नहीं रहा गया । वह भी हसा । सरदियो मे मछली मारने के सरजाम कम विकते हैं । इसलिए श्रीमत का मन मिजाज ठीक नहीं रहता । फिर भी वह हसा ।

घरनी ने कहा हस दिए !

श्रीमत बोला यह ठाकुर भी खूब ठाकुर है । कल

मालती फिर खिलखिलाकर हस पडी ।

श्रीमत ने आदि से अत तक कल साभवाली घटना कह सुनाई । घरनीदास भी खूब हसा । बोला यह लडका गुठली है जी । वो दो तो पेड उग आए ! ऐं !

—गुठली भी जो-सो नहीं । जादू की गुठली । गगाराम के जादू की गुठली की याद है ?

एक आवाजा किस्म का जादूगर कुछ दिनों के लिए इस हाट के बरगद तले आ रहा था । गगाराम । वह साप पकडता था । साप का जहर निचोडकर गाजे के साथ पीता था । वह इस टिकली की मा के साथ यहा आया था । उस समय टिकली की मा जवान थी । वही गगा

राम गुठनी का जादू दिगाना था। एन गूरी गुठनी को जमीन में गाड़ देता। फिर उमपर पानी छानकर उसे टांगरी में ढक देता। जरा देर म टोकरी का उठा लेता। लोग दातते कि पेड उम आया है।

परतीदास न बहता, टीक ही बहता तुमन। वही गुठनी है। बास का ढटा उठाकर मास्टर का । कहत-कहते शोक बरक वह जोरा से हस पडा।

परती को याद है, ऐन इमी समय बाकुल के भेतिहर हरिदाम के बगन की बिगात के पास एक मोरगुल-सा मचा।

मार मार। पकड।

—क्या हो गया?—परती ने गरदन उठाई।

—घोर क्या होगा? चारी।—श्रीमन न कहा।

मालती देखने के लिए दौड पटी। हा, चारी ही थी। दर माल बरते-बरत मरी बाउरिन ने जाने कब एक बगन अपने अचरे म छिपा लिया था। हरिदास की नजर नही पडी थी। दर म पटरी नही बठी घोर मरी उठन लगी कि नजर उसके अचरे पर गइ। घोर तप से उसन उसका हाथ पकड लिया। कसकर हाथ पकडना था कि बगन ढप से माटी पर गिर गया। घोर, बगन का इधर गिरना, उधर मरी की पीठ पर हरिदास का गमागम मुक्का। सिफ हरिदास के ही नहीं, घोरा के भी मुक्के पडने लगे। मरी की पीठ पर घोर भी मुक्के पडते लेकिन दोनो हाथा स भीड को चीरते हुए खोकाठापुर वहा आ पहुचा घोर घमकाकर सब रोक राक दिया। लडका था, जोर ना कितना था उसे, परतु हटो-हटो की वह चीख मचाइ घोर उस चीख मे ऐसा एक तज था कि सयन हटकर उसे आने की जगह बना दी। खोकाठापुर ने दोनो हाथ उठाकर कहा, फको। दन जाओ।

बपाल पर भभून का टीका, गले म जनेऊ दमनना रग, खूबसूरत चेहरा—खोकाठापुर ने जैसे जादू बना दिया। एस एक आदमी को वे सब टाल नहीं सके। था तो वह लडका लेकिन उसके अदर से मानी



दूसरा एक घादमी निकल आया। और उसने फसला भी बिया। मरी के बाल बिखर गए थे, बहुत से टूट भी गए थे, बदन वा कपडा भा खुल गया था फट भी गया था—सारे बदन म घूल लग गई थी, लेकिन अभी तक वह रोई नहीं थी सिफ चीख रही थी। हर थप्पड़ और मक्क के साथ वह चीख उठती थी—बाप रे, धरे बाप रे ! अब मत मारो। बाप रे ! अब जब थप्पड़ मुक्के की बीछार धम गई ता अपने बचानेवाले खाका ठाकुर के पाव पकड़कर वह पुक्का फाड़कर रो उठी—धो ठाकुर, बाप मेरे मर गई मैं ता। तुम्हारे परो पडती हू, मुझे बचा लो बाबा। लोगभाग हो हो करके हस पडे।

ठाकुर ने कहा, रको रुको।

सभी थम गए। ठाकुर ने पूछा तुमन बगन कयो चुराया ?

—मुभम कसूर बन पडा बाबा। नाक जान मलती हू। अब कभी ऐसा नहीं करूगी। एक ही लिया था ज्यादा नहीं लिया। उसके लिए अनगिनती मुक्के खा चुकी। अब मत मारो मेरे बाप।

खोवाठाकुर ने कहा जरा काई चूनावाले के पास तो जाओ। थोडा सा चूना माग लाओ। हरामजादी के चेहरे पर चूना लगा दो।

लोग उमग उठे। समझ गए कि मरी के मुह पर चूना लगाएगे। मरी जी जान से चीखन लगी। अजी धो ठाकुर एक बगन के लिए मुह मे चूना मत लगाओ बाबा फूल होकर फूट निकलेगा बाबा शिव का गान है।

मगर ठाकुर ने एक नहीं सुनी। मरी के दोनो गालो पर कपाल पर चूना लगाया और कहा जा।

मरी उठी और किसी तरह हाट से भाग गई। कुछ दूर जाने के बाद उसका रूप बदल गया। उसने कपडे को कमर मे बस लिया बिखरे बालो को हाथ से सभालते हुए चिल्लाने लगी—सारा कसूर केवल मरी का। इसलिए कि मरी बुड्डी है। और वह टिकली भर भर मुट्ठी हरी मिच और नीडू उठा उठाकर लोइचे म भरी जा रही है सो—सो ? और वह

चुनिरिया ? उसने सतरा उठा लिया। ऐं ! धीरे से बाबू लोग—देखने-परखने में मिच-नीझू जेब में भरत चल जा रहे हैं। जरा ले तो तलाशी छाकी जेब की। ओ, इस चून से मेरा कुछ होना हवाना नहीं। घोंटे ही चना जाएगा। एक बैगन के लिए बधुमार मुक्के !

हाट के लाग फिर अपनी बची-बरीद में मगगुल हो गए थे। हरिदास फिर आवाज लगाने लगा था—यह बैगन बाकुल का है। मक्खन है मक्खन। मक्खन को भी इसके लिए फेंक देना पड़ता है।

—नया घालू ! नया घालू !

—चार हाथ की कार। फीता !

घरनीदास भी थोले पड़ा—तात की साड़ी। नकोदार कोर। चार खाना, डारिया। लाल अगोछा।

दो बप विलासिनी रसिक औरत उसकी दुकान के सामने से जा रही थीं। रसिकदास न बहा, आप्रा।

श्रीमंत ने हाक लगाते तरल घालना ! खुशबू तेल !

दोना स्त्रिया ठिठक गई। यह उसकी देह में ठोकर लगाकर इशार से खड़ी हा गई। एक न बहा, मस्ता कि महंगा ?

मालती जाने कब लौटकर अपने बाप के पास आ बैठी थी। उसने कहा, बप्पा खोकाठाकुर।

खोकाठाकुर ही था। उसने उन दाना स्त्रियों से कहा ऐ, हट जा। मुनती है ?

—अरे बाप रे ! गेंहुधन का बच्चा !

हट गई वे।

नोबू घरनीदास की दुकान पर खड़ा हुआ। गमछा मागा।—अच्छा घटा-भा गमछा है कोई ? तुम्हारा यह लाल गमछा नहीं। सादी उमीन हो। है ?

—क्यों नहीं। क्या कीजिएगा ?

—गमछा लेकर कोई करता क्या है ?

घरनीदास लेकिन इसस अप्रतिभ नटी हुआ । बोना, गमछा से बदन धोते हैं । आपलोग बदन पर रसकर घूमते भी ता है !

मालती बोल उठी थी पड़े गमछे की पूजा भी करत है । बाम्हन लोग कपड़े पर लपट कर रसोड़ भी बनात हैं परोसत है ।

—ओ ! वही लडकी । बकरी के लिए पुलिस का रावर देन की घमकी देती थी । बड़ी बक्की है ।

—और तुम जो बास उठाकर मास्टर को मारन दौडत हा ।

—उस बक्कल न मेरे गुर के बान को क्या पकडे ?

बडा-सा एक गमछा निकालकर बगते हुए घरनी ग वहा यह है । न जचे तो तोलिया जसा साडे तीन हाथ का एक गमछा चला है सधिया के बाजार से सोमवार को ला दूगा ।

—ला दोगे ? मैं बसा हो खोज रहा हू ।

—मैं न भी जाऊ तो श्रीमत तो जाएगा ही । वह ला देगा ।

—कयो श्रीमत ?

—जी हा । मैं ला दूगा ।

—हा ! समझ लो, नही लाया तो बक्की तुम्हारो बकरी का हरगिज नही छोडूगा ।

—हमलोग उसे बाधकर रखेंगे । अब जाएगी ही नही ।

छूटते ही मालती कह उठी ।

—मैं मत्तर के जोर से बकरी को ले आऊगा ।

मालती का चेहरा उड गया था ।

श्रीमत न बहा मैं ठीक ला दूगा । देख लीजिएगा आप ।

जाते-जाते नावू रुक गया । बासा तुम हर हाट के न्ति सधिया जाते हा ?

—नहीं । हर हाट पर नही जाता । रविवार की हाट बडी हाती है । रविवार को ही जाता हू ।

—मेरा एक और बान बर दाग ?

—बोन-सा काम ? कहिए !

—मेरे पिताजी का बाया-तबला और पखावज टूटा फूटा पड़ा है। मैं सुना है, संधिया की हाट भयजनिए आत है। बनवाकर ला दोगे ?

—जी हाँ ! हमारे कौता दल का मूदग वही लोग मड दते हैं। जान-पहचान है उनस। दे दीजिएगा। मुसीबत ले जान, ले घान की है।

—एक मजूर को मजूरी में दूंगा।

—घोर मेर बाबूजी को ?

—तू होती तो ठिठुआ देता। श्रीमत को प्राणीर्वादि दूंगा।

—उहू। एक दिन मेरे घर आकर गाना सुनाना होगा।

—सा सुना दूंगा मैं।

नाबू ठाकुर जाता गया। घरनीदास श्रीमत, माजती उसकी राह की तरफ ताबते रह गए। हाट इनने मे जम गई थी। चार सवा चार बज रहे थे। भीड़ गमगम कर रही थी। मरदिया के दिन। घान की फसल बट चुकी थी। भोगा की टेंट म पस है। और फिर गरमी नहीं है। बुरी बात में एक ही थी कि धूल था। उधर गणेशवरो धान की गदियां में घान लदी गाड़िया खड़ी। गंगा व उस पार से आबू, सकर-कदी, मिच, मसूर, चना आया है। खरीद बिक्री खुब। उस भीड़ में छोटा-सा ठाकुर लो गया। घरनीदास बोना, यह ठाकुर पक्का पडा हागा।

—क्या भई कहा है तुम्हारी डारिया सान्नी और गमछा ? दिखाओ। और तुम्हारा तरल आलता हो कहा है ?

वे दोनो औरतें फिर से आ गइ। घरनी न कहा, भाओ ! ठीक न बठ जाओ। खडे खडे भी दखना दिखाना होना है।

श्रीमत ने कहा, माला, जा लो। ठाकुर से बट द आज ही बाया तबला और पखावज भेज दें।

जानकर ही श्रीमत ने माला को हटाया कहा स। य दोनों औरतें

रसिक से और कुछ ज्यादा लगा। उनसे कुछ भोज भजे की डगमग बात होगी।

माला को भीड़ में ठाकुर मिला नहीं। वह बाबाथान के पड़तले खड़ी हो गई। लाग बड़ा ढला बाध रह थे। उसने भी एक डेला बाधन की सोची—जिसमें उस ठाकुर जसा डूल्हा मिले। खूब णवात में जाकर बाधेगी। लेकिन आखिर तक नहीं बाधा। छि। और फिर ठाकुर तो बाम्हन है।

**वा**त आखिर ध्यान की ता है नहीं, बहुत दिना की है ।

घरनीदाम की छपरी में बठकर मालती ने मन ही मन लखा लगाकर देखा यह लगभग सौ साल पहले की बात है । उस रोज भी वह बप्पा की बिछी दुकान के पास यही पर बास की खूटी से टिकी बठी थी । यही खूटी थी गायद ।

मालती ने पूछा, चाचा, ये बही खूटिया हैं, है न ? रग करवाया है ।

घरनी ने कहा, नहीं बिटिया । नई खूटिया है । हाट की तरक्की नहीं देग रही हो । अब भला पुरानी से गुजारा है । जैसा काल, वैसी चाल । हाट जम गई । गुड ने पक्के का मकान उठाया । श्रीमती की मिठाई की दुकान के सामने पक्के का बरामदा बन गया । सत्य न भी ऐसा ही किया । वह दलौ सरकार के लडका ने लकड़ी का कारोबार शुरू कर दिया । बेयर-टेबिल बनवा रहा है । उधर पच्छिम की तरफ देलो इटें पडी हैं । पास का जो भावबाला है, वह छपरी को पक्का बनाएगा । सबलोक 'इलेक्ट्रिक' लेंगे । मैं मसहरी बेचता हू मोटे कपड़े बेचता हू । मैं पक्का कहा से बनवाऊ ? मैंने भागपुर से बास मगवाए । दख नहीं रही हो, कसे सोये और माटे हूँ । रग लगवाया । और क्या करता ?

साहिब थी खभे पर टिन की छौनी करा दू। अभी भी साहिब है। मगर तुमलोग हिस्सा न छोडो तो कसे बनवाऊ? तुम्हारे बाप ने मुझे दो सौ रुपये देकर छपरी का भाषा हिस्सा खरीदा था। चाहता तो बिना जताए जोर-जबरदस्ती कब का पक्का बना लेता मगर कसे म घरम को क्या जवाब दूगा?

मालती चुप रही। वह सोच रही थी।

घरनी ने कहा, मैंने तुम्हारे बाप से कहा था विटिया। कहा था श्रीमंत आदमी सब कुछ बेचकर खाता है भया घरम बेचकर नहीं खाता। तूने बरामहन के बेटे की वह जायदाद—जायदाद भी नया पोखरे का हिस्सा और पाच बीघा ऊसर परती—यह लेकर तूने अच्छा नहीं किया।

वह जरा रुक गया। मालती भी चुप ही रही। दोनों के आगे अब हाट का गुलगपाडा स्पष्ट हो उठा। मानो हाट पीछे की तरफ से धूमकर आखो के सामने आ खडी हुई। उफ कितने आदमी! पहले भी लोग होते थे बहुत, मगर इतने अधिक नहीं। जरा नजर उठाओ कि सिर ही सिर नजर आते हैं। माथे का घूघट तक दिखाई नहीं पडता। जरा आल भुकाकर दखो ता कुरती की छोट और खाली बदन। औरतो की कुरती के अनेक प्रकार के रंग। हो हल्ला। कितने भले लोग। कुछ नए फशन की औरतें आखो मे ऐनक, परो म जूते? वह वहा सामने उस तरफ एक कोई बडे से एक सफद मुरगी को डना पकडकर ऊपर उटाए हुए है—मुरगी कैं-कैं कर उठा है। कोई पीडा हो रही है। उस समय लोग खूब छिप छिपाकर मुरगी खरीदते थे। आज मुरगी को ऊपर उठाकर चीख रहा है—विलायती मुरगी! विलायती मुरगी!

दो खरीदार आए। मसहरी है? बडिया मसहरी?

—है कना नहीं। भाओ बठो। कैं हाथ की?

—सासी बढी चाहिए। बाल बच्चा के साथ सोना है। पांच छे जने

के लायक ।

—चार-पाच हाथ का दू ?

—दो ।

घरनीदाम ने मसहरो निकालकर सामने फेंक दी ! देना ! जरा बुनाई पर गौर करो । सूता देव लो । खोलो—नापकर देखो । चीज लेनी है, देव-मुनकर लो । देखो—

वह उठ खड़ा हुआ । यह रहा, अठारह इंचवाला गज । तुम्हारा हाथ बड़ा है । एक इंच बड़ा । नापा ।

मालती की छाया के सामने से हाट फिर हट जाने लगी । हाट हटने लगी कि उसकी दृष्टि ! दृष्टि मन के अंदर की घोर हटने लगी ।— हा, नोवूलाकुर, खोकाठाकुर को उसके बाप ने ठग लिया था । ठगा नहीं था फुमला लिया था । बाया-नवला मठवाकर ला देन के बाद से ही खाकाठाकुर से जान-बूझान गुरू हुई । मढाई का दाम भी दिया था, एक मजूरे की मजूरी भी दी थी ।

भाद है उस, मौमी न कहा था घोर मेरी मजूरी ठाकुर ? खोका-ठाकुर ने कहा ज्यादा पैसे तो मैं लाया नहीं । श्रीमत ने कहा तो नहीं था ।

—मेरा नसीब ! तुमने माला को कहा है दूया ।

माला बोल उठी गीत सुनाने की कहती है ।

—ओ ! मगर गीत क्या जब-तब गाया जाता है ?

श्रीमत न कहा, अजी जब तब जस-तमा तो गाया जाता है ।

गा दीजिए न !

खोकाठाकुर शलथी मारकर बठ गया । गुनगुनाकर सुर ठीक किया । श्रीमत बोला, एक जाइए जरा मैं मृदग उठा लाऊ । मृदग लाकर उसने दाए हाथ से थाप लगाई बाए से गुव गुव निकाला । कहा हा अब गुरू होइए ।

खोकाठाकुर ने कहा, मृदग रख दो । सुर मे बधा नहीं है । डब डब



वर रहा है। दोनों हाथ कपाल तक ले जाकर कहा इससे सगीत का अपमान हाता है। और उसने गाना गुरु किया। गीत की कुछ कडिया आज भी याद हैं—

दूढ़े ही मिल सक्ता है वह फूल ।  
 किस बन फूल । किस मन फल ।  
 किस छन फूला फूल ।

और याद नहीं पड़ता। बड़ी अच्छी धुन थी। बहुत ही अच्छी। चपा न उस दुबारा गवाया था। उसके बाद भी जब-जब कहा करती, वही गीत जरा फिर स सुना दो ठाकुर। तारीफ करती थी आप जैसे साना ठाकुर बना ही गीत भी सुनहला।

पर म जब चपा और मालती ही होती ता मौसी वही गीत गाया करती। नाचती। कहती अरे तुम भी गाओ मौसी। आओ हम दोनों नाचें। नाच का गीत है। अकेल नहीं हाता।

वह भी गाती। वह भी नाचती। चपा कहती यह फूल मिलता ता माना गुंथकर गन म डालनी और जमना म बूद पड़ती। जानती हो।

पहन पहल वह स्वर्ग का पारिजात सोचती। एक दिन बाली थी पापमो कहा? स्वर्ग का पारिजात है।

चपा न हाथ मुठ नवाकर कहा था अरी नहीं मौसी नहीं। यह फूल घरनी पर हा फूलता है। मानसी क बान के पास मुह ले जाकर कहा प्रेम का फूल रे पगली प्रेम का फूल।

प्रेम का फूल। मानसी की गम लगी था। प्रेम क्या है उस समय क टाह-टोह जाननी नहीं थी लकिन साज रिपनी भीनी भीनी महक मिलन मगी था। और यह भी जाना था कि प्रेम स्त्री-पुरुष म होता है। क्याह क धामधाम। प्रेम जान म क्याह होता है क्याह हान स प्रेम होता है। चपा का बान म गर्माहर वह बानी—दुर—

चपा न कहा हा जो। ममभागी बनी। वह कहती हा गई इस

फूल को चुनने के लिए जाने कितनी रातों आखों में बितानी पड़ती हैं। घरी छोरी, प्रेम की बानो में रात प्रात हा जाती है। तुम्हारा भी फूलगा यह फूल। गबवे तो नगी फूलना है न। ब्याह पादी होन पर भी नही पता। फूलने से राधा जती पागल होना पड़ता है।

जाने कितनी रातें याद आती हैं।

उमके बाप से बड़ी भारी मून हुई थी। उसी दिन उसे गाजा पिला दिया। किसी घुरी भीयत से नहीं। उस समय तक उसमें कोई बदनीयत नहीं थी। बल्लव था। बल्लव घम का इतना ही निभाता था कि मान नहीं खाता। चुपिया रक्ती थी। गने में बठी। और गाजा पीता था। गाजा तो घरनी चाचा भी पीया था। अब भी पीता ही होगा। उम रोज जब साकाठाकुर दधर गीत गा रहा था वह उधर गाजा मल रहा था। गीत खत्म हा गया तो साकाठाकुर उठ खडा हुआ। श्रीमत की गाजा की तमारी दयी। बोल उठा, बाह तम्हारी तो खातो व्यवस्था है दखना हू। चदन की खुशबू आ रही है।

—बगर व्यवस्था के पीने में मजा नहीं आता।

श्रीमत उम समय छुरी से चदन की खुरक रहा था। चदन का बही चुरा गाजे में मिलाएगा।

साकाठाकुर ने कहा बैक ! एसा न हा ता गिव भला गाजा बोयो पीने लगे ? क्या ?

श्रीमत ने कहा तुम पिपो न ठाकुर ! तुम तो शिव के पडे हा !

उहू। मेरा गला खराब हो जाएगा।

—गला खराब होगा ! किसने कहा ? उतना बडा उस्ताद है वह घरन मुखर्जी हू, गान का दम लगाए बिना गला ही नहीं खुलता। कहना है एकाप्रता कंस आणी ? ध्यान बिना गान नहीं होता।

—उजा कहा। ध्यान बिना गान नहीं होता।

—पीकर देखो न !

—उहू। सिर चकराएगा। भग पीता हू। भग में ही ऐसा

नशा है कि !

—भग का नंगा बड़ा पाजो गंगा हाना है । किसी साग व त्रिप जसा । भग मत पिया करो ।

—सच कहते हो गरत उस्ताद पोता है ?

—गाजे की चिलम छूकर कहना हू । बाबा भुवनेश्वर की कमम !

—एक दिन ले चलोगे मुझे शरत उस्ताद के पाग ?

—उसके पास जाने की क्या पटी है ? तुम कहो न, मैं उस तुम्हारे यहा ल आना हू । पदद एक छपये और गाजा दना । अच्छी तरह स खिलाना पिलाना । मुखर्जी उसीसे बाग-बाग ही जाएगा ।

—महीने म दो दिन गीत सीखा करू तो क्या लेंगे ?

—पूछ देखूंगा । मगर तुम्हारे जसा चेला मिल ता दोडवर सिखा एगे । तुम्हारे पिता से अच्छी पटती थी । दोना न गाजा गराव खूब पी मीज किया । पूछू उनस ?

—पूछो ।

—पूछूंगा । कल ही पूछगा । सथिया की तरफ उनके बहुत-स चेले हैं न । अबसर मुलाकात होती है । मरे हाथ का गाजा उह बडा पसद है । कहते हैं, ऐमा तार और किसी के मलन म नहीं होना है श्रीमत ।

इतन म श्रीमत ने चिलम पर सुलगकर सुख हूइ टिकिया को रक्खा । चढाकर बढाते हुए कहा लो प्रसाद बना दो । मन ही मन बाबा भुवनेश्वर को याद करके कहो पियो बाबा । उसके बाद चिलम मुझे दो । मैं कायदे से पकडू । तुम अभी ठीर पकड नहीं पाओगे । पहल घीरे घीरे फुस फुस करके खींचो उटा दो । हा घीरे घीर । अब जोर से उडाओ । अब एक का खींचकर घुए को घोंटो ! घुए को निकलन मत दो । दबाए रहो । खर, थोडा छट गया तो गया । पहला दिन है । नंगा कम होगा !

कम नहीं, उतने से ही उसे काफी नंगा हा गया था । मालती का

पिता जब तम लगा रहा था, तो रोजाठाकुर वहा बठा ही था । धुत बना बठा था । एक शब्द नहीं बोला । याद है मालती को, वह दूर बठी घवाक हाकर देख रही थीं । इतना सा लडका ! दलते ही दलते उसका मुँह वैसा सूषा-मा हुआ जा रहा था । आँसे लाल हो आई थी । वैसा टुकुर टुकुर ताक रहा था ।

श्रीमत ने आखिरी बग खींचा । चिनम को ठाकुर की तरफ बढ़ाकर वह घुमा घाट बठा था । बात करन की गुजाइश नहीं थी—बात की नज़ी कि रोजा हुआ घुमा निकल पड़ेगा । लेकिन ठाकुर को उधर का बाइ होगा ही नहीं था । माला के दाप ने बाए हाथ से उसे जरा टेला । ठाकुर न तब कही ऊँ किया ।

श्रीमत ने हुस स घुए को ऊपर छोडा और कहा लो, और एकदम लगाओ ।

ठाकुर ने लडखडाती हुई आवाज म कहा—नहीं । और फिर न कोई बात न चीत । हाथ पाव फैलाकर वह वही ओसार पर पड गया ।

—लो । लेट गए जो !

ठाकुर क्या तो कहना चाह रहा था । बोल नहीं पाया । कोंक बाक् करके हिचकिया लेन लगा । जरा दर मे बोला—पानी !

चपा पौरन ग्लास म पानी ले आई । ठाकुर न पूरा का पूरा गिलास ढकाढक पी लिया । श्रीमत ने लोटे मे पानी लाकर थपथप करके उसके सिर पर थोपा । आख मुह धो दिया ।

चपा वाली, अरे कर क्या रहे हो ? जाडे के दिन हैं—

हुसकर श्रीमत ने कहा, कुछ भी नहीं होने का । ठाकुर अभी बुडकी लगाकर भुवन-सगेवर पार हो जाएगा ।

और सचमुच ही ठाकुर ने कहा, थोडा-सा पानी और डालो ।

उस रोज श्रीमत उसे अपन साथ ले जाकर घर पहुचा आया । लेकिन गजब दूसर दिन ठाकुर आप ही उसके घर आया ।

—श्रीमत !

चपा हस पडी थी। उसकी लिम्पिताहट धम नहीं थी थी। मालती ने पूछा हस क्या रही हो ? उसे गुम्मा भा रहा था। चपा बोला मौनी मछली यह कतला है !

—मछली !

—हा। यह ठाकुर। चारा चुगन आया है। गाजा गाजा !

ठाकुर अदर आया थीमत बहा है ?

चपा की हसी न और जोर पन्ना। मालती बोली वाता सायया गए हैं।

—ओ ! लोटा नहीं है ?

—न लोटे। आप बंठिए। मैं आपको पिलानी हू।—

चपा अदर गई। वहा से एक पुनिया ले आई। ठाकुर के हाथ में देकर बोली इसे चूरकर बीडी के अदर डालकर पीजिए। हा, मात हीजिए बीडी को। हा।

ठाकुर ने वह बीडी पी। कहा यह अच्छा है। वाइ भमेला नहीं। और कल की तरह सर भी नहीं घूम रहा है। न न जरा जरा घूम रहा है।

उसके बाद ठाकुर चुप हा गया। उधर चपा खिलखिल हसती ही जा रही थी। जरा देर में ठाकुर न भी हसना शुरू किया। उनके साथ मालती भी हसने लगी। कुछ देर के बाद मौनी ने उसे खान को बताया और पीने को पानी दिया। देकर गीत गाने को कहा। ठाकुर ने गाया भी। एक नहीं तीन चार गीत। मौनी ने पहले ही दरवाजा बंद कर दिया था। नहीं तो गीत इतना सुंदर गीत सुनकर अजोम पडास ने सात आठ दिना हरगिज न मानेंगे।

मालती के पिता ने इसका बात उम्माद परत गुगर्जी को जूना दिया था। ठाकुर का गला सुनकर परत मुखर्जी बडा खुश हुआ। बोला तुम बहुत बट उस्ताद हागे।

परत मुखर्जी का डरा नाबूठाकर के हा यहा हुआ। महीन म था

चार घाते, हर बार तीन चार दिन रह जाते। खानाठाकुर के यहा छोटी-मोटी दाबत ही हुमा करती। फूमा चीपती चिल्लाती। लेकिन ठाकुर कहता, अगर चीख पुकार मचानी हो, तो जहा चाहा, चली जाया। यहा मत चिल्लाओ। ये मरे गृह हैं।

फूमा कहती, अरे, इतना जुटगा यहा मरे हरामजादा। पूजा कहने को तो बस पांच बीघा जमीन और दे-पोखरे का बारह घाना हिस्ता है। बाबाघान मे माल म सालह दिन की पाटी।

ठाकुर कहता, आसमान से टपकेगा, जमीन फोडकर आएगा। तुम्हें इसकी फिक्र नहीं करनी है।

और जुटता भी जाता। नोबू उधार लाता। उतार श्रीमत दिया करता।

उधार के वही रुपये द आन म, मालती दो-तीन दिन फूमा भतोज का भगडा देल आई थी। उन दिनों ठाकुर सुबह गाम, रात दिन म तीन चार बार उसके यहा गाजा पिया करता था। तीसर पहर का जम घट उमीके यहा जमा करता। उस्तादजी घाते, लोकाठाकुर आता, उस्तादजी के दो-तीन चैन चाटी आते। गाजा चला करना।

उस्तादजी ने श्रीमत से माला को स्कूल म भर्ती करान की बात कही थी। कहा, अरे भई श्रीमत बिटिया की उमर क्या हुई होगी?

—आठ साल होगी मुखर्जी बाबू।

—बचपन म ही इसका ब्याह करा दोगे क्या?

—जी नहीं। वह समय अब रहा भला।

—ता? स्कूल क्या नहीं भजना है? एँ। औरतें अब हाकिम हो रही हैं। चुनाव म लड़ी होती हैं। परा म जूते पहनती हैं। मुल्क अब आजाद है। इस स्कूल भेजा। या फिर गला अच्छा हो तो सगीन सिखा। रडियो में ग्रामाफोन म गाएगी।

श्रीमत ने कहा गना-बला तो नहीं है। आपन ठीक ही कहा। स्कूल ही भेजूगा।

—हा, भेज। दीदिया ही तो पढाती हागी ? है न ?

—हा। तीन शिक्षाए है।

—फिर क्या है ? कर दे दाखिल। पहले खुद तू पहली दूसरी किताब म जरा सहारा दे दना। उसके बाद वह ठीक ही पढेगी। यहा पास कर ले तो सैयिया भेज देना। यह भी स्कूल की दीदी बन जाएगी। तेरा बाप अबधूत था। भीख मागता था। तूने खानसामागिरी शुरू की थी अब दुकानदार बना है। तेरी बंटी तो तिलक लगाकर चूड़ा बाधे मजीरा बजा बजाकर गाती हुई नहीं फिरेगी। वह मास्टरती होगी। मेरे लडके को देख न स्कूल मे दाखिल करा दिया है। कह दिया है गीत सीखना हो तो रेडिया ग्रामोफोन का गीत सीख। सो सीखा है उसने। और पढ भी रहा है। और फिर हिंदू महासभा भी करता है। गीत गाना आता है न। ओपनिंग साग गाता है।

श्रीमंत ने कहा, लडका आपका बडा चतुर चालाक है।

—हा जी। नहीं ता लीडर कैसे हो सकता है ? पढता भी बेजा नहीं है। तेरी बिटिया भी तो बडी तेज है। आख मुह भी खूब अच्छा है रंग भी साफ सुंदर। बाल भी घने लंबे हैं—खासी दीदीजी होगी यह। मगर हा स्कूल की ये दीदिया देखने म कसी है ?

—है तो काली काली ही, मगर बन ठनकर रहती हैं न। ल ले बना गाजा। ओ, नोबू बना रहे हो ?

—देर हुई जा रही है। जल्दी करा। सूरज डूब चला।—और आ आ करके तान भाजना गुरु कर दिया।

माला इसके बाद स ही स्कूल जान लगी थी। पहली पायी पढ चुकी थी किंतु पहली पोषीवाले दर्जे स ही गुरु किया। सबर उत भगो गमा को खोज लाकर बाध दनी और बगल म बस्ता दबाए स्कूल चनी जाती।

स्कूल उसका नोबूठाकुर के घर के सामने था। एक तानाव क इन पार उम पार। नार्ठाकुर सबरे ही म तानपूरे पर था था करता

रहता। आ आ आ। आ आ आ। आ आ आ आ आ आ आ। त्रम से  
 जगर का चन्गता जाना। फिर उतारना—आ आ आ आ आ।

श्रीर तालाब के उधरवाले घाट पर बठी फूझा कभी अपनी किस्मत  
 को गाली देती, कभी दिवंगत भाई के बाप के लिए रोया करती। ठाकुर  
 न उसे धलन कर दिया था। फूझा दे बाबू के महा रसोईदारिन का  
 काम करती थी।

लडकिया नोबू को मुह दिदानी—ए ए-ए। दे बाबू के घर की लड  
 किया तो म म में कहती। बकरी का मिमियाना। घटी बजती कि लडकिया  
 स्कूल के अदर बली जाती। माला के दरजे म एक ही साथ घाठ-दस  
 लडकिया कमेय-कय, कमेय-कय गुरू कर दना। दूसरे दर्जे म एक ही  
 साथ कई लडकिया पढने लगती—हुगली जिने मे मुहम्मद मुहसिन  
 नाम के एक महात्मा मुसलमान थे। हुगली त्रिल म—

किसी दरजे मे दीदीजी कहती—एक लाख पाच हजार तीन मी  
 पचीस। लिलो, एक लाख पाच हजार

इम समय नोबूठाकुर का गला कनी-कभी सुनाई पता, कभी-कभी  
 नहीं सुनाई पडता। टिफिन का घटी बजती कि सारे लडकिया तालाब  
 के घाट पर आ जातो। साफ कपडे म किसीके मूठी हानो, किसीके  
 और कुछ। पानी म भिगोकर बरामदे म बठकर खाएगे। उस समय  
 तालाब के उम पार विपिन मछेरा बेटे के साथ बटा लबाबू पोता होता  
 और पानी म फेंकने के लिए हाथ पर जाल सजाता होना। नोबूठाकुर  
 खडा रहता मछली के इतजार म। उस्तादजी हैं, उनक चेले बाटे है।  
 मछली चाहिए। बडी मछलिमा तो कब की खत्म हो चुकी हैं—आ  
 पोठिया जमी छोटी मछलिया ही ह। तालाब ठाकुर का ही है। मछेरो  
 को बटया दिया गया है। विपिन को। मछली पकडवाकर ठाकुर उसी  
 तानाब म नहाना। समय बधा हुआ था। लडकिया का छट्टी होती दस  
 दर्जे। घटी बजती और गारगुन करती हुई लडकिया बाहर निकल  
 पडती। नोबूठाकुर उम समय गता भर पानी म खडा तान छेडता



गीता—आ-आ प्रा ।

लडकिया हसते हसते बहाल हो जाती । गले भर पानी म छटा नोबू-  
प्रकुर भी हसता !

मालती को माया होती । खूब तो अपने आप गा रहे हो ठाकुर । कितनी  
मुदर आवाज । कितना अच्छा गाना । दूरे ही मिल सकता है वह फूल ।  
ऐसे ऐसे गीता को छोड़ जान सुनकर गले को माटा करके क्या जो आ-  
आ कर रहे हो । धरतमुखर्जी उस्ताद है कि खाक । कहने का भी  
उपाय नहीं । माला का बाप थीमत इस उमर में मुखर्जी से बजाना सीख  
रहा है ।

बहुत दिना स कहू-कहू कहते हुए भी मालती कह नहीं सकी । ठाकुर  
नहाकर तालाब से निकल जाता । भुवनेश्वर यान जाता है । गहागिरी  
है । सिंदूर का टीका लगा लेगा । आजकल तो बाबा के रुद्राक्ष की माला  
भी गल म डाल ली है ।

कितने ही दिन हाथ-मुह धाने का बहाना करके वह तालाब के इस  
पार घाट में उतरी । हाथ पाव से पानी को हिलाती रही । लेकिन ठाकुर  
अपनी उसी लगन से आ आ करता रहता या नहाकर जय शिवकर  
जय भुवनेश्वर हर-हर बम करता हुआ उठकर चला जाता ।

यही तालाब है ।

धरनी चाचा ने इसीके बारे में कहा है । मालती के बाप ने ठाकुर से  
इसीका लिया था । इसी तालाब से ।

अचानक टाट के सारे गोरगुल को दबाते हुए एक बड़ी ऊंची हसी ने  
सबका भाटा पकड़कर खींचा—कहा—

पलट कर दवा ।

क्या हो गया ?

एक जगह स डर के मार लोग भाग रहे हो जैसे । औरतें चीख रही है  
धरे बाप र ! ऐ मरी मा ! ई ई ई

पुरप डाट रह हैं—ऐ ऐ !

कुछ सयाल स्त्रिया ताली बजाकर ही-ही हस रही हैं। दूर खड़े मद लोग ठहाका मार रहे हैं।

क्या हुआ ?

जि उस भीड़ में से बाला मुहवाला एक हनुमान उछलकर एक आदमी की गरदन पर सवार हो गया। और तुरन्त हूप करके फिर छलांग लगा बठा। भवकी माटी पर। उसके एक हाथ में एक कदकू था। वहा से फिर उछला। हाट पार करके चला गया सरकार के लकड़ी के कारखाने के छप्पर पर, वहा से बगल के बरगद पर।

बाई एक आदमी चिल्ला उठा—जय राम !

## २

धरनीदास ने कहा—बड़ा उत्पात मचा रहे हैं कबलून ! पलटन बगान में एक टोली ही उनकी आ जमी है। पलटन बगान माने बड़-पीपल-बन का वह जगल, जहा शिवजी की भूत सेना रहती थी। सेर्टलमेट में कहा गया है यही रामता मुर्गिदाबाद से नवाबी सडक था। इस रास्ते से फौज जानी थी। बर्गिया के हुगामे के समय यहा छावनी पडी थी। ये पेड उसी समय के हैं। फौजियो ने लगाए थे।

मानती बोली बहुत बडा हनुमान !

—नर हैं सब। वहा तो कि सयासी हैं। उस दिन किसीन खेदा से एक न मेर यहा घुसकर सब तहस-नहस कर दिया।

एक खरीदार था। तात की साठी खरीद रहा था। जो लोग मसहरी खरीदन आए थे व कय चल गए, मालती को उसकी खबर ही नहीं। वह पुरानी बातों में ही सोई थी। खरीदार ने कहा, कुछ कम कर दीजिए और।

—और कम हो सकता है भला ! बनाई का भी खच नहीं निकसेगा।

दस ही रुपये लगेगे। आने पैसे छोड़ दिए। जाइए। बाजार मकही सादे धारू से कम म मिले तो मरे पाम घाइगगा, मैं यों ही द दूंगा। कह रहे हैं, लडकी को देनी है। ले जाइए। आखिर हम भी लडकी के बाप हैं।

—दीजिए।

खरीदार रुपये देकर चला गया। हाट की हसी घम गर्द—मीठी चीज पर जैसे चीटिया गुथ जानी हैं, वैसे ही फिर जम गए लोग। मधु मक्खी के छत्ते पर मक्खिया जसा। भन भन भन भन आवाज। एक-दूसरे के घदन से लगती हुई चल रही हैं मक्खिया। बीच बीच म एकाध जस पखन की आवाज करती हुई उडती है, वैसे ही चीख रहा है—घट गया आलू का दाम घट गया। कोइ घटा बजा देता है। एक पेरीवाला मुह मे चागा लगाकर चिल्ला रहा है। कोई शल सी कोई चीज फूक रहा है।

सरकस जैसे डम बजाकर कौन तो आ रह है—टेराराम, टेराराम, टेरे-टेरे। एक बास के डड की नोक पर चौकोर बोड पर रगान तसवीर एक के पहनावे म पाजामा छीट की कमीज—रुखे बिखरे बाल। मुह म चोगा लगाकर वह बोलने लगा—भुवनपुर टाकी। नई फिल्म। बिलकुल नई फिल्म। मुह बत का चिराग। मुह बत का चिराग। मुख्य भूमिका म सुनेना बरुण। बस और दो दिन। एक आदमी परचा बाटने लगा।

खरीदार के दिग नोट को टेंट म खोसते हुए घरनी ने कहा 'यवसाय का अब हो गया बेटी। यह अब नहीं चलन का। समझी? गाहक का गल काटे बिना गिरहकटी किए बिना घाटा ही घाटा है। चालीस रुपये के ज्यादा बच तो लिया मगर चार रुपये भी नहीं बचेगा। तात लिए बठा ह सूते का पता नहीं। सूता नहीं है सो नहीं। बनक का दाम देना होगा और इधर बाजार मे आग लग गई है। गुरमित ठूठ हुई बठी है। बर म बहुत कुछ रही है—रास्ता घाट अस्पताल स्कूल—

घरनी की बान मे बाधा देकर मालती ने पूछा आजकल पडो क चलती कसी है चाचा ?

—उनका अच्छा है बिटिया। अच्छा चल रहा है। इन दो-तीन साल के

अदर ही ता कई ने छप्पर पर टिन चढा लिया । लागो वो पसे बहुत आ-  
जा रह हैं न । मनीनी, देला बाघना—यह सत्र बढ रहा है । गई थी बाबा  
धान ?

—नहीं ।

—आते ही दख पाओगी । द बाबुओ न बाबा का चौतरा बनवाया था  
पक्के का—उसके चारो तरफ नाम लिख लिखकर सगममर का पत्थर  
लगा दिया है । मुना है मिलवाले उस मारवाड़ी न इम बार बढा मुनाफा  
किया है । यहा उसन मानन मानी थी । वह बाबाघान के चारो तरफ  
गोल खंभ खडा कराके उसपर गुबज बनवा देगा । देला बाघने की तो  
पूछा ही मन । ढेरों ! अपनी आँखों देख ही आओ न ।

मासती को याद आया उसका बाघा हुमा भी एक देला है । उमने  
भी बाघा था । खूब छोटी थी जब एक दिन बाघन गई थी । गम से नहीं  
बाध सकी । बाद म बाघ दिया था । बाघा भी था दूल्हे की कामना से ।  
लेकिन खोकाठाकुर नहीं । खोकाठाकुर तो उस समय गाव घर छाटकर कहा  
चना गया था जाने । देला उमने बसन के लिए बाघा था—शरत उस्ताद  
का लडका । माला की उम्र उस समय ग्यारह की थी । बमत की पद्रह मोलह  
की । उन बार बसन चुनाव के समय भुरनपुर म आदिचटर्जी को बोट  
नितान का प्रचार करना फिरता था । आदिचटर्जी हिंदू महासभा का  
उम्मादवार था । बमत गाता था—

दुपदमुता रीती दु शासन स्त्रीचे उमका चीर  
त्रागा नर नारायण, वेवत पाडव जमे वीर ।

गात वं बाद भाषण । कहना जुए का दाव लगाकर काप्रेम आज  
हाथ-पाव बधी दासी बन गई है । पाकिस्तान म शीरत) की अस्मत लुट  
रही है—चीख चीखकर रो रही हैं व । दासा स कुछ बोलते नहीं बनता ।  
बोलन की ताकत नहीं है । दास क्लीब । भ्रव मनुष्य को जगकर खडा  
हाना है । नर के हृदय मे नारायण का निवास है । सो रहे हैं वे ।  
व जागें ।

सुन सुनकर बदन के रोगटे खड़े हो जाते ।

बसंत भुवनपुर में ही रहता था । खोकाठाकुर के घर में डेरा डाला था । गाब के कुछ छाकरा का जटा लिया था । शरत उस्ताद के प्राय सभी चले उसकी बात पर चलते थे । उस्ताद ने खुद सबको कह दिया था । बसंत को आदिचटर्जी से तनखा मिलती थी । शरत उस्ताद मकान का किराया लेता था । खोकाठाकुर के मकान पर उस समय उस्तादजी का कब्जा था । कहा करते थे—नोबू मुझे दे गया है ।

खोकाठाकुर की फूझा साल भर पहले ही मर चुकी थी । नोबू केंदुली का मला गया था । वहा से फिर लौटा ही नहीं । नोबू के साथ शरत उस्ताद श्रीमंत घरनीदास—य लोग भी गए थे । ये लाग लौट आए । वहा नोबू बाऊलो के साथ चला गया । जात समय कज के बदले श्रीमंत के हाथो धपना पाखर और जमीन बेच गया । घर शरत उस्ताद को दे गया । और भुवनपुर की पडागिरी अपने फरीको को छोड गया । पडागिरी का दान या बिक्की केवल पडा से ही चलती है । वह बाऊल हो गया इस लिए उसकी जात भी गई । वह चाटता भी तो बिक्की या दान नहीं कर सकता ।

खोकाठाकुर के लिए कोई नहीं रोया । कोई था ही नहीं । जात बिरादर वालो को खुशी ही हुई । पढई का एक हिस्सेदार गया । शरत उस्ताद भी नहीं राया । बोना उसीके घर में बोला, उनके नसीब में यही था समझा श्रीमंत । गुरु में जब उसने मुझमें गडा वधवाया मेरा गिण्य बना तो उसका गला और दो एक गीन सुनकर मुझे लगा, यह खाटी माल होगा । लेकिन जस जसे दिन बीतने लग समझ में आता गया भूसा है भूसा । तीन चार साल में उससे सरगम ही नहीं हा सका । कभी नहीं होगा ।

चपा मौसी को केवल कुछ हुआ था । उसकी आखो से धामू बहते जमने देखा था । दुख उस भी हुआ था । लेकिन चपा मौसी जितना नहीं । खोकाठाकुर पर घरम घरम की एसी घुन सवार हो गई थी और गाजा पीते-पीते एसा बाग बाग और चुहाड सा चहरा हो गया था कि

उसे कसा तो बुरा लगता ।

चपा मौसी ने उस दिन उस्ताद स कहा था—ऐसा न कहिए उस्ताद—  
गीन बह अच्छा माता था । आपने उसे सिखाया नहीं । वही आपको ले  
आया, आपकी मेवा-टहल की और आपने अपन यहा के घनी शिष्य को  
पाकर उसे नहीं देखा, उसे तुच्छ बनाया, टाला ।

गरत उस्ताद ने कहा—लो, लो, देखो । यह औरत कह क्या रही है ?  
अरे धो श्रीमत, सुनो, तुम्हारी बीबी क्या कहती है ? ऐं ? तेरी बेटा  
स्कूल म पढ़ती है । वह फेल क्या हुई ? ऐं ? सीखने की भी जुरत होनी  
चाहिए । है कि नहीं ? रुई की बाती तेल खींचती है दीया जलता है ।  
कपास की काठी या छाल की बाती बनाओ तो सुलगगी कि जलेगी ?  
दिमाग नहीं है । जो था वह

चपा मौसी ने आगे कहने न दिया—वह तो न कहिए उस्ताद । दिमाग  
नहीं था, यह मत कहिए । वह मुझमे कहा करता था । कहता था, बरागी  
बहु, उस्ताद मुझको सिखाता नहीं है । मन ही मन मुझे तुच्छ समझता  
है । गरीब हूँ, इसलिए टालता है । मूरख कहता है बकूफ कहता है । अब  
घनी शिष्य जुट गया है न । आप उसे तू-ताम करते थे, कडवी सुनाते थे,  
बात बात म कहते थे तू गधा है । और बाबुओ के बेटे को कहते, आप  
बाबू हैं । वह हज़ार भूल करता मगर आप कितना मोठा बोलकर उसे  
बार-बार बताते थे

—लो लो, यह औरत कहती क्या है ? अरे, बाबू का लडवा और  
नित्यगोपाल का र जेडी बेटा नोबू क्या समान हैं ? ऐं

—आप गुरु हैं । गिष्य तो सभी समान हैं

—नहीं । इस औरत ने यहा से उठाया मुझे ।

श्रीमत उस समय वहा नहीं था । घरके अदर चला गया था उठकर ।  
गाजे मे मिठाने के लिए केंदुली मेले से इत्र ले आया था, अर से वही लाने  
गया था । वह निकला और चपा को डाट बताई—एक घण्ट लगाना दूंगा ।  
उठ । उठ जा यहा स ।

अपनी आदत के मुताबिक मौसी हसी थी। लेकिन उस दिन खिल-खिलाकर नहीं हसी। कसी तो भीगी भीगी सी हसी हसकर बोली—सो मार लो। मार खाने के लिए ही तो विधाता ने मेरी यह पीठ बनाई थी। और सह भी सकती हूँ मैं। मगर कहूँगी वाजिब। तुमने ठगकर उसका पोखरा और जमीन ल ली

श्रीमत् ने और जोर से डाटा ठगकर लिया है ?

—नहीं लिया है ? कलेजे पर हाथ रखकर कहा।

अबकी श्रीमत् ने उसका भोटा पकड़ लिया—बार बार उस रुपया नहीं दिया ? पाच-दस बीस। कुल जोड़कर वह कागज लिख गया है। तुम्हें तो बड़ा ख्यात है उसका। उस्ताद ने कहा अरे ए श्रीमत् ! छोड़ दे, छोड़ दे। औरतो का बाल नहीं पकड़ना चाहिए। छाउ दे। कहती है कहने दे उसे। तू इतना दिग्गड क्यों रहा है ? तेरे पास तो लिखा पढ़ी है। उसने तो लिख दिया है।

उस दिन मालती आसारे की एक खूटी पकड़े ही हरदम लड़ी रही।

श्रीमत् ने चपा का भोटा छोड़ दिया।

चपा लेकिन तो भी चुप नहीं हुई। उसने कहा उसने कागज लिख दिया है तुम्हारे पास कागज है—उसकी बात मैं नहीं कहती। मैंने हिसाब के बारे में कहा। हिसाब तो उसने रक्खा नहीं था।

—फिर ?

चपा ने तो भी कहा उस्ताद गुरु ब्राह्मण। गुरु के लिए अपने बेटे और गिण्य में कोई भेद नहीं। आपके बेट ने आकर उसीके घर में उसे किस बुरी तरह पीटा ? गाल पर पाचा उगलिया उग आइ। आपने कुछ कहा नहीं।

—सो। अरे क्या कहना ? उसमें मैं क्या कहता ? बसत स्कूल में सेकंड क्लास में पढ़ता है। अच्छा लड़का है। उसके साथ मूख पढ़ के बेटे न तक घुम् कर दिया। उस रोज रात को भूकप हुआ था। बसत ने सबेरे अर्पि बड़ई को बताया कि भूकप होता कैसे है। मूरख का भडा, धोर

मूरख बहू गाजा बना रहा था। पंडित जैसा सर हिलाकर बोल उठा, तुम कुछ नहीं जानते हो। भूकप घामुनी नाग के सिर हिलाने से होना है। वासुकी अपने हजारों हजार फन पर घरती को लिए है न, सो बीच बीच में जब बहू घरती को इस फन से उम फन में लेता है तो भूकप होता है। और वासुकी तब फिर हिनाता है जब पाप ज्यादा होता है। तभी घर द्वार गिरत है। लोग मरत हैं। यही तक लगा दिया। गजेडी है न। बसत ने बहू दिया, गजेडी को बकल भी कितनी हो सकती है। हमकर बबल बहूता क्या है—तुम्हारे बाप भी ता— यानी मैं—घरे बटा में तेरा गुरु हू बहूता क्या है कि तुम्हारा बाप भी तो गाजा पीता है। बस बमत न लगा दी चपत नहीं लगाए भला।

चपा मौसी ने कहा, बात आपने सब नहीं कही उस्ताद आपके बट ने उसे सिफ गजेडी ही नहीं कहा था, कहा था—गजेडी का बटा गजेडी तुम्हें बकल ही क्या। इमपर उसने कहा था कि गाजा ता तुम्हारा बाप भी पीता है। सो डेला मारने से तो पत्यर तो खाना ही पड़ेगा। पड़ेगा? खाना ही पड़ेगा? घरे बसत का बाप तेरा गुरु है तेरा बाप ता बसत का गुरु नहीं है। बमत कह सकता है। मगर वह कसे कहता है?

बिपिन मछेरा आ गया, इसलिए बाज उम दिन बही दब गई। बिपिन के साथ आया था सुरेनसाहा। बिपिन ने कहा दामजी मैं आप ही के पास आया हू। मैंने सुना, बज म ठाकुर आपको पोखरा में आप गया है। मगर मैंने बटया पर उसमें मछली जो डाली है।

श्रीमत ने कहा हा। पोखरा मैं खरीद लिया है बिपिन।

—जरा उसका कागज

—हा, हा देखो न। देखो न। मैं गवाह हू। सही बनाई है। दिखा दे श्रीमत कागज दिखा दे। स्ट्राप पर है। दिखा। कौन देखेगा? श्री मुरन। आओ। देखो।

श्रीमत ने कागज निकालकर दिखा दिया था।

मालती अपनी अपनी जगह से आगे बढ़ आई। उभरकर उभ



कागज की देखा। नोबूठापुर की सही देसो। उसीकी जसी टेढ़ी मड़ी लिखावट। मोटा-मोटा हर्फ।

उसके बाप ने दूसरे ही दिन सारी मछलिया पकड़वाकर बिपिन का वाट दी और पोखर की सात बर लिया।

३

मालती के कपाल पर गिबन पड गए। उसे याद आया थोड़ी ही देर पहले घरनी चाचा ने कहा है कि उसने उसके बाप से कहा था, आदमी सब कुछ बेचकर साता है थीमत घरम बेचकर नहीं साता। बरामहन के लडके का पालर और जमीन लेकर तूने भला नहीं किया।

इसी पोखरे से इन सबका सरबनास हुआ इसे खून के जुम मे फसना पडा यह सत्य है। लेकिन उसके बाप ने घरम कहा किया? कागज पर की वह मही तो वह आज भी देख रही है।

भुवनेश्वर के ऊचे टीले पर से नजर फिराकर मालती ने घरनी की तरफ ताका। घरनी चाचा चश्मा पहन बही मे शायद आज का हिसाब लिख रहा था। भुवनेश्वर के घान की ओर नजर गडाए उसे चित्तमग्न देख उसने कुछ कहा नहीं। अपना काम कर रहा है। बेला भुक आई। सूरज की किरणों भुवनेश्वर के पश्चिम तरफ बड पीपल बेल के ऊपर आ गई। इसी बीच हाट म जाने कब तो घपाघप घुले कपडेवाले बाबुओ की आमदनी हो गई। किशोरिया का एक दल—सभी शहर की औरता जसी भकाभक—धूम रही थी। मिल से सथाल स्त्रिया आइ। अब य पहले जसी सथालिन नहीं रह गई है। सबने ब्लाउज पहना है रगीन साडी पहती है। आसो की निगाह से समझ म आता है थोड़ी देर पहले की हाट घडी घडी बदलकर बहुत ही बदल गई। लेकिन शोरगुल बही। जगली मधुमक्खी के बडे छत्त पर जसी मन मन होती है बरी आनाज।

स्वूल, दफ्तर मव बढ हो चुके हैं। चार बज चुके हैं। भाधा घटा ज्यादा हा चुका है गायद। स्वूल के नटवे, लडकिया, मास्टर, दफ्तर के बाबू हाट भाए हैं। हाट की शक्न बदल गई है।

मुरगीवालों न हाब तज कर दी, मुरगी का भ्रटा, बनर का भ्रडा।  
मुरगी, भच्छी भच्छी मुरगी।

स्वूल की लडकिया को देस कार पीतावाला उत्माहित हो उठा। वह भी मुर म बोलने लगा, चार हाय बार चार हाय पीता लडा लडा, मडबूत। बाल बापा तो खुलेगा नहीं मन बाघी ला फिसनेगा नहीं।

—प्ररे धा गभू रागनी मे तल डाल। विमनी को ठीक से पाछ दे।—घरनीदास ने धभू को पुकारकर कहा। गभू घरनी को गाठ लाता-ले जाता है। घरनी अपनी पीठ पर भी एक गाठ बाध लेता है। भाज-बन हाट साभस भी कुछ ज्यादा देर तक चलती है। रोशनी जलानी पड जाती है। तरकारीवाले कोई फुप्पी जलाते हैं, कोई लालटन। विनादिनी और गुड की दुकान म हेजक जलनी है।

भालती धूमकर भाई। पूछ बटी भच्छा बाचा, तुमने उस पोयरे क बारे मे कहा न।

—वही तो अनरय की जड है बिटिया। बोलो, हे या नहीं? उसीके लिए ता पुहें सजा हूइ। क्या करते क्या हो गया।

—मो ता हो गया। लेकिन बप्पा न टग कर ता नहीं लिया है। तुमने कहा भयरम है। कहने हा कि बप्पा से तुमने कहा था। मार में तो उसका कागज दगा।

मर नवाकर चदम की पाक से घरनीदास ने उसके मुह की और ताका। उरा दर म बोला बिटिया लिया पत्नी के समय में मौजद था। मैं भी केंदुली गया था। और, उमन खपा कितना लिया था, मुझे भालूम था। खपा तो श्रीमत न सब अपना नहीं दिया था। मुझे

लेकर दिया था। सब उस उस्ताद के लिए। तुमने तो देखा था उस्ताद  
 आता था। बिसी बार दो ता बिसी बार तीन चेला साथ आता था।  
 फिर यहाँ के दो-तीन आदमी। दिन में न सही, रात को तो सब खाते ही  
 थे। उस्ताद पूरिया खाता था। चूँकि गाजा पीता था, इसलिए खूब  
 गाढ़ा दूध पीता था। और फिर तीसरे पहर मिठाई। पृछा मत। खोका-  
 ठाकुर तो अघपगला सा था। गुरु शुरू ता बड़े उत्साह से सारा कुछ  
 समाला। आखिर तीन चार सौ की जो नकद पूजी थी वह चुक  
 गई। फूमा गालिया देने लगी। फूमा को उसने अलग कर दिया। पहल  
 नोटा बटोरा गिरवी रखना गरू हुआ। तुम्हारा बाप ही ला देता था।  
 उसने खुद भी बहुत बतन दिया। मुझे भी दिया। उसके यहाँ बहुत  
 बडा एक हडा था बडी बडी कडाहिया थी। वह सब गणवणिको ने  
 लिया। उसके बाद गुरु हुआ उधार। कभी पाच कभी सात। कभी  
 दस। इस तरह से तीनेक सौ हुआ। मैंने श्रीमत स कहा था, दे तो रह  
 हो जी लोगे कस ? उस अभाग लडके का भी तो कोई कसूर नहीं है।  
 उसे बघवाकर भी क्या करोगे ? श्रीमत ने कहा धिटिया कपडे की  
 दुकान में बठकर कह रहा हूँ साभ का समय है, भूठ कहूँ तो भगवान  
 देखेंगे कहा—वह मरेगा तो मैं क्या करूँ ? वह ता मरे ही गा। मुझे  
 तो भया पोखरा चाहिए। साकेंदुली में जब ठाकुर ने कहा मैं भव घर  
 नहीं लौटूंगा जा रहा हूँ—कहा तो बिलकुल बाऊल जसा गरुमा पहन  
 कर—तो तरे बाप न कहा जा तो रहे हो मेरा रुपया कौन देगा ?  
 रुपया भी कुछ कम नहीं है। पाच छे मौ। ठाकुर ने कहा रुपया तो मेरे  
 पास नहीं है। हा जमीन है। ले लेना। मैंने तुम्हें द दी। श्रीमत बोला  
 वही परती जमीन तो है। नापी में भी कम। रुपये मरे पाच छे सौ स  
 ज्यादा होंगे। उनसे स कमून कस होगा ? पापर सा मत दना होगा।  
 ठाकुर न कहा वही स नो। सभी साथ में और दम-पाच रुपया ता  
 दे द। भीस मागना सीगने में ता समय लगेगा न। श्रीमत न कहा  
 दस रुपय दूंगा। सकिन सान खरीद साऊ लिस देना होगा। कहा

ले छापो। कर दी दस्तखत। उस्ताद न कहा, और अपना घर क्या करेगा? मुझे क्या नहीं दे देना? बाता ते लीजिए रहिए उरम। उस्ताद ने पूछा कीमत क्या लोग? बोला, भाप भरे गुद है गाती गजोज चाह जा भी करें, गुद है भाप। कीमत में भापसे नहीं लूगा। उस्ताद ने कहा, ता लिंग दे। वह भी निस्त दिया।

तानटेन जलाकर शम्भु ने छत्रे से भूतनी डोरी से लटका दी। घरनीदाम न हाथ जाडकर प्रणाम किया और टिकिया मुनगाने बठ गया। उगी पर पूज जनाएगा।

टिकिया मुनगाते मुनगाते बोला इगम मुम्हारे बाप का उनना दोष रहा किटिया। जितना दोष जितनी जिम्मदारी—सब गजत उस्ताद की है। उनसे सेवा-जतन म सोकाटाकुर न कोई बोर-बमर नहीं रकती, लेकिन घत मे उस्ताद उसक साथ इम तरह स पग घाता था कि सबको गम घानी थी। बल गया बबकूप, कमप्रबल—यह सब ता नाम-सा पल गया था

मालती बोली मामूम है। अपना मौसी म ठाकुर की बडी पटली थी। ठाकुर ने मौसी स कहा था।

—हा किटिया। ठाकुर का भुवाव धूपद धमार घादि बडी ताला के गीन की तरफ नहीं था। उस्ताद उमाथे पीछे पडा था। सियाकर ही रहेगा। ठाकुर की लगन दूसरी तरफ थी। और बहुत उडनी को जमे हिमाव म बसा दिमाग नहीं रहता, बने ही उमका दिमाग भी नहीं था। तिसपर गाना पीत पाने बँसा तो हो गया था। समझी? मुत्त बना रहता था। असली बात यह थी कि मन ही मन दुग्गी रहता था। सबसे बडा दु ग इम ज्ञान का था कि उस्ताद वायुओं के लडकों का गाना सिखान के लिए उनके घर जाता था और उसे लीकर जैसा लटाला, जो-सा कटता, सोकि ठाकुर वायुओं के गुम्बग का था। बडी चोट पहुँची थी। उस्ताद का वेटा बसत—वह तो बपन लगा देता था। कँदुली म एन घटना घट गई। हम लागे न डेग डाला। मेला देखने लगे। ठाकुर ला गया बही। सोजी

खोजो कहा गया ? अत मे मिला । एक पेड तले बाऊला का दल बठा था, एक बाऊल गीत गा रहा था । ठाकुर त मय होकर सुन रहा था । यह खबर शरत उस्ताद के चेल ऋपि बढई ने दी । ठाकुर के बिना रमोई ठप पडी थी । उसीको पकाना चुकाना था । आखिर उस्ताद गया । पकड लाया उसे । बडा भला बुरा कहा । जो मुह म आया वही ! ठाकुर ने कुछ कहा नही । रसोई कर दी सबको दे दिवा दिया और हाथ पाव घोकर निकल पडा । रात भर नही आया । दूसर दिन दस ग्यारह बज तक नही । अत मे थीमत उसे अजय के घाट से पकडकर ले आया । उसन गरुआ कपडा पहन लिया था पिछुआ नही खासा था । कहा, मैं बाऊल बन गया हू । अब मैं घर नही लौटूगा । तुमलोग वापस जाओ । मैं उस बूढे बाऊल के साथ जाऊगा । उसीसे गाना सीखूगा साधन करूगा । वस । उसी वबन थीमत ने लिखा लिया ।

दन दन करवै भुवनेश्वर की भारती होन लगी । शव घडियाल बज उठा । हाट के सारे दुकानदार एक बार खड हो गए । हाथ जोडकर प्रणाम कर लिया ।

कोई खरीदार आया । अच्छी मसहरी है ?

—है । धरनीदास ने मसहरी निकाली ।

—यह नही । यह तो तात की है । नेट की, अच्छी—

—जी नही । वह तो नही है । वह चाहिए तो गुड क यहा देखिए ।

—नही है । बताया गवेश्वरी तला जाइए ।

—तो फिर वही देखिए । लेकिन उससे इसम हवा आपको ज्यादा सगली । आखिर मसली नेट तो मिलेगा नही ।

भला भादमी था । यानी धोती कुरता चश्मावाला बाबू जरा ठिठका । सोचकर कहा अपनी मसहरी भूल आया । दूमरे की मसहरी मे सा नहीं पाता । खर बही दीजिए ! जरा बडा । अब गवेश्वरी तला कौन जाए ? दीजिए ।

—अपनी पमद स चुन लीजिए ।

—घ्राप ही दीजिए । इसमें फिर पसंद क्या ! दस का एक नोट फेंक कर बहा, जो दाम ही नाटकर बाकी पैसे लौटा दीजिए । और बिना गिने ही रुपये का जेब में डालकर चलता बना ।

धरनीदास न बहा, अच्छा माह्व है । बाबू । एजेंट-केजेंट होगा । मालती ने इस बात का जवाब नहीं दिया । बोली, अच्छा चाचा ठाकुर न जब लिख ही लिया ता फिर वामुदेव तवाखूवाने न पोखर के लिये भमला कैसे खडा किया ? ठाकुर ने क्या उसके हाथ भी बेचा था ।

—नहीं-नहीं ? बसा आशमी हो नहीं है ठाकुर ! वैसे नीयन भी नहीं थी उसमें । पोखरा बाबूआ के छे आन के हिस्सेदारों का था । छे आने का हिस्सावाला बूढा मालिक—उसीने ठाकुर के बाप को दान दिया था । बाबुप्रो के यहा एक बहुत बड़ा उस्ताद आया था । उसके साथ गान-बजाने वाला यहा कोई नहीं था । नित्यठाकुर ने हिम्मत की । आगे बढ़ा और गाया । गाव की पत रक्खी । बूडे दे बाबू ने खुग होकर पूछा क्या चाहिए, बहो ! नित्यठाकुर क बूडे बाप न बहा, मालिक आपको बहुत से पाखरे हैं । पोखरा ही उसे दीजिए । मालिक ने तथास्तु किया । वह एक समय ही था बिटिया ! तब एसा ही होता था । फिर जमींदारी उठने क बाद सेटलमेंट आया । उस समय दे बाबुप्रो ने पत्तियान देखा । देखा, पचीस छब्बीस साल के सेटलमेंट में पोखरा उन लोगों का दूआ-हवाया है । उन लोगों ने श्रीमन स रुपये मागे—दे कुछ । गवार श्रीमन ने दिया नहीं । इतने में तवाखूवाला वामदेव आया । वाला, मुझे दीजिए बाबू । मैं मूगा । दे बाबुआ ने दे दिया । वामदेव ने फौजदारी की । मुकदमा दूआ । अदालत से रोक लगी । मछली मारना बंद हो गया । तुम्हारे बाप ने बड़ी बड़ी मछलिया रक्खी थी । दम सेर की बारह सेर की । उससे यह बरदास्त नहीं दूआ । वह रात को चुराकर मछली मारने गया ।

—तो मरना था उमर बढ़ी थी कहे में यह पदों का भी था ।  
तुम तो उमर गाया थी । है न ?

मायाजी : क्या हा । सगलाज कर् (1) में एकद रता था म । एक न  
स यू री गता इमनिल गड़ा गा-कर गा-र दगा रता । मैं गा-र ता उमके  
गाय रती थी । उम गा-र होकर मैं ही म धार् था । उनके म रीमे ही  
मरना उमीन पर सा गिरती कि मैं उम मार देती । पर म रता ।

मायाजी का धार् है । उम गमन पर जाती पदा था । गद म रता  
तीन बरों म धोर धाही ऊभी टूट है । उवा-र गता । ध-गा-र म रता के  
गमन डाक्टर र उमकी उमर प-र गा-र की धा-र थी । डाक्टर ने उमर  
की जा-र की थी । तागी माटी-माटा थी । र-र धोर धाहा भर धार् है ।  
याद है सवेर गया की गीम सनवाया गा-र उमरा उम गमन भी था ।  
पहले वाली गाय नहीं थी दूगरी थी । उमका र-रमा-र उम गंदा जगा नहीं  
था । लकिन उमक धा-र र धार ने ही क्या मवने उमका र-रमा-र धैगा ही  
कर दिया था । गा-र की गुदही पर मे धा-र कुछ दूर तक म-र गि-रता  
करता था । गुरू गुरू कुछ दिता तब यह पर के ही धा-र-गा-र धा-र  
काटा करती थी हवा हवा करती थी । ध-र तब धोरी कर-र गा-र के  
स्वा-र का समझ गई । फिर यह भी उगी गाय की तर-र रा-र भर यहा  
यहा चर-र पेट की धा-र जमा पुला-र निरी गा-र तल बैठी पागुर करती  
रहती । सवरा होते ही मालती ए-र हा-र म डारी ए-र हा-र म ठेगा सि-ए  
ध-र से निकलती । गा-र के छोटे छा-र लोभी की तर-र उसकी तर-र ता-र  
करते । ध-र ता वह काफी खूबसूरत हो गई है, लकिन उस सग-र भी सु-र  
थी । धोर सु-र बनने के कुछ नियम उसने सीध थ । सिखाया था उस्ता-र  
के बेटे बसत ने । वाला म तेल यह कम डालती थी । बसत ने उस बताया  
था कि रुखे बाल फूले फूल से धोर तेल वाले जूडे से सु-र दी-रते है ।  
बलाउज पहनना उसे बसत ने ही सिखाया था । गा-र म भले ध-र की

धीरता में ब्लाउज का चयन हो चुका था। फिर भी श्रीमंत कहता, क्या री ? यह किसलिए ? समीज से ही तो चल जाता है ! मगर मालती अकेले उसीकी बान पर तो नहीं चलती। उमीके सबक पर नहीं निभर करती। उमकी शिक्षा तीन जने से हुई—श्रीमंत, चपा मौसी वसत।

वही जो चुनाव के समय बसत भडा उडाकर जागो नारायण वाला गीत गाता चलता था भाषण करता था, वह तभी से उसपर लट्टू है। क्या भाषण करता है वह ! खून खोल उठना।

बसत ने उमे वह मद्र गीत मिलाए थे। कहा करता अरी यह युग क्या वह पुराना युग है कि घर में बद बैठी रहगी ? कि तिलक काढकर, चूडा बाघकर मजीरा बजाते हुए गा-गाकर भीख मागती फिरेगी ? तू जा है द बाबू के यहा की लडकिया भी वही हैं।

उस समय तक वह स्कूल में पढती थी। अपर प्राइमरी के फन्ट बलास में। एक-एक बलास में दो-दो साल रहकर यहा तक आई थी।

उसी बार स लडकिया के बडे स्कूल के खुलन की बान थी। बसत ने श्रीमंत से कहा था श्रीमंत स्कूल खुलन पर मालती की भर्ती कर देना होगा। यही ता एक लडकी है तुम्हें !

श्रीमंत उम समय बसन का चेला बन गया था। दे परिवार के लोग तब तक प्रगरेजा के बफागार थे, अब काग्रस में आने की ताक में थे। सदा का बेकार घाबारागद जेल फिरता गौरीनाथ—बापेसी पढा के रूप में इलाके का मानद्वर बन बटा था। श्रीमंत ने कभी भी किसीका नहीं लगाया। मगर दे बाबुप्रो को बडा आदमी मानता था। इसलिए भी कि कभी उनके यहा काम किया था। लेकिन गौरीनाथ को क्या लगान लगा ? वही किस बात में काम है ? बसन से उमकी अच्छी पटी। बसत बडी अच्छी बात कहता है। बहादुर जगन है ! धीर फिर गरत उस्ताद श्रीमंत का गुद ठहरा। बसत का कहा सुनकर श्रीमंत ने कहा था, सर स्कूल में कर दूंगा भर्ती।

बपेसा के सदा के चिह्न में मे उमके गल में पनबी बटी थी।



यह उसके बाप के भी थी। चपा मौसी तिलक भी काढ़नी थी। बठी गले में वह फबनी सूब थी। आईन में उसने परखा था, गनो बैसा तो सवा और राली-खाली लगना है। बठी में प्रच्छा लगना।

सब रजब वह गाय खोजन जाती तो देखावूँ क यहा क कुछ छाकरी, कनाल आफिस के कुछ मनचल बाबू उस देखन के लिए रास्ते पर सडे रहन थे। उस समय तक इलाके में नहर भा गद थी। कोई दतुवन करने क बहाने कोई प्रनमना-सा सिगरेट पीने क बहाने, कोई चायचाटी के बहाने। वह सिर झुकाए मुसकराकर चली जाती। कभी आल उठाकर देखती तो देखती कि लोग उसकी तरफ ताक रहे हैं।

मानती मानो अपने आप उस गाय को डाटती मिल तो जाए जरा। बज्जात की पीठ की छाल छुड़ा दूगी। हु इस तरह स डब डब देखती रहती है गोया कितनी भली है। आल फोड दूगी। गतान गाय।

मुह स कहती जरूर, मगर मन ही मन कौतुक ही नहीं, जरा खुशी सी अनुभव करती। चपा मौसी से उसने यह सब बहुत सीखा था। चपा की उमर उससे बहन ज्यादा नहीं थी, सोलह सत्रह साल ज्यादा। वह भरी पूरी युवती सी लगती। नाच गाकर मोज-मजे में दिन काटा करती। पहल तो गगा नहान को भाग जाती थी कभी नवद्वीप चल देती, लौटकर श्रीमत के हाथों पिटती। लेकिन धीरे धीरे भागना छोड़ दिया था। घर में ही यह सब करके दिन बिताया करती। दोनों में सखी जसा भाव। श्रीमत के कठी जाने पर, खास करके गर्मियों में दोना जने घर में सोई-सोई बडे मज्ज करती। कृष्ण की पूरी कहानी प्रेम की उसने चपा मौसी से अच्छी तरह सीख ली थी।

गाय को खोजकर लौटने पर कभी कभी वह आप भी उन छोकरो की बात बतया करती। कहती, मैंने क्या कहा जानती हो? और सब सुना जाती।

चपा कहती मन में पीडा होनी है पीडा? मन के प्रदर?

—क्या पीडा कसी?

हसकर चपा बहती, फिर तो कीर्ई डर नहीं। बेफिक्र। पीडा पीडा सगे तो मुगीबत है। समभी ?

—काह की मुगीबत ?

—काह की ? हाय राम ! मुगीबत नहीं ? पीडा हो ता समभा कि वह पीडा नहीं, प्रेम है। वृष्ण को कडम तल दखर श्रीमती को कसी पीडा हुई। कुछ प्रच्छा नहीं लगता, कलज म ल सा। ऐसे म वदे ने कहा, राधा के हुई क्या मन म पीडा ! वदा पूछती। किस तरह की पीडा री श्रीमती ? श्रीमती राधा कहती, कसी-कसी तो रे वदे। किसी बान मे जो नहीं लगता। पर म नहीं, किसी काम म नहीं, कलज के भीतर ग्लाई सी उठती है। रे पाने से बडा प्राराम मिलना है, बडा प्रच्छा लाता है। इम पर वदा कहती, प्रा तो यह और कुछ नहीं है, प्रेम है, प्रेम।

मालती लिलखिलाकर हसती ! बडा मजा घाना। लेकिन किमी के सामने बहने से प्रच्छा नहीं लगता। सामने भी किमके बाप के सामने मौसी उसे कुछ नहीं कहती—जो कहती सो बाप को ही कहती। किसीके सामने उसे बहने म बसत और दे बाबू के यहां की गोपा यही दो बे। गोपा उसको सखी भी थी। बसत की मीटिंग-बीटिंग म जाया करती। वह उस बिनाव देन घाया करती थी। नावेल ! दोना नावेल पढा करती। बसत पुस्तकालय म ला दिया करता।

मौसी कहती, कसी-कसी किताबें पढती हो मौसी। ग्राक लगती है मुझे तो। प्रा, लिखना पढना सीखा नहीं। सीखा होना तो गीत भजन की किताबें पढता। उसम जो रस है मत पूछा।

मालती कहती, तुम्हारा सर !

—हाय-हाय पिए बिना ही कह रही हो, मरा सर !

गोपा धीरे धीरे मुसकराता बसत के सामने बात होती तो वह कहता, खर ! मैं पढता हू सुनो। तुम भी तो बिना पिए ही खराब कह रही हा ! सुना। बसत ने उसे सारत् बाबू की किताब पढकर सुनाई।

सुनो तो चरा मौमी रोई। बोनी, काह ! बसत माणिक ही तो भला

है ! बड़ा अच्छा लगा ।

बसंत उस समय खोकाठाकुर ने उसके बाप को जो मकान लिया था उसीमें रहता था । उस्ताद न यहाँ एक स्थायी झड़ड़ा गाड़ा था । बस्ती बढ रही थी । परन्तु खुद कहता भुवनेश्वर का भुवनपुर दबी गये परी है यहाँ—बलजुग म अनपूर्णा की चलती गई देवते रहो भुवनेश्वर कागी स बढ जाएगा ।

खोकाठाकुर वाले मकान में संगीत का एक स्कूल खोला था । हफ्ते में दो दिन सिखाया जाता । लड़कियों के लिए तीसरे पहर दो घंटे और उसके बाद गाम से लड़का के लिए दो घंटे । लड़कों में लड़कियाँ ही ज्यादा सीखनी थीं । सभी लोग अब गादी के लिए लड़कियाँ को पढाते लिखाते हैं गाना-बजाना सिखाते हैं । अब पढा देने भर स ही लड़कियों की गादी नहीं होती । वर-पक्ष के लोग पूछा करते हैं लड़की गाना जानती है या नहीं ? श्रीमंत ने मालती को भी उस संगीत-स्कूल में दाखिल कर दिया था । उसे पसा नहीं देना पड़ता था ।

बसंत वही रहता था । तीन दिन बाप के साथ खाता पीता था तीन दिन खुद रसोई बनाकर खाता । चुनाव का चक्कर खत्म हो चुका था । हिंदू महासभा के आदिचटर्जी हार गए थे । बसंत से उसकी लड़ाई भी हो गई थी । बसंत उसे गाली देता था कि उसने उसका वेतन नहीं दिया । चटर्जी ने हिंदू महासभा में यह भालिंग की कि बसंत ने एक हजार रुपये का कोई हिस्सा ही नहीं दिया । बसंत हिंदू महासभा से अलग हो गया । कांग्रेस का सदस्य बन गया । लेकिन कांग्रेस के लीडर गौरीनाथमुखर्जी से उसकी लड़ाई थी । उसने अपनी पार्टी बनाई थी । थाने के दारोगा गिवरामसिंह स दोस्ती थी । भगडा फौजदारी में जो उसके पास जाता था उसको वह मदद करता था । मीटिंगें करता । गांधी जन्म दिवस स्वाधीनता दिवस गणतंत्र दिवस । जुलूस निकालता था हाट में सभा करता था ।

बसंत भाषण देता । मालती को बड़ा अच्छा लगा । मालती को ही

क्या, सबको अच्छा लगता। मीटिंग के आरंभ में ही मालती और गोपा गीत गाया करतीं। उस्ताद ने उन्हें दो गीत अच्छी तरह से सिखा दिया था। एक—

हो धरम म वीर, हो करम म वीर  
होशो उनत सिर, हागो जय !

दूसरा—जनगनमन अधिनायक जय ह।

बसंत के सर पर लव-लवे बाल थे, तेग जसी नाक, बड़ी बड़ी आँखें कमी म एक ही थी किरग काला था और दुबला था वह। डीला ढाला पाजामा और कुरता पहनकर जब वह जमींदारों, बड़े लोगों और ध्व-साइयो को गालियाँ सुनाता तो लगता आँखा से चिंगारियाँ छूट रही हैं। कहता, वह दिन अब आ गया है, जब इन्हें अपनी बरतूतो की कैफियत दनी होगी। दून गरीबाँ पर जो जोर जु-म इन्होंने हजारा हजारा बरस से किया है उसका जवाब देना पड़ेगा। लागो को इन्होंने पावा तले रौन्ग है। गुलाम बनाकर रखता है। इनकें मुँह का कोर छीनकर खाया है, दु ग्रासन की तरह इनकी औरतो पर अत्याचार किया है। इनकें घर की स्त्रियाँ बनारसी मुग्गिदावादी, विनायती म-नीन साडियाँ पहनती रहीं, य बचारी फट चिट कपडाँ स किसी तरह लाज बरानो रहीं। आह्वण लागो न इनको भूलूत बनाकर रक्पा। आदमी और अछत ! किसन कहा ? सभी आदमी एक ही भगवान के बनाए हुए हैं सबके दो हाथ पाँव सभी अपनी माँ की गोदी में पैदा हुए—भगवान की धरती भगवान के बनाए सूरज की रागनी भगवान की दी हुई हवा म साम लेत हैं—वे छोटे-बड़े कन हुए ? आदमी आदमी है। सर्वोपरि सत्य आदमी है, उसके ऊपर नहीं। एक जाति। कोई भेद नहीं। यही गांधीजी की वाणी है, यही भारत के कवि की वाणी है—यही नया भारत का नया विधान है।

यह भाषण बसंत न बहुत-बहुत बार दिया। लेकिन मालती न जब पहली बार सुना था, तो उसकी आँखाँ म आँसू आ गया था।

सभा के बाद अक्सर बसंत उसाँके यहाँ आता था। थीमत उसका

सामान वामान उठाकर ले आता । बसत उसके महा से चाय पीकर जाग  
और अंगर बसत का बाप, उस्तादजी नहीं होता, ता बट वहीं खाता ।  
बसत ने यह भाषण जिस दिन पहली बार दिया था, उस दिन रसम भग  
आकर बोला श्रीमत, आज रात में तुम्हारे ही महा लाऊगा ।

श्रीमत ने चपा से पूछा, धी घर में है कि खत्म हो गया ?

बसत ने कहा धी का क्या होगा ?

श्रीमत बोला आखिर पूरिया कैसे बनाएगी ?

—पूरी में नहीं खाता । पूरी बड़े लोग खाते हैं । मैं भान खाऊंगा ।  
तुम्हारी रसोई में ही बनेगा ।

—यह भी होना है भना !

—होता है क्या होगा । मीटिंग में मैंने क्या कहा, सुना रहा ?  
जात पात मैं नहीं मानता ।

श्रीमत ने कहा ठीक है । जात पात अब कौन मानता है ? अब सब  
गणक हाथ का रान है । फिर भी दिंदारा पीटकर नहीं खाना है बार्दी ।

—मैं दिंदोरा पीटकर लाऊंगा ।

रान में उगके खाने का समय श्रीमत नहीं था । रात के पहले पहर में

—जात-कुल में मानता नहीं, गवाऊ क्या ?

—भजी जनाब, वही बात ! भव मालती से ब्याह क्यों नहीं कर लेते ? तुम्हारे पीछे-पीछे डोलती चलती है ।

—ब्याह ! मालती स ! क्या रे मालती ?

मालती जैसे मानती, वह भी कुछ नहीं बोल सकी । वमत हस उठा था । हमकर बोला, बरागी वह भी खूब ह ! ब्याह कर लो बट्ट देन से ही ब्याह होता है मला !

—कसे होता है फिर ? रुपया-पसा ?

—उहू ! प्यार से । प्यार हो तो ब्याह होगा ।

रात में चपा मौसी बोली, धो मौसी, तो प्रेम करो ! मालती बोली, मौसी की बात ! यह सब मत बोना । लेकिन भवरे उठीं, तो गैया को खोजन के लिए निकलने के पहले हासी कपड़े बदलकर वह पहले बाबाथान गई ।

सबेर हाट सूनी पड़ी रहती है । खा-खा करनी रहती है । दुकानें खाली-खाली—गुरु की दुकान बहुत पहले से पक्के की है । उसका एक मुह पूरव के आसारे में हाट की तरफ है, दूसरा दक्खिन में सदर रास्त की आर । हाट के दिन पूरव के-आसारे का दरवाजा खोलकर दुकान लाती है । विनोदिनी सत्य, सुरेश की मिठाई की दुकानें भी ऐसी ही हैं । दो रूखी । लेकिन सबरे उनकी भी दुकानें नहीं खुली थीं । उसके बाद रास्ता हाट पार करके दूर तक चला गया है । उसके दानो आर दूर तक बाजार । हरेक किस्म की दुकान । मिठाई मनहारी, दर्जी पान-सिगरट, मोदीखाना कुछ धान के गाले । एक होटल । दवा की दुकान । भूषणपाल के आखिरी छार पर रहता है ऊरो हाडी—वह कठ मछली बचता है—हाडी यहा कई पर हैं । बास की सूप टाकरी बनात हैं । उसके बाद है अस्पताल । पहले खराती दवाखाना था फिर चार घेड का अस्पताल बना । बाबुधो ने बनवा दिया था । लेकिन आज ता अब बीस घेड का अस्पताल बन गया है । पहले मुसलमाना का कब्रिस्तान था ।

उसके पच्छिम मथा बाबा भुवनेश्वर के बरगद बेल का जगल। पहले रात मे कोई इस तरफ नहीं आता था। कहते थे, बाबा के भूत प्रत और कब्र के भूतो म दगा हाता है।

उतना सवेरे रास्त मे भी आदमी नहीं था। हाट म भी नहीं। घूल और पत्ते ही भरे पडे थे। यहा वहा दो चार बुत्ते। पेडो तल कुछ बकरिया चरती फिर रही थी। कई बलगाडिया। रात म धान-चावल लेकर आई हैं। घटाई बिछाकर गाडीवान लोग सो रह थे।

और वे लोग थे, जो हाट म ही रहते है। टिकली। टिकली की मा। चुनरिया। चुनरिया का बूडा, लगडा और काना बाप। टिकली मालती स कुछ बडी है। चुनरिया हमउम्र है। ये लोग बास की टटटी और राड के पत्ते की छीनेवाले घर म सदा से रहती आई हैं। टिकली की मा तब आई थी जब वह जवान थी। लोग कहते हैं, भले घर की थी। गगाराम जादूगर उडा लाया था। साप का उस्ताद कामरूप कामच्छा का मतर जानता था वही उसे ले आकर यहा भोपडी म बस गया था। गगाराम आखिर हाडियो के टोल की एक औरत क साथ भाग गया। टिकली की मा रह गई। भीख मागकर खाती। उसके बाद हुई टिकली। टिकली अब बनती-सवरती है। घरनी चाचा की दुकान से खरीदी हुई डोरिया साडी पहनती है। वह भी लाउज पहनती है। साभ होते ही बन ठनकर बस्ती के अदर से होती हुई गधश्वरी तला तक घूम आती है। चुनरिया भी जाती है। उसका साज सिंगार कम होता है। उसके बाद वे दोनो भुवनेश्वर धान के पश्चिम उत्तर बरगद बल पीपल के जगल मे दिखाई पडती हैं। पडो की आड म छिप जाती है। अघरी रात म तो पता नहीं ही चलता है चादनी रात होने स पेडो की फाक से अभी अभी दिख जाती है अभी अभी गायब। आवाज सुनाई पडती है। मीटी बजती है। यह बजाता है वह बजाता है। फिम फिम बातें। कभी चीत्कार। चीखकर भाग जाती है। कभी कभी सवर तक गाछ के नीचे ही पडी रहती है। घूप लगने पर आखें खुलती तो घर

सौटती हैं। धाकर फिर मो जाती हैं।

टिकली की मा गाली बका करती। धरी जलमुही, मरेगी। कभी या तो साप काट खाएगा, या कि किसी हरामजाद के हाथ जल जाएगी। टेंदुआ दबाकर मार डालेगा। या घड अलग, गरदन घनग।

टिकली बुदबुदाती।

चुनरिया की उसका बाप पीटता।—पानगी कसबी कही को—  
हरामजादी।

चुनरिया पीटती और कहती, धाऊ में चली जाऊगी। तू ही रह बुडडे। भीख मागकर सतपय पर रहना। भगवान धरम तेरो सेवा करे। तुझे गाजे का दाम चाहिए। गाम की गराव भी मिलनी चाहिए। यह सब कहा से धाता है, दखती हूँ मैं।

बाप कहता, किसीस गादी कर ले, महतत-मजदूगी कर, कमा काड। मा नहीं। ह राम। गत ही का लोट धानी तो या तो बुडडे को पता नहा हाता या जानकर भी कुछ नहीं कहना। सबरे लौटती ता बुलाकी जयादार का बुनिया उसे दिन भर सुनाती रहनी। कहनी, काम, मेर भी कोई बटो होती। सिनना घच्छा होता। हाय हाय, मिदाई भी खाती, गराव पीती। हाय-हाय।

जमानार बुलाकी के तीन बेटे। तीन घर। वह सब बुडिया का पाना नहीं देते। बुडिया न भी भोपडो वाली है। लडकों का घर वही उरा हाडा क पास अस्पनाल के करीब है। हाट की गारी है उनकी। जिस दिन जिसकी बारी होनी है सबेर धाकर हाट बुगरना है। हाट स उह कुछ मिलता है। हाट म गावर पना, पुषाब—जो भी मिलता है उसे एब गडडे मे खालना है। काफी रुपये की याद बिक जाती है। रुपये मे एक गाणे। साल म दो-डाई सो गाणे खाल हानी है। वह द बाबूभा की मिलती है। इनका हिस्ता कुछ होता है। व बडे तडक ही हाट बुहारने धाते हैं। धूल म, पसा, अघली भी पडो मिल जानी है। रेजगारिया ब्यादा मिलती है। जिसकी पारी हातो है, व दा



तीन जने घाते ह । बुहारते बुहारते जो मिल जाता है मिल जाता है ।  
उमके बाद जमा की हुई धूल को घोटते है । जैसे धान पसारते हैं, सारी  
हाट की धूल को वैसे ही परो से देखते हैं ।

उस दिन भगीरथ जमादार की पारी थी । वह बठा बीठी फूक  
रहा था । उसकी बीबी और बटी भाडू लगा रही थी । दो छोटे बच्चे  
दौडते फिर रहे थे और कभी कभी पाव चलाकर, हाथ से खोजकर  
चित्ला उठते थे—मिल गया र बप्पा ! चवनी ।

कभी-कभी सोने की नाक की कील कान की रिंग भी मिलती ।  
मल ठेले में धक्कमधक्की से गिर पडती ह । भगीरथ के सामने चार पाच  
पटे जूते पड़े थे । बिलकुल पटे । पहनकर आए होंगे, पावा दब-दबा  
कर टूट गए—फेंक दिया । भगीरथ उहे जूता सीनेवालो को बन देगा ।

भुवन-सरोवर के पास लगडे कान भिखमगे रहते हैं । अकेले अकेले  
हैं वे । उनके भापडी भी नहीं । घाट के किनारे पड़े रहते है । पानी  
बानी पडता है ता पडा तल जा छिपत है । सरदियो म भी यही करत हैं ।

भगीरथ न पूछा मालती वेटी, इतना सवरे कहा जाएगी ? ऐं ?  
मालती स भूठ नहा कहते बना । कहा बाबाथान जाऊगी । बाबा  
को प्रणाम करुगी ।

भगीरथ क उन बच्चा ने चिढानवाला लटका धुरु कर दिया था  
जिम वह बगाली औरत देखते ही सुनात हैं ।

ओ बगालिन बनी ठनी है,

पावडर पाते मेम बनी है ।

भगीरथ ने छट बनाई अवे अवे ए ! शतान !

मालती हसी । तालाब क घाट स कतराकर चली । बाबाथान  
घाट के पूरव है । वहा प्रणाम किया । फिर ग्रामतल होकर उत्तर को  
चली । ग्राम तल इठें बिछाकर चौकिया-सी बनाई गई है । उनपर  
बट वालों की ढरो । महा हज्जाम बटते हैं । मनन मानत हैं इसके  
लिए भी बान बनात हैं हाट क लोग या भी बनात हैं । उमके घाट

खानाद के उत्तर किनारे बरगद-पीपल का जाल । उसके अंदर से चल कर वह एक जगह काटा की नाडियों के पास खड़ी हो गई । यहाँ जो बरगद है, वह भी बहुत बड़ा है । उसमें म असह्य जटाए लटक आई हैं । इतनी दूर आकर जटा म ढला बाघने के लिए कम ही लोग आते हैं । उसन वही ढला बाघने की माची दी । लेकिन साचकर भी वहाँ नहीं आया । बाघल के वेड म लिपटी एब बूच की लतर नजर आई । बूच म भी बेगुमार काट थ । रह काटा । वहीं एक डोरी निकालकर उमा ढेला बाघा ।

बाघकर कामना की, दसत मे ही मेरा व्याह हो । बराम्हून टै तो क्या हुआ । वही जिसम उसना दूला हो ।

शौटन समय फिर बाबा का प्रणाम किया । भाव को पार करके खेती से होती हुई वह उन समल के नीचे पहुँची । लेकिन गया नहीं मिली । नहीं थी दहा । और भी कई जगह देखा । नहीं मिली । मन ही मन बड़ा गुस्सा आया । डर लगा । अपना राजा पीने के लिए खेदे घर पर ही रहगा । क्या कहेगा ?

उसन मन ही मन भुवनस्वर का मुमरन किया है बाबा, दहमारी गया जिसम अडगडा गई हा घर नहीं पट्टी हो ।

बाबा न उमकी पुकार सुनी थी । गया अडगडा ही गई थी । मेमल-तले बटी थी मुहभौसी । जब देखा कि मालती उनके लिवान नहीं पहुँची, ता बदल भाडकर वह उठी । घर की तरफ चली । दूध दे नहीं रही थी । दूध के लिए घर का खिचाव नहीं था । वह रामन म तलियों के खलिहा म घुसी कि उन लोगों ने पकटकर अडगडा भेज दिया ।

कुछ दिनों में उसका वह विश्वास और भी दृढ़ हुआ था। उस दिन बसत बड़ा उमंगकर उसके यहाँ आया श्रीमंत इनकलाब जिंदाबाद।

श्रीमंत घर पर नहीं था। हाट गया था। बसत को यह भी ख्याल नहीं रहा कि हाट का दिन है। चपा मौसी ने कहा, अजी इनकलाब क्या हुआ ? वह तो हाट गया है।

—मालती कहा है ?

—वह गायद सो रही है।

—जगा दो उसे। जगा दो। मालती ! मालती !

मालती सच ही सो रही थी। पुकार मुनकर उठ आई। बसत ने कहा, इनकलाब जिंदाबाद। कांग्रेस की जय। जमींदारी खत्म करने का बिल पास हो गया। बल ही जुलूस निकालना होगा।

जेल जाकर मालती ने बहुत कुछ सीखा था। लेकिन उस रोज उसे लगा कि जमींदारी बसत के भाषण से खत्म हुई। वह उसकी ओर आवाज होकर ताकने लगी। बसी चपा मौसी उसने भी उस दिन हसी मजाब नहीं करके उसकी तारीफ की। कहा बाह रे भरे माणिक, हो तुम गेर ! खूब किया।

दूसरे दिन जुलूस निकलना था। जुलूस के लिए कांग्रेस के पडा गौरीनाथ स बमत की भडप हुई थी। दे बाबू के यहाँ के लोग जमींदार हैं। छत्ताम करोट यटुवगी की तरफ बहुत बांट-बगारा हीन के बाव जून के बग रोब गिगान की कोगिंग करते। खाम करके जो छोटे छोटे भागीदार हैं। मुरग गजनी पराबी फरीक लोग बहुत गोरगुल मचान। उन्हें कुछ न लगए चाह माटे गिम्मन्तारा और जा बनिज ध्यानार करत थ उाकी पूछ करनी नी पढनी। इम उम बहान मामला मुकन्मा करके उहान लोग का दया रखता था। हर बात म वही प्रघान थ। युनियन बाड म लकर हर चुनाव म बस हान थ। इन बान पर बमत म बाबा भाडा हा बबा है। बमत साव भाषण द, चुनाव म व साग बमत का हरा दत थ। दा-एक मान पहन युनियन

बोड में बसत को एसी शिक्स्त दी थी कि मालती को भी शम हो आई थी। बसत को सिफ चौदह घांट मिले थे, जबकि शिवचंद्र द को अस्सी मिला था। जुलूस का नेतृत्व करके हुए बसत न दे बाबूओं के घर के सामन खूब नारा लगाया था। इनकिलाब जिंदाबाद से लेकर जमी दार का नाग हो तब। अगरेजों के बृत्ते जह नुम म जाए। भारत माता की जय। ऐस और भी नारे।

उस रोज द बाबूओं के घर का दरवाजा बंद था। कोई बाहर नहीं निकला। जुलूस में भी ज्यादा लाग नहीं जुटे थे। कांग्रेस के लीडर गौरीनाथ न मनाही कर दी थी कि जुलूस नहीं निकलना चाहिए। मत निकालो।

बसत न उमकी सुनी नहीं। मगर जुलूस म आदमी ज्यादा नहीं आए। द बाबूओं के डर से हा चाहे गौरीनाथ की मनाही से, बीस-पच्चीस स ज्यादा आदमी नहीं हुए जुलूस में। जुलूस में मालती और गोपा भडा लिए लिए आगे आग चलती थी। गोपा नहीं आई।

दे बाबूओं के टोले म जब नारेबाजी चल रही थी, ता गौरीनाथ न आकर बहा था, यह सब क्या हो रहा है? इनके दरवाजे के सामन क्यों? छि छि।

बसत ने मुखरसर म जवाब दिया, आपका हुकम मानन को मैं मज बूर नहीं हू।

मानती का बाप भी जुलूस म था। बसत के पीछे था। उसने कहा, बडी तो हमदर्दी है देवता हू। हमारी कांग्रेस बडे आदमिया को कांग्रेस नहीं है। तुम लोगो म कोई वास्ता नहीं। गरदनिया देकर यहा से निकान दूगा।

बसत न ही रोक दिया था। लेकिन जुलूस को उसने नहीं तोडा। लेकिन ज्यादा देर तक रहा भी नहीं। हाट तब पहुंचकर सभा किए बिना हा खरम कर दिया।

हाट म उस राज बाजीगरो का एक टाली कसरत दिखा रही थी।

एक ने कपाल पर धास की एक लगी लटा की धी धीर उमक ऊपर नौ-दस सान की एक लडकी तमांगा दिगा रही थी ।

जुलूस के सारे लोग उसीक चारा धार घटुरवर घन दल रह थ । मालती बसत के पास थी । वाम की फुनगी पर स उत आदमी न उम लडकी को उछाल दिया था । लडकी घूमती हुई नाच आ रही थी । नाचो के होश उड गए—गिर पड़ेगी । मिट्टी पर गिरकर मर जाएगी । मालती बसत से सट गई थी और उसका हाथ बसतकर पकड लिया था । बसत न भी उसके हाथ का दबा लिया था । कहा दल ता सही । बसत का कहा सच निकला । उस आदमी ने लडकी को लावकर जमीन पर खडा कर दिया । खेल खत्म होने के बाद भी वह बसत का हाथ पकडकर ही घर आई थी । सदर रास्ते से नहा बस्ती के बाहर घंटा की तरफ स घूम कर । बसत ने ही कहा चलो, जरा घूमने हुए चलो । वह भी बोली, चला-

एक दूसरे का हाथ पकडकर चुपचाप चन रहे थ । बलगाड़ी का बच्चा रास्ता । आकाश म चाद था । चादनी थी । बडा भ्रन्छा लग रहा था । बसत जैसे आदमी ने भी यह सब बात नही कहकर आसमान की तरफ ताकत हुए कहा था, वाह बडी भ्रन्छी चादनी है ।

उसने भी आकाश की ओर ताका था । बीच आकाश म चाद था और एकबारगी एक किनारे एक नीला चमकता हुआ तारा । उसे खोकाठाकुर के गीत की वह कडी याद आ गई थी—उज्ज्वल नीला तारा !

कि बसत बोल उठा हा री मालती ?

—ऐं ?

—बरागी बहू—तरी चपा मोसी—एक दिन तु-नम ब्याह करने की बात कह रही थी ।

मालती का कलजा घा घक कर उठा था । गला सूख गया था । बसत ने कहा तू प्यार करती है मुझको ?

मालती की हथेली पत्तीज उठी थी । वह कुछ बोल नहा सकी । गा कि

गाव का घोर कोई होता, तो मालती बहती—नहीं, मुह से कुछ नहीं कहती—एक तमाशा जमा देती फिर बहती यह रहा जवाब ! आज लेकिन हा भी न निकली ।

बसत न कहा करती है ? बना न ?

अधकी यह घोमे से बोली उस दिन भुवनेश्वर थान म

—हा हा । क्या ?

—नहीं । वह मैं नहीं कह सकूगी ।

—नहीं कह सकागी ? क्यों ?

—नहीं ।

—क्या ? आजागवाणी हुई ? कोई सपना ?

—तुम बडे वो हो । कुछ भी नहीं मानत तुम ।

—कुछ भी नहीं । राजा, जमीदार भगवान—कुछ भी नहा । परतु भुवनश्वर थान म क्या हुआ, सो तो कहो ।

मालती चुप रही । हथेली मगर पसोजने लगी । कहना चाह रही थी, कह नहीं पा रही थी । बसत न कहा खैर । मत बता । मगर यह ता कह, प्यार करती है या नहीं ? उम दिन स तुम्हारे लिए मेरा मन बडा चबल हो हो उठता है । लगता है

—क्या लगता है ?

—बडा अच्छा लगता है तुम्हे ।

इस धार किसी तरह से उसन कहा, बसत-दा ।

—बता । अच्छा लगता हू मैं तुम्हे । प्यार करती है ?

जी जान से चाहते हुए भी मालती नहीं कह सकी कि हा, करती हू । उम रोज भुवनश्वर थान मे डेला बाध आई हू । उसका गना सूख गया था । गब्द घटक गए थे । किसी तरह से कहा यह मैं कागज म लिपकर बताऊगी ।

बसत ठिठका । दोना हाथा से उमके दोना कपे पकटकर कहा तो तू प्यार करती है ! घोर भट खींचकर उसे छाती से लगा लिया ।

घर घर कापती हुई मालती बोली बसत-दा ।

बसत ने एक न सुनी । उसका बाला धो, कपाल धो घूम लिया ।

—नहीं-नहीं । —मालती वाली । मगर वह नहीं बनी बमजोर था वह गला बड़ा क्षीण था । चाद की रागनी में उम खुली बहार में बसत की छाती में सिर रखकर उसने अपने को लो दिया था ।

अचानक पीछे में साइकिल की घटी बजी । चौंकर बसत ने उसे छाड़ दिया । वह हाफ रहा था । तो भी डरते हुए उसने देखा था । एक साइकिल घ्रा रहा थी मगर दूर में थी करीब में नहीं । सामने कुछ था । सादा-सा दिख रहा था । गाय थी । साइकिल वाले की उतरना पड़ा था । गाय रास्ते में हटी नहीं । और फिर कच्ची सड़क । गाय से कतराकर पार हो करके वह आदमी साइकिल पर सवार हुआ । बसत ने वहाँ खड़ी मत रह चल ।

चलते चलते उसने घीमे से पूछा देख लिया न ?

—गायद नहीं । और तुरंत वह जोर-जोर से बोलने लगा जमी दारी पाप है । एक घिनौनी प्रथा है । उठ गई आजादी का यही असली काम हुआ । अब लोगो को कुछ सड़े लोगो को राजा कहकर सत्ता नहीं बजाना पड़ेगा । बाबू साहब हुजूर नहीं कहना होगा । अब बड़े बड़े जोतदार जाएंगे ।

साइकिलवाला उन लोगो को पार कर गया ।

मालती ने पूछा कौन था ?

—सरकारी आदमी । भाजकल तो हरदम ही आता है ।

—हमलोगो को देखा नहीं न ?

—नहीं । और देखा ही तो क्या । मैं जात घर में तो मानता नहीं । ब्राह्मण-बणव, हिन्दू मुसलमान—यह सब भी नहीं । मैं तुमसे शादी करूंगा । ब्याह भी नहीं मानता । लेकिन चूकि नियम है एक इसलिए करूंगा । वह भी रजिस्ट्री से ।

—रजिस्ट्री से ?

—हा। बिना उसके गादी जायज कस होगी ?

मालती न रजिस्ट्री से गादी की सुती है। ठीक से नहीं जाने चाहे, जानती है। फिर भी जी मे कसा तो लगा। लेकिन कुछ पूछ नहीं सकी।

इतने में वे बस्ती के पास आ निकले।

बसत ने कहा, पिताजी की वजह से नहीं कर पा रहा हूँ समझी ?

वह तो कट्टर ब्राह्मण हैं न। नहीं ता

उमक बाद एकाएक बोल उठा, मेरे साथ चली चलेगी ?

उसकी छाती घडक उठी—चली चलू ?

—हा। रात में उठकर चुपचाप—

—कहा ?

—कलकत्ता। या और वही।

वह चुप रह गई। जवाब नहीं दे सकी। घबर से रह रहकर उसका मन कह उठता था, जाऊगी। हाँ जाऊगी। लेकिन मुह से नहीं कह सकी। जितनी बार कहना चाहा मन में धटक गया।

पर पहूची तो देखा, अजीब ही एक काँड़। बाप ने रुद्र रूप धारण किया है और बकमक कर रहा है। जो भी मुँह में धाता है, वही गाली बफ रहा है।

चरा भीमी न बनाया, दे बाबुभा से उसकी लडाई हो गई है। हाट से वह पहाँ ही चला आया था। गाजे की दुकान को जाना था। गाजा नहीं था। चक्का घस्त हा जाने के बाद वह दुकान बंद हो जाती है। दे बाबुभा का एक गुमानना अफीम खाता है। वह अफीम खरीदने आया था। वहा गुमानने न इनके जुजूस और नारा की चर्चा की। कहा, समझे भाई माहा भगवान के राज्य में यदि ऐसा कानून हो कि मर्क हाथी के समान हों, तो क्या हाँ। भेंडर ने हमकर कहा, घाष ही बहिए, क्या हो ?

—मेडन टर-टर करता है और पट फुलाना है। फुलाने फुलाने पटासू ! समझा।

धीमत्र से अफने का जन्म करते नहीं बना। वह बोला, छुछूदर का



बेटा चमगादड़, चुप रही। हाथी नहीं बे, छुछूदर, छुछूदर।

इसीसे बात बहुत बढ़ गई। श्रीमत ने धक्का देकर गुमास्ता को गिरा दिया। गुमास्ता दे बाबू के पास गया। चपरासी धाया था। श्रीमत ने उसे फटकार दिया, भ्रवे जा ना। मैं किसीका रयत नहीं गुाम नहीं— मैं किसीके हुक्म पर नहीं जाता।

बसत ने श्रीमत का हाथ पकड़ा, मेरे साथ चलो देखें।

बसत का वह शोधित रूप देखकर मालती का मन गौरव से भर उठा था। उनके साथ वह भी गई थी। उसके बाद जो कुछ हुआ मालती सोच नहीं सकी थी।

बसत ने दे बाबू से बराबर बहस की।

बसत से तक मे दे बाबू नहीं टिक सके। आखो से उसकी आंग सी निकल रही थी। वह बोला आप सब जुल्मी की जात हैं—अगरेजो के हुक्म के बदे—आदमी का खून चूसकर बड़प्पन दिखाया किया है उसकी कफियत आपको आज देनी पड़ रही है। आज आपकी सुख आखो की कोइ परवा नहीं करता। और भी बक्त आ रहा है। आ रहा है। यह धर इसकी इटें लकड़िया—सब जाएगी—

दे बाबू ने चपरासी से कहा दे तो निकाल दे यहा से—

चपरासी ने बसत को ढकेला। हाथापाई हुई। वही पर एक रूल पड़ा था। बसत ने उसे उठाया और चपरासी के माथे पर दे मारा। खून बह निकला।

मालती को चीख पडन की इच्छा हुई—हाय यह क्या किया? गले से लकिन आवाज ही नहीं निकली। बसत ने आकर उसका हाथ पकड़ा—चल। श्रीमत से कहा चलो श्रीमत।

लौट आए। लौटते ही बसत ने कहा मैं चलता हू श्रीमत?

श्रीमत ने कहा, वहां?

—अभी ठा सधिया जा रहा हू। उररत हुई तो बाद में और वहीं

जाऊगा। तुम भी बल्कि दो-एक दिन गांव में बाहर ही रहो।

श्रीमंत भा बला गया था। वह गर्मा, तुमनागा को कोई डर नहीं। हा, व लाग बुलाए तो जाना मत। मैं भास पास ही रहूंगा। वमा कुछ हुआ तो भा पहुंचूंगा।

उन सब पर किसी तरह का जार-जुल्म नहीं हुआ। हा, मामला हुआ। बाबुभा के उक्साए पुलिस ने उनपर दगा और डकती का इलाजाम लगाया चाहा था। अदालत में वह नहीं टिका। लेकिन श्रीमंत और बमत बेदाग भी नहीं छूटे। दोनों का जम स तीन और छे महीन की सजा हुई। सागा न मालती का भी समेटा था। मगर वह बकसूर छूटी।

पुलिस ने दसत का कम्युनिस्ट बताया। लेकिन हाकिम ने हसकर वकील से पूछा, घनी और जमींदार से लड़न से ही कोई कम्युनिस्ट होता है क्या? फिर तो कांग्रेस भी जमींदारी उन्मूलन का समयन करती है। कांग्रेस वाले भी कम्युनिस्ट हो गए? यह छोकरा तो उस राज कांग्रेसी भडा लेकर जुलूस निकाल रहा था।

उससे लेकिन दसत क्या जरूर नहीं।

जेल जाते वक्त बोला, मैं कांग्रेस को छोड़ दिया। मालती, खबरदार उन लोग के बुलाए मत जाना।

मालती ठीक ही नहीं गई। गौरी बाबू न एकाध बार बुलवा भेजा था। मालती ने ना कर लिया।

श्रीमंत की दुकान को मालती ही चलाने लगी थी। बाप के साथ दुकान में बटा तो करती ही थी। खरीद बिक्री देखी थी। श्रीमंत नही जाना वही बेचा भी करती थी। बाप को सजा हो गई, ता वही घरनी चाचा की दुकान के आधे हिस्से में दुकान किया करती थी।

घरनी भी बहुत बडा अच्छा किया चिटिया, यह सब में नहीं पड़ी। वह सब गौरी बाबू वगरह के लिए ही ठीक है। पुनियन बोड का परसी-डेंट, चुनाव, समा-समिति, यह सब उही लोगो के लिए ठीक है। मैंने

श्रीमत से किननी बार कहा तू यह सब मत किया कर। और उस्ताद के बेटे की तो बात ही छोड़ो। महिरावण का बेटा अहिरावण घरती पर गिरने के बाद भी लडता है यह तो उससे भी एक-कदम आगे है। उस्ताद का बेटा लाट साहब। ऐसा भुइपोड उस समय नहीं था। आज ही कल हुआ है। दो पना अगरेजी पढी और बदेमातरम का नारा—समझ गई इसी में अडा फाडकर साप क बच्चे-सा उनका जनम हो गया। सब पूछो तो यह सब गाधी ही कर गया बिटिया।

मालती मन ही मन हसती। हसी के बहुत स कारण थ। उनियन बोड परसीडेंट—उसके बाद यह खीफ—इसस उस हसी आती। फिर कहता तुम लोगो का समय अभी खराब है बिटिया।

चपा मौसी भी कहती मौसी दिन काल खराब पडा है। होगियारी से चलना।

लेकिन चपा घरनी चाचा जसी नहीं है। बसत के बारे में कहती लडका अब लीडर हो गया। जल हो आया। अबकी जरूर चुनाव में खडा होगा। देख लेना। लेकिन हा, हिम्मत है। कलेजा है। अबकी उसकी पूछ नहीं पकड सकोगी। देख लेना।

मन ही मन मालती कहती तुम देखना।

कि इसी बीच और एक घटना घट गई। खोकाठाकुर से जो पोखर खरीदा था उसे गधेश्वरी थान के तबाखूवाले बासदेव दुबे ने जबरदस्ती दसल कर लिया।

चपा मालती को लेकर दौडी दौडी गई थी।

मालती ने चित्लावर कहा क्या दुबेजी पोखरा हमलोगा का है। आप जोर-जबरदस्ती मछनी क्यों मरवा रहे हैं? यह क्या अघेर नगरी है! जिसकी साठी उसकी भस।

बासदेव बोला इस मैंने बाबुघा स खरीद लिया।

—पोखर द बाबुघो का नहीं हमारा है। हमलागा न खोकाठाकुर स खरीदा है।

—दे बाबुओं ने पीछर खोकाठकूर के बाप को या ही भोग करने के लिए दिया था, बेचा नहीं था। दान भी नहीं दिया था। जबानी कह दिया था, पाखरे में मछली की खेती करो छाओ। दान करने या बचन का हक उसे नहीं दिया था। कोई खागज-पत्तर हो तो दिखाओ। कचहरी की शरण लो।

मालती घरणी चाचा के पास गई थी। वह बोला, बही तो र बिटिया, यह तो बड़ा उलझा हुआ मामला जगता है। दे बाबू न कुछ लिखकर तो नहीं दिया था। उस जमाने के भ्रादमी, उनके मुह की बात की ही कीमत थी। सो मैं कुछ कह नहीं पा रहा हूँ। बल्कि चलो, जरा भूती सरकार के पास चलें। वह बापदा-बानून जानता है। इस हुलवे के जमीन खिरात क हक-दकूक का उसे पता है। वह बताएगा।

भूती सरकार ने कहा, मामला पेचीदा है। उलझन वाला है। पिछले सेट्टनमेंट के परचे में पाखर दे बाबू के नाम से है। लाखराज। उसके बाद बाबू ने जबानी दान कर दिया। कुछ लिखा-पत्ती नहीं की। लाखराज का सेस देना पड़ता है। ठाकुर ने वह सेस भी कभी नहीं दिया। वह भी दे बाबू ही देते आए। और पाच का जस देते थे, देते रहे। एक ही सबूत या दखल। वह भी बासदेव ने बदखल कर दिया। श्रीमत जेल म है। उसकी गैर हाजिरी म वेदखल किया, घब २खल जमाना भ्रामान नहीं है। मुक्ति है भया। असल बात यह है, श्रीमत ने बाबुघा से लडाई कर ली। उस छोकरे बसत के साथ उछल-कूद की। बाबू लोग बिगड गए। मौका दूरे रहे थे फाक मित्र गई। लिखा-पत्ती नही है। सेस बाबू लोग ही देने हैं। परचा बाबुओं के ही नाम है। श्रीमत रहा नहीं, बाबुघा न बासदेव को बुलाकर दा सौ रुपय मद दिया। बासदेव दुबे का पेगा ही यही है। वह फौजदारी मुकदमा खरीदा करता है। मुक्ति है भया। खैर, घान म डायरी तो लिखा दो। फौजदारी करे तो तुम लोग राक नहीं सवोग। लाख हा औरतें ही ता हो।

सुनकर मालती ने कहा, मैं जाऊंगी।

उस वसत का उदाहरण यात्रा था। उमा एक दिन स्कूल के लड़कों को स्कूल जाना से रोकना था। जुनून विचारना था। इसके लिए कुछ लड़कों का स्कूल जाने से रोकने के लिए रास्ते पर लट गया था। मालती वहीं करगी। यह पोखरे के घाट पर लेट जाएगी। जब लाग जात निकालेंग राह गनकर का लट गाएगी।

बिया भी वही। मगर कोई नबीजा नहीं निकला। लोगो को गवाह रखकर बासदेव ने उसे उठवाकर दूगरी जगह लिटा दिया था। मालती आदिर बासदेव को गाली गलोज करती हुई नाशामयाब होकर लोट आई।

श्रीमत् तीन महीने के बाद लौटा। जा श्रीमत् लौटा, वह भीर भी खूखार श्रीमत् था। वह फौजदारी के लिए आमादा हुआ। लेकिन बासदेव ने घाने म खबर ने ही श्रीमत् अदालत से श्रीमत् पर नोटिस कराई कि वह दगा करन के लिए पोखर पर न जाए।

श्रीमत् भी घाने गया। उसन भी बासदेव पर नोटिस कराई। तबिन बीच ही म चरम दुघटना घट गई।

ओ उसकी याद घाने से देह सिहर उठती है। अघेरी रात थी— हाट की ओर जो उजाला था उसके नीचे भी वसा ही अघरा धम धम कर रहा था। हाट टूट रही थी। घरनी अपना सामान समेट रहा था। घरनी का माटिया सब बाध रहा था। घरनी चाचा हिसाब मिला रहा था। आलू-प्याज वाले अनधिके आलू-प्याज का बोरे म भर रहे थे। बगनवाल अभी भी खीख रहे थे—बहुत सस्ता लगा दिया—बहुत सस्ता बगन।

कुछ बच्चे गिरे हुए आलू प्याज बीन रह थे।

खिलखिलाकर हस बीन रही है ? चुनरिया ? टिकली ? नहीं। वे नहीं। और कोई है। हाट म चुनरिया टिकली बहुत हैं। क्या कह रही

है ? बात सुनाई पड़ी—हाथ मेरी मा । मेर लिए सोच रहे हो ? किसके साथ जाऊगी ? मेरा मरा खमम भूत बन गया है । मेरे साथ माय डोलता है ।

मालती समझ गई । काई बिधवा युवती बोल रही है । साहम खूब है ।

घरनी बाला—घ्रा गई बिटिया—घपनी टोकरी भी नहीं खोली—घठी ही रही । अब ता हाट दूट रही है । घर जाऊगा । तुम भी घर जाओ ।

—हा चाचा, जाती हू । आज बिसात नही बिछाई । खाहिंग ही नहीं हुई । बंठी-बठी देखनी और सोचती रही । बल से ही कितनी बातें याद आ रही हैं ।

—बात तो याद आएगी ही । लेकिन तुमने क्या दुकान करन की सोची है ?

मालती ने कहा, कुछ तो करना ही पड़ेगा । पेट तो पोसना है । मौसी भीख मागती है । मैं तो माग नहीं सकूगी ।

—हा । चपा भीख मागती है । मैंने उससे कहा था बिटिया चपा यह कुछ काम-काज करके तो खा सकती हो । लोग का कुछ भून भान दे सकती हो, पानी भर दे सकती हो । काफी घर हो गए हैं । हर कोई तो दार्द-नीकर नही रख सकता है । ठीके पर पानी भरवाता है । पाच-भात घर का पानी भर दोता पैतीस चानीस रुपये हो जाए । वह बोली वह भी करूगी । लेकिन बण्णवकी वेटी हू गौर के नाम से भीख मागकर घरम बचाऊ । दिन म तो गौर का हरि का नाम लिया नही जा सकता है जेठजी ! देख लो तुम्हारा भाइ बण्णव होकर भी नाम नहीं लेता था । कमाकर खाने के सब से जायदाद के ताप से सब भूल गया था । कसा सौभ, कमी ईर्ष्या, बात हुई कि काई मछली नहीं मारेगा, अदालत का फसला होने तक कोई पोखर दखल नहीं करेगा । मगर इतना भी धीरज नहीं रहा । चोरी करके मछली मारने गया ।

श्रीमत् ने बड़े जतन से बड़ी बड़ी मछलिया तयार की थी । दस सेर बारह सेर, कोई-कोई पद्रह-सोलह सेर की भी । बड़ी मछलिया रोहू या भिरका थी । पाच-सात सेर वाली तो बहुत ही थी । लोगा के क्रिया-कर्म म कभी-कभी बेचा करता था श्रीमत् । अस्सी, नब्बे सौ रुपया मन ।

वसी मछलिया बासदेव ने सभी पकडवा ली । पहले दिन तो गाव मे वाट दी ।

बासदेव पछाही ब्राह्मण था । खुद मछली नहीं खाता । बाल-बच्चे खाते । उसने पोखर मछली के लिए नहीं खरीदा था । पोखर को पोखर के लिए ही खरीदा था जायदाद के लिए । सस्ते म खरीदा । ऐसा ही खरीदता है वह । भगडा भभटवाली सपत्ति सस्ते दाम म खरीदा करता । मामला-मुकदमा भी वह समझता है जानता है ।

श्रीमत् के अफसोस की सीमा नहीं थी । जिद का भी अत नहीं था । मामले के लिए उसने उस्ताद को पकडा । उस्ताद के साथ गहर जाता । मामले की चाल धोषे से भी कम थी । उसी चाल से चल रहा था मामला । रहते रहते श्रीमत् का धीरज टूट गया । बवार का महीना । भरा हुमा पासरा । घूप तेज होने से मछलिया पानी से ऊपर उभका करती । जब बारिण का पानी उतरता तो किनारे आकर सेंवारो को हिलाया करती । बड़ी-बड़ी मछलिया ।

एक दिन गहरो रात म वह चारा काटी गाड घाया । मछलिया को इसी तरह पकड-पकडकर ला जाएगा । किसी भी दिन वह एक ही समय में नहीं निकलता । कभी घापी रात म ता कभी रात के अन्तिम पहर म । कभी-कभी लोग-वाग के गीउ ही वह चारा डाल घाता । चारा काटी को फुनगी को इम घासाको स रक्का था कि उसने गिवाय और कोई नहीं पकड सकता था । मासना को अघन साथ स जाया करता । वह पहरा दिया करती और वह चारा डालता । घुपक से पानी म उतर-

कर चारा की पोटली बांध देता। सात दिन के बाद पहली बार उसने मछली पकड़ी। मालती के हाथ में एक मुगरी दे रक्की थी। मछली जमीन पर भाई नहीं कि उसने भारा और ले जाकर उसे एक गड़े में गाड़ दिया। पकाने से बू होती और लोग जान जाने।

पाचवें दिन की बात।

उस दिन एक रोहू फसी। बारह सेर की। बाप-बेटी मिलकर मछली को घर ले आए। दोनों हाफ रहे थे। चपा दरवाजा बंद किए खंडी थी। उस रोहू श्रीमत न उसे माटी में नहीं गाड़ा। कहा, रोहू है। काटा इमे। इसका माया और पटी खाएंगे। बाकी सब गाड़ देंगे। काटो।

मालती बचपन से ही मछली काटा करती थी। चपा कहती, बाप रे, वह लहू मुझसे नहीं दखा जाएगा।

मालती हसती।

वह मछली कूटने लगी। हसिया बड़ी धारवाली थी। श्रीमत न पन्नाइंग देकर बनवाई थी। वह मछली का पेट काटकर साफ कर रही थी, श्रीमत हसरत मरी निगाह से बैठा देग रहा था और कुन्न के माते कह-कह उठता था—सामा।

बार-बार कह रहा था। एक-दो बार कहने से सतोप नहीं हो रहा था। तेन इसी वकत चपा भोसारे पर से एक मयभीन चित्कार कर उठी—भा

क्या हुआ, यह समझने से पहले ही दीवार से अदर कूद आया था बासदेव दुव।

—साला। चोट्टा। हरामी वहीं का।

श्रीमत बलवान भादमी था। बासदेव उससे भी बलवान था। इसके सिवा वह भौचक कूद पटा था। सो श्रीमत को नीचे दवाकर उसका गला दबोच दिया था।—साला, चोट्टा।

श्रीमत को अपने दबाव का कोई मौका नहीं मिला—सिर्फ एक शब्द एक घराहट-सी उसके गले से निकल पड़ी।



मालती हवरी बकरी-भी हसिए क सामने बठी थी । चपा न दोर कर पाछे स बासदेव को खीचा ।—हाथ राम, मर गया, मर गया । भ्रजी आ !

बासदेव ने उस हाथ स भटका दिया । वह भटका ऐसे जार का था कि चपा पछाड गार गिर पनी थी । फिर भी वह चिल्लाई, मालती !

मालती के मिर पर खून सवार हो गया । गुम्स के मारे उसे जान नहीं रहा । उसन हसिया उडाई और जार से बासदेव की गदन पर दे मारा । बाइ और गत्र म हसिया लगभग प्राधी घस गई ।

बासदेव के मुह स एक चीख निकली । जानवर जसी । आ उसके साथ ही चपा चीख उठी—माता ! यह क्या किया ?

उधर सदर दरवाजा तोडकर बासदेव के आत्मी घुस आए । मालती की आखा के सामने और कुछ नहीं, केवल अघेरे म मानो गाली वाली-सी बहुत कुछ थी । लकिन गम । उफ कितनी गम !

श्रीमत् नहीं मरा । मरा बासदेव । अस्पताल दोना को ले जाया गया था । श्रीमत् भी बेहोश था । बासदेव भी कुछ ही क्षण मे बेहोश हो गया था, परतु बेहोश होने स पहले उसने इतना कहा था उस उस औरत मालती ने मेरी गरदन पर हसिए का वार किया ।

मरने स पहले अस्पताल म भी उसे एक वार होश प्राया था—उस समय भी उसन पुतिस के सामने, एक हाकिम के सामने यह बात कही थी ।

मालती ने भी इनकार नहीं किया । अजीब बदहवास-सी हो गई थी । उसी हालत म उसने हा कह दिया था । कहा बाजूजी देवस स घरी रह थे मौसी छुडाने गई—बासदेव ने भटके से उसे गिरा दिया मैं हसिए से मछली कूट रही थी—उसीस मैं वार कर दिया ।

रात भर वह हाजत म प्राधी पडी रही । नींद प्राती थी पर प्रातक

के मारे टूट टूट जाती थी। अचानक हान म वह डर के मारे रो पड़ी थी। अचानक राता।

मा। रात कसी थी वह।

सबेरे उसमे उठकर खड़े होने का दम नहीं था। दारोगा का उमपर माया हो आई थी। तेरह बीस साल की लड़की। उसने उसे नहलाकर भाजन कराया। उसके बाल मंदर को चालान किया।

मालती न झूठ बयान नहीं दिया। छोटी अनालन म भी नहीं, लीरे म भी नहीं। उस्ताद के साथ धावर चपा न सदर म उससे मुलाकात की थी। थोडा उस समय तक भी अस्पताल म था। उसे भी कम चाट नहीं आई थी। गला उसका बठ गया था। दोरा अदालत म जब सुनवाई चन रणे थी, तब वह आया था। बगना हट्टा-बट्टा, मजबूत शरीर, वह माना कंगो ही गया था। हड्डिया ही हड्डिया। जबडा उभर आया था। बँहुनी की हड्डो टिकल आई थी। धाखें घस गई थी। गाल पिचक गए थे। डरता था। हाफता था। गला बठ गया था।

रोता था। अदालत म ही दीवाल के सहारे खडा रहता और धावो से अकिराम आसू की धारा बहती होती।

पहले वह खुद भी विह्वल-सी हा गई थी। जेजलान व ऊंची दीवारो के घेरे के अंदर दूसरी एक छोटी-सी घिरी हुई जगह। स्त्रिया को जेल। नारो कसी पहरा दती। एक लब स बठ कमर म नारा-कदी रहती थीं। उस समय आठ जन थी। तीन मुसलमान। पांच हिन्दू। एक कम उमर की विधवा आह्वानी थी। विधवा होन क बाद उस सतति हुई थी। उस बन्ने का उसने गला घाटकर मार डाला था। तीन न अपने अपने पति का मारा था। बाकी तीन चार थी। एक अघेड थी। बडो साफ-सुथरी, बहुत खोलती। अच्छी अच्छी बात। गीठ अच्छा गाती थी। कहती थी, मैंने कुछ नहीं किया। लेकिन दूसरी स्त्रिया कहती कि लड़किया को घर से अगाकर बँच देना उसका काम था। बेश्यापिरी भी करती थी। इसके लिए उसे सजा हुई।

मालती को उस समय की सारी बातें ठीक-ठीक याद नहीं आती ।  
कैसी तो हो गई थी वह । उसे एक बड़ा भारी रोष था—खून करन से  
फासी हाती है । उसने खून किया है ।

जुवेदा अघेड थी । बूढ़े मुस्लार की बीबी । उस मुस्लार के मुहरिर से  
प्राशनाई थी । उससे मिलकर साजिग करके उसने पति को जहर दे  
दिया था । बच्चा नहीं हुआ था, इसलिए बूढ़ा मुस्लार फिर से गादी करने  
जा रहा था । उस दस साल की बच्चा हुई । और उस मुहरिर को पाच  
साल की ।

जुवेदा ने उससे कहा, अरी लडकी सोच मत । फासी तुझे नहीं  
होगी । मुझे कानून मालूम है । तेरी उम्र कम है । और फिर वह तुम्हारे  
बाप का खून कर रहा था, उसे बचाने के लिए तुमने हसिया चला दी ।  
खून करने के लिए हसिया नहीं चलाई ।

अघेड सुशीला ने कहा, छोटी तू चिंता मत कर । बेकसूर छूट जाएगी  
तू । कोमल मुखड़ा है डल डल चेहरा । अदालत में टुकुर-टुकुर ताका  
करना । अच्छी लडकी बनी रहना । समझ गईं तरा यह चेहरा देखकर  
ही सब भूल जाएगा । वकील फकील सब । अभी जिस तरह से हमारी  
तरफ ताक रही है ऐसा ही ताकने से काम चल जाएगा ।

और सचमुच ही वह सूधी-सी ताकती रहती । वह ऊंची दीवार  
इतना लबा कमरा, ऊंची छत । एक सिफ आकाश की धूप-हवा के  
सिवा वहा बाहर का कुछ भी नहीं आता । गन्ध भी नहीं । कभी कभी  
अचानक ही शायद हो कि कोई शोरगुल धा पहुंचे । जुवेदा बगरह को  
कौतूहल हाता क्या हुआ ?

स्त्री मेट से पूछती आज बाहर क्या हुआ है जानती हो ? कभी  
खबर मिलती कभी नहीं मिलती । कौतूहल भी उनका सत्तम हो जाता ।  
उसे पहल-पहल ऐसी आवाज सुनकर भी कोई कौतूहल कोई प्रश्न नहीं  
जगता था । धूप और हवा से सिफ इतना ही लगता कि वह इसी दुनिया  
में है । इस दीवार के बाहर वही घरती है, जहा भुवनपुर की हाट

लगनी है। रास्त से लारी जाती है, गाड़ी जाती है। जहा चपा मौसी है। बप्पा है।

रात को बसत की याद आती। रात को जनलाना ही पूरी पृथ्वी बन जाती। लगता, इसस बाहर कुछ नहीं है। तब लगता, बसत तो यही है। गुरु के दो दिन उस बसत की याद नहीं आई। तीसरे दिन अचानक ही याद आ गई। बसत जल म है। और इसी जन म है। रात को लेटे लेटे सोचनी। अपन आप मे पूछती, कहा है बसत ? कैसे उसे सबर भेजे।

जुबदा बगरह के नाच की महफिल जपती उस समय। वह शौडा गाती। जुबदा बठकर सुनती। हमीदा और कमला नाचती। विषवा ब्राह्मणी पीठ परकर मोई रहती। कैंमी ता था वह। वह शायद पढी लिखी थी।

सुगीला अश्लील गाना गाती। वह सब भी भद्दी अदाएँ दिखाकर नाचता।

मालती सोचती, बसत कहा है ? कस नेंट होगी उससे ?

धीरे धीरे वह सहज हो आई। सब सह गया। खिडकी के पास बैठी रहती और उन सबकी बातें सुना करती। बडा अच्छा लगता। रात को नाच गाना भी दगनी-सुनती।

इमी बीच मामल की मुनवाई गुरु हुई। क दिन एक बकील आया। उमे बहुत कुछ बताया। कुछ याद नहीं रहा। एक बात याद है—कहा था, तुम एक ही बात कहना। मैं बेकसूर हू।

पहली बार जिस दिन वह जेल के बाहर जाल घिरी गाड़ी स अदालत आई थी, उस दिन वह तमाम रास्ता जाल से मुह सटाकर देखती हुई आई थी।

ओह, कितने लोग ! रास्ते पर कितने लोग कमे चल रहे हैं ! कितनी रागनी कितना गोर। भुवतपुर की हाट याद आ गई।

अदागत म अपन बाप का देवा। पहली नजर म उसे पहचान नहीं सकी। दुसरी घसी भावें—यह मानो उसके बलवान बाप का प्रेत हो।

कनाल । वह रोई थी । उसका बाप भी रोया था ।

भद्रालत म खड़े होने के बाद वह फिर विह्वल-सी हा गई । जब जूरी वकील चपरासी सिपाही—वहूत से नोगो का दखकर छाती उसकी घन्कने लगी गला मूयवर काठ हो गया । लगा जुबान उम भूटा दिलासा दिया प्रीत विराज न उसस मन्नाव किया है । य सब लोग किस तरह स उसकी धार ताक रहे हैं । सबकी निगाहा म उस तिरस्कार नजर आया । वसी की ही गई बट ।

एक न उसस पूछा तुम दापी हो कि निर्दोष ?

वह बदहवास-सी बोली, ए ।

—अपने गाव के बासदेव दुबे का तुमने हसिया से खून कर दिया है । पुलिस कहती है—

आगे उसन नहीं कहने दिया—बीच ही म बोलना गुरू कर दिया, हा, म हसिया स मछली कूट रही थी । बासदेव दीवाल फादकर आया । मेरे बाप की छाती पर बठकर उसका गला दबोचने लगा । चपा मीसी चीख उठी हाय हाय, मर गया । बासदेव ने हाथ के झुके से उसे गिरा दिया—मैंने पीछे से उसकी गरदन पर हसिया चला दी ।

उसका वकील कुछ कहने जा रहा था । उसने कहने नहीं दिया । जब साहब ने मना कर दिया । फिर पूछा तुमने उसे मारा था, इसलिए कि वह तुम्हारे बाप को मार रहा था या उसपर तुम्हें गुस्सा भी था ?

वह बोली, गुस्सा भी था । उसन जबदस्ती हमारा पोखर छीन लिया था । जबदस्ती मछली मरवा रहा था । मैं सत्याग्रह करके घाट पर खेत गई थी—मुझे कीचड़ लिपटाकर जबदस्ती उठाकर ऊपर फेंक दिया था ।

आज उसने समझा उस समय वह बात नहीं कहनी चाहिए थी ।

चपा मीसी ने थोड़ा सा भूठ कहा था । कहा बासदेव न उसे ऐसा भटका दिया कि वह बेहोश हो गई थी । जब होन आया तो देखा घर मे भीड़ लगी है । बासदेव दुबे लहू म नहा गया है । पढा हुआ है । गरदन

पर गहरा धाव ।

तीन साल की सजा हुई उसे ।

तीन साल बंद नहीं रहना पया । दो महीने से ज्यादा घट गई सजा । छूट कर बल घर आई है ।

जेल में वह बहुत बड़ी हो गई । उमर बढ़ी । रूप तो गजब का हो गया । उज्वल साबलारंग गोरा हो गया । यही नहीं चपा मौसी न कहा, तुमम बहू क्या मौसा, देखन से लगता है, कोई राजकुमारी लड़ी है । हाय रे, बसिहारी जाऊ ।

अपने बाप की याद करते-करते वह स्टेशन पर उतरी और एक रिक्शा करके घर आई । स्टेशन पर रिक्शा था दखकर जरा अचानक हुई । यहा रिक्शा ? बोलतार की सड़क । उसक बाद एक जगह बन्द-सी सारिया लड़ी देखी । रिक्शावाले ने बताया, यह सारी का पडाव है । स्टेशन से माल लेकर भुवनपुर जाती है । मिल से चावल लाकर यहा पहुँचाती है । उसके बाद ऊँचे-ऊँचे खमा पर तार नजर आया । सुना था उसने कि बिजली आ गई है । उसका बाप थीमन, दो साल हुए, मर गया । जेल में ही मर मिती थी । उस समय वह बरहमपुर जल में थी । पहले बडा शोक हुआ । कई दिना तक खूब रोती रही । फिर जैसे बंद सह गई थी, वह भी सह गई । कदी मुपमा ने उसे बताया था । वेग्या थी वह । बहुत बडे ढकत की मागूका थी । उस ढकत का ही उसने मून कर दिया था । क्याकि उसे दूसरी भीरत से मुहब्बत हो गई थी । मुपमा क घर से ढकती का माल भी मिला था । बारह साल की सजा हुई है । उमर में वह काफी बड़ी है । फिर भी मालती को मानती है । उमी ने कहा, रा मत मालती । रोना नहीं चाहिए । यह जेलखाना ओ है गमखाना है । गुम हाकर रह । रो मत । रो कर होगा भी क्या ?

मगर वह रोई थी । बिना राए रहा नहीं गया । मुपमा ने कहा, सर, रो तो पा रही है तू ? रलाई है ? हमारी तो रलाई रही नहीं । आश्वों का पानी सायद सूख गया है ।

बर्द टिगां म इगना भी गूग गया था। मगने भर बाँ चता उगने  
 मिता गर्द थी। बगन के गया था। उग टिगा चता गी मागी मग  
 राई। उगरी गजर बगन पर टिगी रही।

घांगी घांगी ही बगन से बाह्य हुई। बाह्य बाह्य उगना की घांगी  
 कर हाटा म बाह्य महंगा टिगा घाँ गी।

घाज स्टेशन पर उगरी के पता उग बाह्य बाँ घाँ। उग  
 माँ की ही जी जात से घाँ चले रही। बाह्यर धांग करई दूगरे  
 लोग मोर दूगरी बिता की उग। घनग हाटा टिगा था। उगन बाह्य का  
 गिगवावर बार-बार बगन घाँ घाँ घाँ रहा था। भाँन उग। उग  
 घान रही टिगा। घाँ के घनग दरिबनना का देगजर घाँघ भी उगकी  
 जगट घाँघर गटा होना बाह्यता था। घाँगों के नामो जा बाह्यर प्रत्य  
 ये—लारियां विजली के गभ विष की गजर मारिया के रूत का  
 भवन मिल की चिमना दस्त की गई मोटर—हा पाडा का ता हाटा  
 नगी जा मफता। लबिन गजव दग से इन सारी धोडा की घोट करके  
 उसका बाप सामन घाँ खना हुआ था। घाँगों की दृष्टि उगरी या तो  
 थी ही नहीं या घजीव दग से घाँघर की हो गई थी। यह घनोगी  
 घभिजता मालती जेल से ले घाँई था। गायन हो कि जलगागे म यह  
 सबको होना हो। नाना लोग के हो-हूना म हाटात् भारता की निगाह  
 घजीव तरह से घाँघों म जो नहीं है वही देखती। यह बसत की  
 देखा करती थी।

चपा मौसी दरवाजे पर ही खडी थी। उसने बगत की उम्मीद की  
 थी। लेकिन बसत नहीं था। तो भी उसके लिए जी म कुछ रही हुआ।  
 मौका ही नहीं मिला। बाप की ही याद घाँई। कलज के घदर एक  
 घावेग मानो कुडली बाघवर घूम रहा था।

चपा मौसी का परिवतन दिखाई देते हुए भी दिखाई नहीं दिया।  
 कपाल पर तिलक। नाक पर रसकली। माथे पर सामने की मोर  
 जूडा गले म तुलसी की मोटी माला। चपा की चिट्ठी से ही पता चला

था, घम के नाम चपा नीस मागती है । भगवान को भजती है ।

मालती की आंखा से घामू बह आया था । जोर से बप्पा बप्पा कह कर बह रो नहीं सकी थी । चपा उसकी ओर ताकती हुई रहती थी । अवाक हाकर दब रही थी । अचानक उनका हाथ पकड़कर चपा बोल उठी थी, तुमसे बहू क्या मौसी, देखकर लगता है, कोई राजकुमारी आकर लगी हो गई है । आह बलिहारी जाऊँ ।

उसकी बातों में अजीब प्रकृतिम मिटाम थी । गहद जसी । कि पल में मन से उमका याप अदृश्य हो गया । खिली हसी जमा भला लगने का एक सुर मन में जग पडा था । घम भी आइ थी । जरा हसकर बोली, बहनी क्या हा मौसी !

—बहू क्या रे ! मौसी का नाना भुलाया चाहता है । जी में आता है तुमको राधा बनाऊँ, मैं सखी बना बनूँ ।

मालती अचकी ओर भी हँसी । कहा मरण तुम्हारा ।



दिन म फिर कोई सास बात नहीं हुई। पड़ोसी म स दो-चार जने उसे देखने आए थे। उसे देखाकर वे हैरान रह गए थे। उसका रूप और साज सिगार देखकर दग रह गए थे।

जो लोग खून के जुम म जल जाते हैं, व ऐसे सजे-सवरे और ऐसा रूप लिए कसे लौटते हैं !

एक न तो पूछ ही लिया यह सब कपडा-लत्ता तुम्हे जेल म मिला है ?

मालती ने कहा आजकल जेल म मेहनत की मजूरी मिलती है। वह रुपया जमा रहता है। निक्लते वक्त देता है। उसी रकम से मैंने सब खरीदा है।

—कौन सा काम कराता था तुम्हसे ? कोल्हू घुमाने देता था ?

मालती हस उठी कोल्हू ? कोल्हू घुमाने कयो देने लगा ? मालती की भाषा भी सुधर गई थी। उसने कहा, औरतो को कोल्हू का काम नहीं देता है। दूसरा काम देता है सिखाता है।

तात का काम सिलाई दरी बुनना भी कोई-कोई सीखती है। खिलौना बनाने का काम है। जिनसे यह सब नहीं होता उह चावल तीनने दता है। कित्तार पढने को देता है।

—प्रोह हो, तब तो बड़ा अच्छा है। ताने-पीने की बिना नहा।

कसी सूबसूरती निखरी है। घर होती तो यह रूप हरगिज नहीं होता।

—जामा न। रह आओ वहा। तुम्हारा भी रूप निखरेगा।

उसने लेकिन बुरा नहीं माना। बोनी जिसके रूप होना है, निखरता है। रूप न हो तो निखरेगा क्या? मैं वहा जाकर क्या करूंगी?

मालती बोली, जैसा रूप तुम्हारा है, जम हिसाब से तो निखरेगा। तुम्हारा पनि-देवता की भाँखें जुड़ाएगी।

—प्ररो, उमर हो गई। भव क्या तेरा जैसा है, बसा बलेजा है कि खून करके जेल जाऊ।

कोई दूसरी बीच म भा पड़ी, यह सब क्या कह रही हो पाल बूढ़ी। यह भी कुछ कहने की बात है। खून कोई चाहकर करती है क्या या कि श्रीरत्न खून कर सकती हैं? हो जाना है। छाडो वे बातें।

—छोडना क्या मामी! खून श्रीरत्न भी कर सकती हैं करती हैं। हमारे साथ सौ-सवा सौ श्रीरत्न थीं। उनमें से एसी भी बहुत थीं, जो खून करके दम-बारह साल की सजा काट रही थी।

—ऐ! कह क्या रही है!

—हा। प्रोर मन्ने की वान मालूम है जयादातर खून अपने पनि का किया है या प्रेमी का? जयादातर जहर दिया। एव न अपने पति के सर को पत्थर से चूर दिया था।

—हाय मेरी ममा! चूर कैसे दिया?

—मैं न पूछा था। उसने हसकर कहा, आखिर करती क्या? देवर से प्रेम हो गया था। वह प्रेम एसा हुआ कि पति काटा बन गया। पति दो कास दूर एव वावू के महा काम करता था। गुबहा था सो रात को भवानक भा घमका था। एव दिन तो पकड़ ही लिया था लगभग। असह्य हा उठा। उस दिन क छुट्टी लेकर घर आया था। हम दोनों सो रहे थे। वह तो सो गया मुझे नींद नहीं आई। घर में छिटकनी नहीं थी—आघ मन के एक पत्थर से रोक दे दी जाती थी। मैं जयो। भव

दिन में फिर कोई खास बात नहीं हुई। पड़ोसी में से दो चार जने उसे देखने आए थे। उसे देखकर वे हैरान रह गए थे। उसका रूप और साज सिगार दराकर दग रह गए थे।

जो लोग खून के जुम में जेल जाते हैं, वे ऐसे सजे-सवरे और ऐसा रूप लिए कैसे लौटते हैं।

एक न तो पूछ ही लिया यह सब कपडा लता तुम्हें जेल में मिला है ?

मालती ने कहा आजकल जेल में मेहनत की मजूरी मिलती है। वह रुपया जमा रहता है। निकलते वक्त देता है। उसी रकम से मैंने सब खरीटा है।

—कौन सा काम कराता था तुमसे ? काल्ह घुमाने देता था ?

मालती हम उठी कोल्हू ? कोल्हू घुमाने बयी देने लगा ? मालती की भाषा भी सुघर गई थी। उसने कहा, औरता को कोल्हू का काम नहीं देना है। दूसरा काम देता है सिखाता है।

तात का काम सिलाई, दरी बुनना भी कोई-कोई सीपती है। म्विलीना बनाने का काम है। जिनस यह सब नहीं होना उह घाबल कीनने देता है। किताब पढ़न को देता है।

—ओह हो, तब तो बड़ा अच्छा है। खाने-पीने की चिंता नहीं।  
कसी खूबसूरती निखरी है। घर होती तो यह रूप हरगिज नहीं होता।

—आओ न। रह आओ वहाँ। तुम्हारा भी रूप निखरेगा।

उसने लेकिन घुरा नहीं माना। बाली, जिसके रूप होता है, निखरता है। रूप न हो तो निखरेगा क्या? मैं वहाँ जाकर क्या करूँगी?

मालती बोली, जैसा रूप तुम्हारा है, उस हिसाब से तो निखरेगा। तुम्हारे पनि-श्रवता की आखें जुड़ाएगी।

—अरी उमर हो गई। भ्रम क्या तेरा जसा है वसा बलजा है कि खून करके जेल जाऊँ!

कोई दूसरी बीच में आ पड़ी, यह सब क्या कह रही हो पाल बूढ़ी। यह भी कुछ कहने की बात है। खून कोई चाहकर करती है क्या या कि औरतें खून कर सकती हैं? हो जाना है। छोड़ा वे बातें।

—छोड़ना क्या भाभी! खून औरतें भी कर सकती हैं, करती हैं। हमारे साथ सौ-सवा सौ औरतें थीं। उनमें से ऐसी भी बहुत थी, जो खून करके दस बारह साल की सजा काट रही थीं।

—ऐं! कह क्या रही है!

—हा। और मजे की बात मालूम है ज्यादातर खून अपने पति का किया है या प्रेमी का? ज्यादातर जहर दिया। एक ने अपने पति के सर को पत्थर से चूर दिया था।

—हाय मेरी मैया! चूर कैसे दिया?

—मैंने पूछा था। उसने हसकर कहा, आखिर करती क्या? देवर से प्रेम हो गया था। वह प्रेम ऐसा हुआ कि पति काटा बन गया। पति दो कोस दूर एक बावू के यहाँ काम करता था। गुबहाथा सो रात को अचानक आ घमकता था। एक दिन तो पकड़ ही लिया था लगभग। असह्य हो उठा। उस दिन वह छुट्टी लेकर घर आया था। हम दोनों सो रहे थे। वह तो सो गया मुझे नींद नहीं आई। घर में छिटकनी नहीं थी—आप मन के एक पत्थर से रोक दे दी जाती थी। मैं जगी। अब

तो सो गया है—देवर के पास चल्। हिली कि बोला—क्या ? दो बार, तीन बार ? और तुरन् उसकी नाक वजन लगी । उठकर निकलना था । दरवाजा खोलने क लिए उस पत्थर को उठाया । उठाया, तो जी मझाया सो तो रहा है इसी वक्न पत्थर से चूर क्यों न दू सर उसका ! चूर ही दिया । एक ही घाव म घायल हो गया । दो एक बार गो गो किया । और भी दो घाव दिया । मगर मालूम है उस हरामजा<sup>२</sup> देवर ने ही गन्नाही दी । छूटन दो फिर समझती हू उससे ।

—अरे बाप रे !

— किस जात की थी रे मालती ?

—थी तो छोटी ही जात की । लेकिन जिह् भली जात की कहनी हो, बराम्हन कायथ भी है । मिया मुसलमान भी । लिखी पढी भी ।

—लिखी पढी । बराम्हन कायथ ?

—हा । निमला दीदी बराम्हन की बटी थी । बिघवा । युवती । मुझसे बहुत पढती थी । उसने गला घोटकर अपने बच्चे को मारा था । भले घर की बहू भी थी । सघवा—लिखी-पढी । सुरेश्वरी देवी । अपना बाल-बच्चा नहीं था । सौत का लडका था । उसको जहर देकर मार डाला था । जुवेदा मुस्तार की बीवी थी । बच्चा नहीं हुआ था । पति ने दूसरी शादी करने की सोची थी । उसने भी पति को जहर दे दिया । जुवेदा बीवी अच्छी औरत थी । कानून जानती थी । हम सब की दरखास्त लिख दिया करती थी । और

रसीली स्मृतिया को याद कर हस उठी । कहा रात को जसी कहा निया सुनाती थी न ! ओ ।

—सूब अच्छी कहानी जानती है ?

—सिफ कहानी ? नाच—। नाचा करती थी । एक भेड बेइया थी । वह गाया करती थी ।

—वहा नाच-गान भी होता है क्या ?

—घाघी घाघी रात तक । एक कमरे म हम दसक जना थी ।

राज ही रात को नाच-गान चलना था। बाहर बब-बब करता। जेलर स कहता। जेलर बीच-बीच म बहा करता, यह सब नहीं। न यह सब नहीं चलेगा। मगर जुबदा बीबी ने एसा जवाब दिया न। मालती हम उठी। जेलर के मुह पर ही जुबदा बीबी न कहा, अजी जनाव, आखिर हमनाग भी तो मनुष्य है। और फिर जवान हैं। हमम जवानी की आग है। गा बजाकर दूध की प्यास मठा से मिटाती हैं। इस पर भी आप लीगा को एतराज है।' तमतम चेहरा लिए जेलर चला गया। जुबदा बीबी की छूट काट ली। मगर जुबदा बीबी की बला से।

यह सब सुनकर मालती को देखकर वह सब अवाक हो गई।

इन बातों म बब जानें मालती की एक नई ही शकल निकल आई।

पाल बूढ़ी की हैरानी तो बब गई। रम की प्रबलता से उसने पूछा इनन तो कदी रहत हैं वहा—मभी चोर, डकैत खूनी। इनस शादिया भी तो कर दे सकते हैं। भेंट नहा होती है री? हाय मेरी मा, इन लोगो के बीच रहती बसे है री। ऐं! पीछे नहीं पड जात है?

नइ नवेलिन ने कहा, चाची, तुम खाक कुछ नहीं जानती। औरत-मद एक ही साथ थोड रहते हैं। अलग अलग जेल है जेल म ही औरतो के लिए अलग जगह होती है।

—बरहमपुर में एक जेल है। वह सिफ औरतो के लिए है। अरे, ओ छोर, ऐ

छाकरे डर से भाग गए।

मालती ने हसकर कहा हा। मैं खूनी हू। हसिया अभी भी मौजूद है। नाक काट लूगी। भाग जा। बीच बीच म अभी भी मर सिर पर खून सवार हा जाता है।

कहत कहत क्षाम से वह श्रुद्ध हो उठी। इन छोकरो की भय भरी निगाहा म स क्या तो तीखे काट-सा चुभ रहा था उसे। चुभ रहा था उन बूतूहलवाली औरता की बाता स। चुभ तो रहा था बडी देर से

पर उसकी पीडा अभी अभी प्रसह्य हो उठी । उसके घोरज के बाध को तोड़ दिया । वह उठ गई । कहा पाल दीदी, अब नहीं सक रही हूँ मैं । अब तुम लोग घर जाओ ।

सब चली गई । मालती न चपा से कहा मौसी, एक गिलास पानी दो । प्यास लगी है ।

एक बिलकुल नई मासती का देखकर चपा के अचरज का ठिकाना नहीं था । लेकिन उसने कुछ कहा नहीं । सब सुन रही थी । देख रही थी ।

पानी देकर चपा बोली एक बात कहूँ मौसी ?

—कहो । तुमको भी डर लगता है क्या ?

—नहीं-नहीं । तुम तो मुझको जानती हो । डर मुझको नहीं लगता है । और इस दुःख-दुःस्तिन में गौरचंद को भजने से भय तो रही नहीं गया है ।

—तुम्हारा गौरचंद तुम्हारा ही रहे । उस छोड़कर जो कहना हो सो कहो ।

—ब्याह करोगी ? मालाचंदन ?

—बसत कहा है मौसी ?

—बसत ! हायरे नसीब ! वह तो अब बहुत बड़ा भ्रादमी है मौसी । लीडर हो गया है । जिने भर में घूमता है । कलकत्ता जाता है । सभा करता है । भाषण देता है । गाय में भुलुक में अब उसकी खातिर चिंतनी है ।

—यहां नहीं रहता है ?

—रहता है । दो दिन, चार दिन । सांशाटाकूर का महान सडकियो के स्कूल का बेंच दिया है । वहां सडकिया का होस्टल बना है । हाट के उस धार जगह खरीद कर महान बनाया है उमने । अखबारों में यहाँ की खबरें भरता है ।

—कब आएगा, मालूम है ?

—सा कसे कहूँ ? लेकिन आएगा—हो सकता है कल आए । कोई काना तो नहीं ।

—हमारे यहाँ नहीं आता है ?

—प्राता है । दामहीन म, तीन महीने में, कभी एक दिन ।

—मेरे बारे में नहीं पूछता है ?

—सो पूछता है ।

—पूछता है ? तो फिर वही जो एक बार भेंट की फिर नहीं गया ।  
नि चिट्ठी लिखी थी, जवाब भी नदारद ।

—मुझसे कहा था । कहा था कि माला ने चिट्ठी लिखी है । मैं जवाब दूँगा । काम और काम । पागल रहता है । जाए तो कब ? अब तुम उसे देखोगी ता पहचान नहीं सकोगी कि वही बसत है । मैं तो उसे प्रणाम करती हूँ । ओह, कसी कसी बात कहता है । मगर उसकी बात इस भाँपह से पूछ रही हो—

—उसने मुझमें वादा किया था मौसी । कहा था कि मेरा बाप मर जाएगा तो मैं तुम्हारे साथ ब्याह करूँगा । मैंने बाबायान में डेला बाधा था ।

—मालती !

चपा के स्वर में आश्चर्य और उत्कंठा छलक पड़ी ।

—क्या बात है मौसी ?

—मह कस कहती हो मौसी । वह बराम्हन है, हम वण्णव—

—वह तो जात-पात नहीं मानता है । फिर मुझमें वादा किया है ।

—माला !

—मौसी !

जरा देर चुप रहकर चपा धोली उसे तुम भूल जाओ मौसी !

हसकर मालती बोली, भूलना तो मुश्किल है मौसी ! इस वारदात के पहले उसने मुझे छाती से लगाकर । वह नि सकोच उस दिन की



सारी बातें कह गई। कोई भिन्नक नहीं हुई। जरा देर के लिए भी जबान पर रोक नहीं आई।

बोलते बोलते वे बातें उसे कठस्य हो गई है। जेलखाने में जाने कितना से कितनी बार कहा। नई कदी आई। उसकी सुनी, अपनी सुनाई। खूनवाली घटना भी कही। लेकिन सब बातों में यही बात उसकी खास अपनी ओर विशेष प्रिय थी। जो सुनती, उसे भी लगता, यही कुछ बातें प्राणों में पकड़ने की हैं। मन में सजोने की हैं।

कितनी ही रात वह बसत को याद करती रही। कभी रोई। जेल से निकलने पर ब्याह की कल्पनाएँ की।

गया रमा उठी। चपा बोली, ओ बिटिया, सुरभि घा गई। लगता है, साभ हो गई।

चपा उठी। मालती ने कहा, बही गया है ?

—नहीं। उसने देह रखी। यह उसकी बड़ी बेटी है।

—चलो देख आए। ब्याई है ?

—हा। बछिया है। बड़ी अच्छी-सी।

—कितना दूध देती है ?

—डेढ़क सेर देती है। आज तुम्हारे लिए खीर बना दूगी।

एक बगूना लिए वह निकली।

—दोनो बेला दूध दुहाती हा ?

—हा। गया दूध ज्यादा देती है। ठीक से दुहाओ तो बगूबी दो सेर। उसकी बछरू पिए। सो सबरे बगूने में सर भर के बरीब होते ही छुड़ा देनी हू। बछिया पीती है। मैं पानी भरने को चली जाती हू। चार पाच घर का काम घटा करके लौटने पर बछिया को बांधकर मा को छोड़ देती हू। जा घर चरा के भा। मगर दूसरे के घर मत जाना सछमिन। इसकी मा इनती गतान थी बटी उतनी नहीं है। किसी के घर नहीं जाती। पहल पहल रस्मी से बांध घाया करती थी। देखती थी लीचकर लूटे को उसाठ देने के बाद भी पातर के बिना ही चरती रहती

थी। तब से भय खुली ही छोड़ देती हूँ। मुराभि पोखरे के किनारे खरती है, या पेट भर कर समय से लौट आती है। आते ही रभाती है। मैं जाकर दुहा लेती हूँ। सुबह का सर भर दूध रोज़वाल का देती हूँ। इस शाम के दूध को गोरामाद के भाग में लगाती हूँ। प्रसाद पाती हूँ। आज तुम्हारी बंदोस्त गोरामाद को खीर खिलाऊंगी। उससे बहूगी, देखो, विष्णुप्रिया मत कर देना कहीं। दुःख न देना।

मालती ने हमकर कहा दुःख मैं नहीं पाने की मीसी। तुम्हारे गोरामाद की वह मजाल नहीं होगी। मैं सुख भदा कर लूंगी।

—ठाकुर देवता को एसा नहीं कहते।

—बहते हैं मीसी। बदखान म हम सब रोज़ ही कहा करती थी। जुबेदा बीबी का तीस साल की सजा हुई थी। सतीस मठनीस में छूटेगी। बच्चा नहीं हुआ है। युवती-सी लगती है। कहती थी भदकी निकलू तो मुझ को खोजकर रहूंगी। धीर कुछ नहीं तो वाईजी बनूंगी।

सिहर उठी चपा। कहा ऐसा नहीं बहते मीसी। छि।

रात लेट-लेटे दोना ने जेलखान की बातचीत की थी। उस बातचीत से भविष्य पर घाड़। चपा बोली तुम फिर न करो माला मीसी। मैं काम घधा करती हूँ, भीख मागती हूँ। घर है। गया है। मैं तुम्हारा पट चला लूंगी। फिर तो तुम्हें जिन नजह से सजा हुई थी लोग जानते हैं। तुमने हसिया क्या चलाई, यह भी सभी जानते हैं। रूपवती हा शादी तुम्हारी होगी।

मालती बोली, तुम उसकी मत सोचो। धान दो उस।

—किसे ? बसत को ?

—हा।

—मीसी।

—मीसी ?

—क्या कहूँ तुमसे मुझे तो भरोसा नहीं होता है।

—सो न हा।

—तो फिर देखो ।

सबेर जगकर उसने बाप की मनिहारी दुकान की पढी हुई चीजों को देखा । कहा, मौसी, मैं बाबूजी की तरह दुकान करूंगी ।

—दुकान करागी ? होगा तुमसे ?

—जरूर होगा । बाबूजी स भ्रच्छा ही करूंगी ।

बाबूजी से भ्रच्छा ?—चपा म आश्चय और कौतुक दोनों ही दिखाई दिया ।

—हा । देख लेना । गाहका की भीड लग जाएगी । अपने हिसाब से भाव बताने के बावजूद अत म मैं जो कहूंगी उसी दाम पर लेंगे । बाबूजी एक पैसा मुनाफा करते थे मैं चार पसा करूंगी । नहीं करूंगी ?

—मैं कैसे कहू कहो ?

—मोहिनी मतर सीख आई हू मैं ।

—सच ?

—तुम बडी बुद्ध हो मौसी । पहले तुम्ह अकल थी । गौर को भजकर तुम्हारी अकल गुम हो गई । मेरी जसी खूबसूरत और जवान औरत की दुकान पर भीड नहीं लगाएंगे लोग ?

चपा अबाव होकर उसे देखती रह गई—छोरी कहती क्या है ? मालती ने फिर कहा, हस हसकर बोलने से जो भी कीमत बताऊंगी, उसी कीमत पर खरीदेंगे लोग ।

—माता ।

—क्या ?

—तुम्हारी बात सुनकर डर लगता है । तुम हो क्या गई हो ?

मालती की भवो पर गिबन पड गए—यानी ? क्या हो गई हू ?

—तुम खुद नहीं समझ सकती हो ?

—तुम कहना क्या चाहती हो ?

—तुम समझ नहीं रही हो किस समझाऊ ?

मालती बोनी मैं तुमसे बक-बक नहीं कर सकती । खैर । जो भी

हो, तुम मेरे लिए न सोचो। सोचना नहीं पड़ेगा। मैं तुमसे कहीं ज्यादा समझती हूँ। तुम्हारा पाप-पुण्य घरम—वह सब मेरे लिए नहीं है। मेरी तरह रहती जेलखाने में तो समझकर आती। तुम्हारी दाईंगिरी और भीख के पस से दो मुट्ठी खाकर मेरा पेट भरगा। लेकिन मन नहीं भरेगा। मुझे भुकाओ मत, जाओ, अपना काम करो।

और तीसरा पहर हात न होते टाकरी में पुराना माल रखकर वह हाट चली गई थी। उसे पता नहीं था कि घरनीदास ने अपनी दुकान को जगह और किसी को दी है या नहीं। द दी है, तो जबरदस्ती बैठेगी, यही सोचकर आई थी। घरनी न उसे स्नेह के साथ जो पुकारा, उसका मन नम हो गया। उसके बाद हाट की तरफ ताकते हुए पुरानी बातें याद करके मालती मानो पुरानी मालती हो गई। वह सोचती ही रही। हाट उठ गई।

रात काफी हो आई।

क्या बज ? साढ़े सात आठ तो बज ही गए होंगे।

घरनीदास से वह वाली, आज मैं चलती हूँ चाचा। भगली हाट से लेकिन बप्पा का तरह बैठूंगी मैं। बप्पा जा देता या तुम्ह, वही दूगी।

घरनी ने कहा तुम्हारे बाप ने पहले मुझे दो सौ रुपया दिया था बिटिया एक तिहाई का हिस्सेदार बना था। तुम्हारे मुकदमे के समय बंच दिया। मैं दो सौ का तीन सौ दिया। सो—। जरा चुप रहकर बाला दखो मेरी इच्छा है कि फस का पक्का बनाकर खेते खड़ा कर दू। जरा ठीक से दुकान करू। इस बीच ।

—कुछ दिन के लिए तो दो। बाद में मैं अलग छपरी डाल लूगी।

—कितने दिन ?

—यही दो-तीन महीने।

—दो-तीन महीने ?

—दो तीन महीने से कम में होगा कसे चाचा ! —मालती ने लाड के स्वर में कहा।

घरनी को बड़ा भला लगा। सजा बाटवर ता यह लटकी बड़ी अच्छी हो गई है। बातें जितनी मीठी हैं उतनी ही सवरी हुई। उसके हाठ पर एक दुबली सी मुसकान खेल गई। यह वाला—अच्छा अच्छा बिटिया। बसा ही होगा। लेकिन जाननी हो तो तो बिटिया, मरा भी वही हाल है। लेकिन जब इस तरह से कह रही हा। खर।

मालती ने मन ही मन कहा ठहरो भी बच्चा ! एक बार बठ तो जाने दो !

घरनी ने कहा, तो अभी चली ?

—हा। रात काफी हो गई।

—हा। सदर रास्ते से जाना। बिजली हो गई है। भुवनपुर अब वह भुवनपुर नहीं है बिटिया। इन्ही दो घरसा में फूलकर ढोल हो गया है। किस्म किस्म के लोग। सुदरी युवती।

मालती की ज़बान तक आया अच्छा बुड्डे रसिया तो खूब हो। याद आया जेलखान में गोपिनी नाम की एक औरत थी। उसके बुरे स्वभाव का लाभ उठाकर उसके काका ने उसका भोग किया था। वह खूब हसती थी। हसकर ही कहती अजी सब देखा। बाप के सहोदर काका बाल सपेद—मैं विधवा मैं घर के नौकर से पस गई। काका ने उसके बाद

गोपिनी ये बातें बड़ रस के साथ कहा करती। कहती—आखिर बदला चुकाया। एक दिन सब कुछ चुराकर नौकर के साथ निकल भागी। नसीब मेरा। गहर में जाकर हरामजादे ने शराब की लत लगा ला। उसके बाद चोर बन गया। एक दिन चोरी करके गहना ल आया। पहनने का शौक हो आया। रख लिया। एक दिन वह पकड़ा गया। घर की तलाशी हुई। गहना निकल आया। गहना ही नहीं कुछ कपड़ भी मिले। सजा हो गई। फिर तो घूम घूमकर यह तीसरी बार है।

अरे बुड्डा ! बोली—सदर रास्ते से ही जाऊंगी चाचा।

रास्ते पर उतरी ता ख्याल हो आया बाबा को प्रणाम न कर लू।

तुरत लगा, बाबा नहीं, साक । वह गवेश्वरी बाजार होकर चल पडी ।

विजली की बत्ती । दुकानें भी बहुत हो गई हैं । वह दुकान किसकी है ? चद की । बत्ती जल रही है । ओ ! दुनल्ला मवान बन गया है । इधर मुस्लिम बोडिंग । उसके वगल मे रेटीमड कपडे की दुकान मे मणीन चल रही है । उसक आगे भगत की दुकान । उसके बाद जरा दूर अवेरा । रास्त की रोगनी के अनावे दुकाना म यहा लालटेनें ह । उसके बाद थाना । इधर होटन । यहा भी भूलनी किरासन बत्ती । भीड धीरे धीरे बढ रही है । साइकिल । घटी । बाबुआ के मुह म गिगरेट । हाय भरी मा चाय की दुकान खुल गई है । यहा भी बत्ती । इधर विजली है । यही विजली सप्लाई का दफ्तर है । उसके बाद हलवाई की दुकान । उसके आगे रोशनी स जगर-मगर गवेश्वरी बाजार । यहा आढतें ही ज्यादा हैं । अरे, यह किसकी दुकान ? इतनी मनिहारी, ऐसी भकमक राशनी ! हाय राम, कपटे भी हैं ।

—ऐ ! ए र सूधर । सूधर का बच्चा ।

फास करके मालती पलटकर खडी हो गई ।—ऐ इस तरह से श्रीरत्तो के बदन से सटकर चलता है । ऐ ।

उसने पीछा करने की कोशिश की । नहीं कर सकी । उसकी बात पर चारतिरफ के लोग ठिठक गए । जाने का रास्ता नहीं था ।

एक ने पूछा क्या हुआ ? क्या माजरा है ?

—वह देखो, चला गया । सूधर का बच्चा । वह बकरा मेरे बदन से सटकर निकल गया । हरामजादा—

कौन है रे कौन ? पकड पकड ।

शोरगुल मच गया । लेकिन वह पकडा नहीं जा सका । निबल गया । जान किस गली म गुम गया । एक ने पूछा तुम कहा जाओगी ?

—गाव म । मैं इसी गाव की हू । आप मुझे पहचान नहीं रहे हैं कुडू चाबू ? मैं मालती हू—श्रीमत दास की बेटी ।

बुडडा आखें फाडकर कुछ देर तक देखता रहा उसे । फिर कहा, हा

हां। गुना जरूर था कि तू सोट घाई है। देखने में बड़ी सुंदर हो गई है। लेकिन इनकी सुंदर यह नहीं सोचा था। रात। रात में गई वहां थी ?

—घोर कहा ? हाट गई थी। दुकान का सामान पड़ा था। वही से गई थी।

—दुकान ! दुकान करेगी ?

—यही सोचा है। भाखिर करना तो कुछ पड़ना ?

—हा हा। जो बात हो गई उससे भीरो की तरह भर होना तो मुश्किल है। यानी ग़ादी-ब्याह तो । हा उससे दुकान करना अच्छा है। सामान वामान की जरूरत हो तो लेना। अब तो मैंने बहुत बड़ी दुकान कर ली है। तेरा बाप मुझमें ही लेता था। तू भी लेना। एक लेना एक देना।

रात को भवानक मनाटे को चीरकर गीत गूज उठा। कहीं साठ-स्पीकर से गाना बजने लगा।

कहा ठिकाना मन को राधा कहा भुवन में कौन भवन में ?

कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे !

बुझू बोल उठा, सिनेमा टूटा रे। रोकड मिला। क बज रहे हैं ?

—माठ।

—ठीक है। तो।

मालती ने पूछा सिनेमा इस तरफ हुआ है न ?

—हा। वही उस जगह, जहा गवेष्वरी विसजन के समय आतिग-बाजी होती है।

मालती वही से मुड़ी। अब उसके टोले का रास्ता आया। टोल के अंदर से भी कुछ कम दूर नहीं जाना पड़ता है। यह रास्ता कुछ अंधेरा है। फिर भी इस रास्ते पर भी रोशनी है।

गीत बजता ही जा रहा था—

किस नगरी में, किस बस्ती में

किस जगल में, कहा विजन में ?

कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे !

अच्छा गा रहा है । जसी मीठी आवाज है, वैसा ही अच्छा है गीत ।  
 कहा ठिकाना मन की राधा कहा भुवन मे कौन भवन मे ?  
 अपन घर आई । आवाज दी, मीसी ।

चपा ने जवाब दिया, आधो । मैं ठाकुर को शयन करा रही हूँ ।  
 बैठो ।

उसने टोकरी उतार धरी । खूटे से टिककर बैठ गई । वह गीत बज  
 ही रहा था—

देश देश से घूम घूमकर  
 आखिर पहुँचा हाय यहा पर  
 पता नहीं राधा का पाया, पूछा मैंने जन-जन से ।  
 कह सकती है कौन सजनिया कौन स्वजन रे ।

चपा बाहर निकली । कहा हाय, ऐसे बठ गई मीसी । जरा फीकी-  
 सी हसी हसकर वह बोली, गीत सुन रही हूँ ।

—बड़ा अच्छा गाना है, है न ।

—हा । गला भी मीठा है ।

—चाय पियोगी ? बनाऊँ ?

—बनाओ ।—और उसने एक लबी उसास ली ।

बड़ा अच्छा गीत है । सुर, शब्द और स्वर ने मन को कसा तो मीला-  
 गीला सा कर दिया ।

हाय न उसको पाऊँगा क्या  
 खोज भुवन मे इस जीवन मे  
 रो रा भरा चकोर हिए का  
 चाद उगा है कहा गगन मे

मन की इन बाता की थाती  
 लिख लिख कर रखूँ मैं पाती  
 हाय न लिया डाकघर ने ही  
 वापस लाया डाक पियन ने ।



कसा तो हो गया जी । वसत याद आ गया । वह नहीं आया ! चपा  
चाय ले आई । एक गिलास । बहा लो, पियो ।

—लाग्रा दो ।

—जी उदास क्यों है मीसी ?

—पता नहीं ।

**आठ** दिन के बाद ।

—अगले शुक्रवार को मालती खूब अच्छी तरह से दुकान सजाकर हाट में बठी । सब पूछिए तो उसका भाग खुल गया ।

सोमवार की हाट में ही वह पहली बार बँठी थी । पर महज दो दिन में ठीक से सवार नहीं सकी । गनिवार को उसने कुड़ की दुकान से अस्मी रुपये का माल लिया था । वही लेकर सोमवार को बठी थी ।

पहले तो कुड़ पचास रुपये से ज्यादा का उधार नहीं देना चाह रहा था । मगर वह सुनकर मालती ने अस्मी रुपये का लिया । ज्यादा परेशानी उसे नहीं उठानी पड़ी इसके लिए । आखिर को तो कुड़ आप ही काफी का उधार देने को तयार हो गया था । गुरु में पचास से ज्यादा का राजी नहीं था ?

मालती वाली, पचास रुपये में माल ही कितना होगा कहिए ! कितने भ्रदद ? और उतने से मुनाफा ही क्या होगा ?

कुड़ एक ही घाघ आस्मी । बोला उसका मैं क्या करूँ कहा ।

—आपलोग ही ना बहेंगे तो मैं क्या करूँगी ?

—शादी-ब्याह करके घर गिरस्ती बसा । दुकान करना क्या औरत का काम है ?

मालती रज नहीं हुई। वहाँ औरतें आजकल सब कुछ करती हैं।  
हाकिमगिरी भी—और वह हमी थी।

—तो तू वही कर जाकर।

—लिखना-पढ़ना ही जो कम जानती हूँ। जानती हाती ता करती।  
और गादी ? कौन करगा मुझसे ?

बुड़ू बोला हा सो ता है ! मगर तू मरा रुपया न लौटाए तो मैं क्या  
करूंगा ? किस चीज से धसूल करूंगा। तरा बाप ता मुकदम मे ही सब  
उडा गया है। पर के सिवाय तो कुछ है नहीं।

—मैं तो हूँ। मैं ता नहीं भागी जा रही हूँ।

—भाग ही जाए तो कौन पकड़गा ? जा इनबिलाय फिनकिलाव  
करती है ! तिस पर जा रूप हुआ है ! तवाजे म कही घर पर गया तो  
हमिया लकर दौडगी। और फिर वह बमत हैं। नेता बाप रे !

मालती बोली—खर। चलनी हूँ।

—जाएमी ?

—और नहीं तो क्या करूँ। पचास रुपये के माल से क्या होगा ?  
छुड़ूदर मारकर हाथ धिनान से क्या लाभ ?

—खडी रह खडी।

—खनी रहू ?

—नहीं। बठ। एक काम कर तो उधार दूँ मैं।

—कौन सा काम कहिए ?

—मनिहारी के साथ साथ अगर चाय पकौडी सिगरेट पान की भी  
दुकान कर सके तो मैं काफी रुपया का मान उधार दूँगा।

मातनी अनाक हो गई थी। यह बुड़ूडा कहता क्या है ? मतलब क्या  
है ? ऊ बम्बयन देस कसे रहा है, नसे निगल रहा है ! बटी सुगीता जो  
जेल म कहती थी—नजर स निगलना। सभी—सभी—सभी मद। उनकी  
निगाह दलते ही समझ जायागी।

बुड़ू ने कहा मुनो बन् श्रीमनी है न वह पहले मेरी ही दुकान से

माल लेती थी। समझ गई ? सखी बन गई थी मेरी। दुकान अब जम गई। पक्के का घर बना लिया। गल्लर हो गया। अब माल सविमा से खाती है। वहा मरी निकायत कर भाई है, मैं गला काटता हू। यहा भी लोग स कहती है। श्रीरत की दुकान—लोग भीड लगाते हैं। तू भी स्त्री है देखन म सुन्दर है जवान है—प्रगर तू चाय-नाश्न की दुकान कर ले, तो दालान पीट देगी देख लना। सौतली मा है ही। वह बना-बनू दगी। दो एक नौडा की रख लेना। करेगी ?

मालती अवाक ही देखती रही कुडू की तरफ। ठीक वह समझ नहीं सकी कि बुडडा का गुम्मा उस गला काटन वाला कहन की वजह सं है या इसलिए कि श्रीमती ने सखीवाला नाता तोड लिया ? बुडू के मनचले हाने की कभी गुहरत थी। गराव पीता था, मेल म मनिहारी दुकान ले जाता था। उसकी बदीलत इलाक भरम मीमी थी, फूया थी दादी थी मा थी—और यह सखी भी थी। बहूतरी थी।

कुडू ने कहा, बोल। नहीं कर मकेगी ? एसा चटकदार चहरा है तरा।

मालती फिर करके हम पत्नी, सखी का नाता भी जोडना होगा क्या ?

कुडू ने तेज निगाह स उसकी तरफ ताककर कहा तू र छोरी, खूब कर सकेगी। मगर सुन तरा वाप मुझे चाचा कहता था। नाते में तू मरी पाती हुई। वह नाता ही जाडे तो कोई दाप नहीं है। मगर खर। वे दिन लद गए। उम्र सत्तर पार कर गई। इम माल कितती है वह बोलना नहीं चाहिए। अगने साल तिहत्तर की होगी। छोड उमे।

—डर लग रहा है ?

—तू बटी शतान है र छारी। अरे नहीं-नहीं, कुडू को इसका डर नहीं है। कुडू मक्खीचूम यवसायी है। समझी ? वह पानी म उतरा है कीचट कभी नहीं गगाएगा। तू सा सब नहीं समझेगी। है तो बप्पण की बटी मगर यह मक्खी बक्खीवाना मम तू नहीं जानती। और

इसमे तेरा भी बरा दाप बट रग हा मूग गया ।

—निगताइए न मुझ ?

—और : परा मेरी दुखा हो भे । हाट की घूब तरे बरग पर  
मगावर पाग मूग को तरत हाटपुन का मागा कर मुगा । तो घात्र  
इगा हा भे जा घसगा रगव का मान । विक जाभे परवेमे दे देना ।  
ओ माग वष जाण, मग ति भव नहीं विकग मोग दा ।

गायार को बट गिज मतिारी मकर हा बँठी था । भीट हुई  
था । बागा भाइ । माती बँठी भी लूब वा टन कर थी । सत्रना  
सवरता बट जन त मीन घाई थी । बरतमपुर क जाता अतगाने म  
शो क करीय तारी बँठा रहती थी । मती घोर पड़ी निगो उम कम  
भी तो घाट-गस होंगी । बई बे-याएँ भी थी । उम मे एव थी नीहार  
हीने । पड़ी तिगी । किगी बारवारी दफार म काम करती थी । टाइप  
करती थी । उस दफार के किमी माहक न उसे बहुत रुपय देकर जाने  
क्या सब बागज गायब करामा था । इसकी बत्रह स नीहार-दा को  
दफार क मासिब क घटे स प्रेम करना पडा था । मासिब के घटे ने  
गादी नहीं था था । उसक घर जाकर उस दाराव के मग म पूर करके  
यग स बागज तिवाल लिया था—बागज क साथ रुपये घोर हीरे की  
कीमती घगूठी भी थी । वह भी ले ली था । सोम नहीं सभाल सची ।  
उसी हीरे की घगूठी स घासिर वह पकड़ी गई । ढाई सास की सजा  
हुई । जन म वह ऐसी सजती सवरती थी कि सब कोई उसकी नकल करती  
थी । नीहार-दी वाली थी । सची । उसके तिगार मे सबसे बहार थी बालो  
की सवार की । बाला मे वह तेल नहीं लगाती थी । रुते बाल फून उठते  
घोर उसने चहरे को घरे रहते । हाथ से दबा-दबाकर उनम सहरे बनाती  
थी । नीहार दी जसी कुछ स्त्रिया ऊचे बलास की थी । फस्ट  
बलास मेकेंड बलास की कनी । तीसरे दर्जे की कदियो से पहले मिलती  
ही न थी । लेकिन कुछ ही दिनों मे वह सभी भी घाने-जाने लगी ।

हसती-गाती । नीहार दी नौ नाचती तक थी । मालती नीहार-दी से पढ़ती थी । उसने मालती को कुछ पढ़ाया था । उसके नाम से वह प्रेम के उप-यास मगवाया करती थी । वह पढ़ती बाकी सब सुनती । अतिम दिनों म नीहार-दी ही उसकी गुरु थी । उससे मालती ने बहुत कुछ सीखा ।

उसी नीहार-दी से सीखे हुए कायदे से उसने सखे बालों को पीठ पर बिखेर दिया था और दुकान में बठी थी । भीड़ लग गई थी । ज्यादातर बानू छाकरे । परंतु एक सिगरेट के सिवा उह वहा खरीदने लायक कुछ भी नहीं मिला । दो-एक ने बच्चा के नाम पर कुछ गोलिया और पेंसिल खरीदीं । स्कूल के छोरे भी आए थे । स्कूल की लड़किया भी । लड़कियो न बल्कि कुमकुम काटा फीता, बाल की क्लिप कुछ खरीदी थी । एक बाबू छोकरे ने तो साफ ही कहा, अजी, तुम्हारी दुकान में खरीदू क्या ?

बहुत पीछे से कोई बोल उठा दुकानवाली को ही खरीदिए न ।

—कौन है रे उल्लू ! बेहूदा ।—बोलनेवाला बोला ।

मालती बिगड़ी नहीं । हसकर बोली हाट की बात को क्या लेना बाबूजी, जाने हीजिए ।

और कोई बोल पडा भुवनपुर की हाट है भैया ।

मन की विधा लिए जाओगे

दुख के बदले सुख पाओगे ।

मालती ने हसकर कहा, जय, बाबा भुवनेश्वर की जय !

और सबके मव हम पड़े थे । मले आदमी का चेहरा और भावें तमतमा आई थीं । वे बोले बडे अभद्र हैं सब ।

मालती बोली, आप नाराज क्या हो रहे हैं बाबूजी यह इस हाट की पुरानी बोली है ।

मोलो ता मन भी बिकता है,

बडवे का भीठा मिलता है ।

—समा-सा पच है। सर। कुछ सरीदिए न बाबू, जो भी चाहें।  
 घाप से कुछ मुनाफा बमा लू। घर जाकर जोड़ूगी-जाड़ूगी, घापको घा-  
 वरूगी।

धरनीदास भवाङ्क हावर उसकी भोर ताकत हुए उसकी बोली मुन  
 रहा था। उम दिन जिस सडकी को उसने देखा था वह सडकी तो वह  
 नहीं है। यह तो भोर ही कोई है। इस साज नहीं, धरम नहीं—  
 जरा भी नहीं। क्या वह इस ? एकबारगी—काई घा- नहीं सूभा।  
 हां मिल गया। खोपनाक है यह। यह सब कुछ कर सकती है।

उन भले भ्रादमी ने सारी गोतिया खरीद ली भोर जूटे म सांसन  
 के प्लास्टिक के फूल सरीदे। सपाल स्त्रिया को दंगे। गोतिया दंगे  
 रास्ते के सडको को।

उस दिन कुल मिलाकर दस रुपये बिके थे, कुछ आने कम। हाट  
 टूटने के वकत धरनीदास ने कहा तुम कामयाब होगी बिटिया।

मालती ने हसकर कहा, देखू चाचा। लेकिन मनिहारी नहीं  
 चलेगी। बस्ती-बस्ती धूम धूमकर फेरी किए बिना लाभ नहीं होगा।  
 भोर ही कुछ करूंगी। तुम्हारी दुकान म बैठने से नहीं हो सकेगा।

—तो क्या करोगी ?

—देखती हू।

सब कुछ समेट कर वह उठ रही थी कि डगडुगी बज उठी। एक  
 लान भडा उडाकर तीन चार छोकरे घाए। मुह म धोगा लगाकर  
 चित्लाया—सभा होगी। चीजा की कीमत बहद बढ गई है। उसके  
 विरोध मे कल यही हाट मे सभा होगी। इसका जोर शोर विरोध  
 कसे बिया जाए इसका उपाय सोचा जाएगा। कम्युनिस्ट नेता बिमल  
 बोस का भाषण होगा। आपलोग काफी तादाद म इकटठ हा।

मालती एक बार तो मानो चींक उठी। सभा होगी। वह नहीं  
 घाएगा ? उमने तो काप्रेस को छोड दिया है। वह ?

वह तुरत बोली मैं अभी भाई चाचा। भोर वह टूटी हाट की

भीड़ में खो गई। हाट से बाहर वावायान से दाहिने वह उसी जगल में गई। घने जगल के बीच वह उसी पेड़ के पास जाकर खड़ी हुई। अंधेरे में पता नहीं चला। टटालकर उसने जानना चाहा कि डालों में पत्तों के साथ काटे हैं या नहीं। अगर काटे हागे तो कूच की लतर हागी। एक छोटे से पीपल पर कूच की लतर चढ गई थी। उसी में उसने साड़ी की कौर फाडकर डेला बाधा था। काटा तो हाथ में लगा था पर यह अदाज नहीं लग सका कि डेला है या नहीं। टाच लाई होती तो ठीक था।

वहा से लौटी। गधेश्वरो तला हाते हुए बुडू के महा जाकर कह आई मैं अब वही दुकान करूंगी दादाजी।

—दादाजी कहा ? छल से या सच-सच ?

—जीजिए, छल क्या करने लगी ?

—क्या विश्वास। बूढा हो जाने पर छोरिया छल से ठगना चालती है। रात का वक्त है ठीक दिखाई नहीं देना। मुह देखकर ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहा हूँ न।

मालती ने बिजली की पूरी रागनी में मुह ले जाकर कहा देखिए।

उह तू आसान लडकी नहीं है। रात की रोशनी में काली गोरी दिखती है। तिसपर बूढे की नजर में युवती ! दादाजी बनूगा या नहीं, यह आज नहीं कल बताऊंगा। नहीं कल नहीं दस दिन के बाद। मगर कल आना। तरे रूप से बेहाल नहीं हुआ हूँ मैं तेरी माया से गल नहीं गया हूँ। मेरा गुस्सा उस श्रीमती पर है समझ गई ? वह विधवा हुई। चटक थी जुवान थी। दुःख नहीं था। मरे साथ मौन मजाक करती थी। उन समय उमर थी और हमी मजाक में पसंद करता था। लोग उस बुरी कहते थे। मेरे पास आकर बोली समधीनी अब ना नहीं चलना। मैं उस समधिनि कहता था वह मुझे समधी कहती थी। मैंने कहा अच्छी-सी दुकान कर ला। मूल पूजी मैं देना हूँ—उधार सीदा। और वही मुझे बुडडा कहती है। मैं गना काटन वाला महाजन हूँ। मैं एक जवान औरत की



तलाश म था—उडिया नाक-नकन हा—दुकान पर बठे तो बर की भी टूटे—उसस भपिन चाहत जुटे । तेरे दाता है । घागी-वागी तरी होगी नहीं । पाई करेगा नही । आगिर का कुपय निपय म जाणगी उसस अच्छा है कि दुकान बर ल । यत्र घाना ।

मालती को य बातें अच्छा लगी थी । खुडन समाना है—बात भी दो टूक बरता है । वह बोली टोर है । बल घाऊगी ।

—क्या क्या चाहिए फेहरिस्त बना लाना ।

—मैं भला वह सब जानती हू दाताता । आप ही दाता दीजिएगा ।

—यह ला, जो बात मा घा का जाए ! बठने का बहा, तू गरन जकड लेना चाहती है ।

—बठना भी होगा तो दाए बठूगी दाताजी बाए नहीं ।

—अलबत । खूब कहा ! सर । बल घाना ।

दूसरे दिन सवेर कुडू ने बडाही परात, घाली बलछुल चक्का बलन—सब खरीद दिया । छोटी सी बेंच एव बडी बेंच, उसके साय छोटी सी एक मेज लोहे की एक कुर्मी, दा निपाई भी । छोटी बेंच पर बठकर लोग बडी बच पर खाएगे । मानती कुर्मी पर बठेगी । मेज पर पसेवाला बकस रहेगा । काठ की दो बडी, दो छाटी गठीती । खुद से हाट गया । बडई को बुला ले गया । फेम बननाए और घर स टिन मगवाकर दो दिन में घर बनवा दिया । पक्ष पर इटें बिछवा दी—जोडो पर सीमट करवाया और कहा ले, कम्पलीट हो गया ।

पहने टिन श्रीमती जरा हक्की बक्की सी हो गई थी । खास बरके खुत कुडू को देखकर । उसके बाद भाग गई । आग बडकर पूछा यह सब क्या हो रहा है ?

यह मंगलवार के दिन दस बज की बात है । कुडू न कहा बाध का तमाशा होगा ।

—बाध का तमाशा ?—अवाक हो गई श्रीमती ।

—हा-हा ! बाध नहीं बाधिन का । मालती की दुकान होगी । उसने

मेरी जमीन फिराण पर ली है। दुकान खालेगी।

—मनिहारी ?

—चाय, वाटलेट, सिंघाडा, बचौरी, चाय-पान, सिगरेट। उसके साथ कुछ मनिहारी। बिम्कुट। डबलरोटी।

—हू। तो—। श्रीमती चुप हो गई। अपनी दुकान बंद गई और एक अनाथ भ्रातृमी को घायल करने के लिए बाता के तीखे-तीखे तीर छोड़ने लगी। कैसे तो कहत है, इल्लत धोए नहीं धुलती। यह बुढ़ापा। साल भर इन्ना बुढ़े की बीबी मरी है। घर में अघबूढ़ा बेटा, बहू नाती पाते। उसे यह अद्वारह साल की बच्ची ! छि छि। लाज के घाट पर मुह नहीं धोया। जमराज के दरवार में जवाब क्या दोगे ?

बुढ़ नाराज नहीं हुआ। खिक् खिक् खिक् खिक् हसने लगा।

जरा देर बाद वहां से जाते समय मालती से कहा, मनमाफिक काम करा ले। खबरदार, मिजाज मत खराब करना। खबरदार।

कुश् को अपना रिक्ता है। उसी पर चढ़कर वह चला गया। मालती अब उस और गश्, जहां कम उमर के पीपनी पर कूच की लतर चढ़ी है। पूरे पैर में फट फला में दाने जस लाल लाल कूच वहां हाल के बंधे कुछ ढेले भूल रह थे पुराने कहा गए ? वह पीछे की तरफ से जाकर सड़ी हुई। अब दिखाई दिया, हा, ह तो पुराने ढेले। लटक रहे हैं। उसका बाला ? उसका बाला कहा है लबा-सा था। चुनकर लाई थी वहां बीच में थोड़ा दबा-भा। गिर न जाए जिसमें। कहा है 'रस्ती भी मजबूत थी। अपनी महीन साड़ी की कोर फाड़कर बाधा था।

डेला गिर जान का मतलब है कामना पूरी नहीं होगी। मनोकामना पूरी करने की इच्छा नहीं है बाबा को। डेला नहीं गिरे तो जानिए मनो कामना पूरी होगी। पूरी होने पर जाकर ढेले को अपने हाथ से खोल देना पड़ता है।

डेला भूल रहा था।

खुशी खुशी लौट आई। रास्त में बाबा को उस रोज प्रणाम किया।

बाबा भुवनेश्वर, इच्छा पूरी करो। मन में उमन बाबापान का यह पुराना गीत गूज उठा था।

श्रीमती जुवान क तीर तब तक भी पलानी ही खनी जा रही थी। अब उतापर। रूर कहती है श्रीमती। गूरा। उमके तीर मनगतर घाग्मी को बघते ह। घाग्मी पूरव को पडा रन्ता है तो य दक्खिन का मुन किए राडी होनी है घोर पदिचम कोन को तीर छोडनी है। तीर घूमनर पदिचम स उत्तर उत्तर स पूरव म घाग्मी का घायल करता है। मनत्र म विघता है। सान भडा बाबा न बल सभा करन का एलान किया है। व श्रीमती स अच्छा नही बाल सकेंग।

खूब कहा नवयुवती नई जवानी। अगर यही भुनाकर गाना था तो भुवनपुर की हाट म पकौडी लिए क्या बठी? घरे बाबा गहर म गा बाजार म जा। यहा एक रमिया मुड ढा है भी ता कवम्न गला काटन बाला महाकजूम है। वहा कौडी-कौडी पाएगी।

गुनवार की हाट क दिन सवेरे उसन दुखान खोनी। घामके पल्लव नगाए। पानी भरे दो घट रखे। कुइ वानू न दा नारियल भी नत्र दिए थे। बाबापान के एक पडे को बुलनाकर सबसे पहले उमन उसी को चाय पिलाई। चाय का पहना गाहक खुद कुइ बना।

चपा मौसी की राय नही थी। वह बोली थी, मालती तुम यह क्या कर रही हो मैं समझ नही रही हू। अच्छा नही लग रहा है मुझे। कुइ को लेकर जो अफजाह उट रही हैं अच्छी नही लगती हैं मौसी।

—कसी अपवाह?—कौतुक से पूछा उसन। उसका अनुमान वह कर सकती है। उधार दन के बहाने कुइ आखिर उसीको तरीद बढेगा।

चपा वाली समझती नही हो? श्रीमती के मुह स सुना नही?

—सुना है। दख तो लें खेल खेलकर।

—नही-नही। यह अच्छा नही है। उसके साथ खेलना ठीक नही।

—ठीक है। मैं खेल सूगी। मैं खूनी औरत हू।

—माला तुम्हें हाथ जोड़ती हूँ मैं ।

—ठीक है । तुम मत जाना । तुम जो कर रही हो, वही करो । इसमें मैं तुमको नहीं घसीटूंगी । मगर मैं यह मोका हाथ से नहीं जान दूंगी । आखिर मैं करूँ क्या, कह सकती हो ? हा । है । श्रीमती ने कहा था, बाजार में बैठकर रूप घोर जवानी भुनाकर खाओ । कहो, वही करूँ ?

—मेहनत मजरी करके खा सकती हो मौसी । कल ही तो दे कह रहा था, तुम्हारी सखी गोपा का बाप । वह रहा था कुछ सीखती तो ठीक था । नस का काम सिलाई का काम । दरकार होती तो सिलाई की मशीन खरीदने के रुपये मिल जाते । यह दुकान

—उहूँ मौसी, मुझपर इसका नगा सवार हो गया है । तुमसे न बने

—यह मुझसे बनने न बनने की बात नहीं है ।

—तो फिर क्या ? वैष्णव की बच्ची हूँ भोल मागकर न खाऊँ तो अघरम होगा ?

—वह भी नहीं मौसी ।

—फिर ?

—ठीक ठीक समझा नहीं पा रही हूँ । तुम यही सब करोगी—घर-गिरस्ती नहीं करोगी ?

—घर गिरस्ती ? माने ब्याह ? सो नहीं जानती ।

—उसकी उम्मीद पर तुम न रहो ।

—माना नहीं रहूंगी ।

—फिर ?

—गाव में लड़कियाँ का स्कूल खुला है मौसी । दीदियो का देखा है ? उनमें-से कितना न गान्दी की है ?

—वह मैं सोचती हूँ । कोई किनारा नहीं मिलता ।

—मेरा किनारा तुम खोजो भी मत ।

—वह सब तो अपनी विद्या के बूते पर रहती हैं ।

मुझ की बात छीनकर मालती ने कहा मैं यही लेकर, रुपया लेकर

रूगी । तुम बनो मत । यह बताओ कि काम छोड़कर दुकान का काम करोगी कि मैं घादमी बनूँ ?

—तुम्हारा ही काम बनगी मोगी । तुम्हें बेटी की तरह छोटी बहन की तरह पाना है । मैं जसा प्यार कर बठी हूँ । तुम्हारा ही काम बनगी ।

हाट तीसरे पहर लगती है । उनसागा ने दो पहर से ही मामान बनाना शुरू कर दिया । पहले गिना व निग कट्टू ने ऐसे एक घादमी को बेज दिया था जो गिपाडा कगौरी बनाना जानता है, पकीनी बनाना चाय चाटलेट बनाना जानता है ।

श्रीमती न भी घपनी दुकान का अच्छा तरह से मज्जाया । रगीन बागड की कुछ बलें लाकर लगा दी । एक काम और किया, उस बाने लगड की बेटी चुनरिया को साफ बपन-ससत पहनाकर दुकान में बहाल कर लिया ।

चुनरिया के बाप के गल में एक माटी वाली डोरी-सा जनेऊ सदा से है । वह बहता है मैं यराम्ह्ट हूँ । उसका माटी-सा और चुनरिया का ताव सा रग उससे इम बपन का गवाह ही जाता है । यह ब्राह्मण है कि क्या है यह बात उसमें कभी किसीने नहीं पूछी । श्रीमती ने आज उसका उपयोग किया । चुनरिया वन टनकर रात को रास्ता पर घूमा करती है बाबाथान के बड बन पीपल के जगल में घूमती है यह भी सभी जानते हैं । लेकिन भुवनपुर की हाट में यह बात कोई उठाएगा ही नहीं । चुनरिया दुकान में चाय देगी बतन धोएगी । लोगो से पूछेगी और क्या लाए बाबूजी ? मुसकराएगी । लेकिन श्रीमती की भूल है । चुनरिया भुवनपुर की हाट में घूल की चीज है । उसपर पढकर भी लोगो की नजर नहीं पडती । मालती का मोह उससे कही ज्यादा है ।

टिकली उसके पास आई थी । कहा था तुम मुझे रख लो ।

मालती ने हसकर कहा तू करेगी क्या ? तेरे हाथ का ता आई खाएगा नहीं ।

टिकली बोली, नहीं खाएगा ? तो मैं माहक बुलाऊंगी । इस दुकान

मे आओ । जूठे बत्तन धोऊगी । लोग आएंगे—कहकर वह हसी ।

मालती ने उसे रख लिया ।

भुवनपुर की हाट । इस हाट में सब कुछ बिक जाता है सब चल जाता है ।

कुर्सी पर बठी हाट की आर देख रही थी मालती । मन में उसके सचमुच ही एक नशा था । शायद हाँ कि काम का नशा हो । उसके साथ साथ भविष्य का भी । अच्छा लग रहा था । सवेर चाय, सिघाडा, प्रिस्कुट, सिगरेट की अच्छी बिक्री हुई । लोग सवेरे से ही हैं । ये सब हाट के लोग हैं ग्राहक नहीं । जो लोग बैलगाडियों स यहाँ माल लात हैं वे लोग । रेलगाडी स उतरकर जो लोग माटिया मजरा पर, किराए की बलगाडी पर माल लेकर आते हैं वे लोग । कुछ बसे खरीदार भी आए हैं । उन्हें हाट की सौदा-पाती के सिवाय भी काम है । किसीको थाने में किसीको रजिस्ट्री आफिस में किसीको प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के दफ्तर में, किसीको स्कूल, लड़कियों के स्कूल में । लड़किया होस्टेल में रहती है, उनसे मुलाकात करनी है । कोई गाव स बोर्डिंग में चावल लाकर देता है । सवेरे जो आए, जो हाट के सामने से गुजरे, व सभी टिन की छोनी-वाली इस नई दुकान और दुकानदारिन को देखकर ठिठक गए । बिलकुल शहरी औरत ! उन सबने वहाँ जाकर चाय पी । सिगरेट पी । कुडू बाबू हिंसाबी आदमी हैं । सिगरेट की बीस डिविया दी है । वह भी ज्यादातर दामी सिगरेट । कह दिया देखो सस्ता माल मत रखना । तेरी दुकान सस्ती नहीं है । टिकली को तू रख रही है रख, मगर उसे सजाना गुनाना मत । वह दाई है, दाई की तरह रहे । हा ।

सवेरे चालीस प्याला चाय बिकी । सिगरेट पूरा एक टिन । पचास सिगरेट । डिविया भी चार । डिविया के अलावे कुडू ने सिगरेट की कई टिन भी दी थी । टिन से इज्जत बढ़ती है और खुनी-खुदरी सिगरेट की बिक्री भी होती है । कुडू ने सब समझा दिया था ।

भालूवालो ने गाडी से बोरे उतारे । भालू की डेरी लगाने लगे ।

तब्राखुवाला पहुँच गया । कटवा के फलवाले टब क बक्सा पर फल सजाने लगे । फीता वार का फेरीवाला आ गया । सब पेड तन बठकर बीडी फूक रहे है । उसकी दुकान की तरफ ताक रहें हैं । टिकली कभी कभी हाथ के इशारे स उह बुला रही है । हस रहा है । यह सर पर बोभा लिए आठ दस जने आए । ये बगन की यस्ती के नामी येतिहर है । भुवन पुर की हाट म उही की बगन मूली क लिए बगन मूली का नाम है ।

चपा न कहः वह देखो मौसी आगुल के खत का बगन आ गया । बगना बनाने के लिए ले लो । लबा, गाल बगन । लबी फाकें और गोल चन्त —दोना घच्छे रहगे ।

मौसी पर भी नशा चढ गया है । पहले आकर चपचाप काम कर रही थी । कभी-कभी हाथ रोककर सोचन लगती थी । अब वह आच्छनता जाती रही है । टिकली स कह रही है । हुबम दे रही है । काम कर रही है । बाली, जा । चुनकर ले आ ।

वह आ गइ चटाईवालिया । मुसलमान औरतें राजूर की चटाई लिए वह आ रही हैं । वह आ गइ मोडा टोकरी ।

मौसी रुपया लेकर चली जा रही थी । मालती ने कहा, सुनो ।

—क्या ?

—तोती-तोती मिच लाना । और

—कहो ।

—रगाई हुई खजूर की पर्तों की दो चटाइया, एक मोडा ।

खर यह हाट उठत समय लेने स भी चल जाएगा । वह आ रहा है एक मनिहारी वाला । पुराना आदमी है, उसके बाप के जमाने का । यह भी मछनी मारने का सरजाम बचता था । अभी भी बचता है । वह रहा धरनी चाचा । तयार कपडे वाला । वह आ रहा है । वह रह कितार वाल । तसधीर बाता । उसके पास स औरत की अच्छी तसधीर वाले कुछ कलेंडर लेन होंग । टिन की दीवाला पर लगा दिए जाएग । एक दल और आ रहा है । दो वन गाडिया —बददू-काहटे सद हैं । ये लोग मयूराभी के

किनारे के हैं। वह रही बदगाभी की गाड़ी। अब तो हुड़-हुड़ करके चले आ रहे हैं। घुसत ही ठिठककर खड़े हो जाते हैं—हाट की माटी को उगली से छूकर कपाल से लगाने के बाद हाट के अंदर दाखिल होत हैं। दौड़ते हुए आ रहे हैं। अच्छी जगह देख लें। वे सबक सब मुसल मान हैं। अच्छे अच्छे खतिहर। व्यापार म भी भले व्यापारी। उनकी लाई हुई चीजें कभी लौटती नहीं। या प्रवाद तो है पर भुवनपुर की हाट का वह पहला नियम अब नहीं है कि अनबिका माल मालिक खरीद लेंगे।

साइकिल चढ़े खरीदारों का एक दल आया। साइकिल घाम सभी हाट में आ रहे हैं। लकड़ी की उस दुकान के सामने दरगद के नीचे रखेंगे जूजीर लगाकर ताला बद कर देंगे। व लोग इधर ताकत लगे। मालती को देखत लगे। मालती के हाथों पर ज़रा हसी काप गई। मन की जमीन पर घाम सरीखा सरस कौतुक उग आया। वह उठ खड़ी हुई। माथे का भटका देकर बिलर वालों को सामने लाकर हाथ से ठीक कर लिया। कंधे के कपड़े को ठीक करके फिर से बठ गई।

पीछे से टिकली ने कहा कुछ लाग आ रहे हैं।

—दख ले चाय का पानी ठीक से उबल रहा है या नहीं।

कोयल के चूल्हे पर अनुमुनियम की एक बड़ी-सी देगची में चाय का पानी गरम हो रहा था। टिकली ने कहा, टगबग टगबग कर रहा है।

मालती ने रसोइए से पूछा ठाकुर कड़ाही चढाइएगा कि जो बना बनाया है, वही देंगे ?

ठाकुर ने कहा वही ठीक है। अभी अभी तो कड़ाही उतारी है।

आठ जन एक ही साथ आकर दुकान के सामने खड़े हो गए। मालती ने कहा आइए।

वे सब बेंच पर बठ गए। जगह की किल्लत होने लगी। एक आदमी को बठन में कठिनाई होने लगी।

मालती ने अपनी कुर्सी बढ़ा दी बठीए।

जो खड़ा था, उस आदमी ने कहा नहीं दुकान खोली ?



—जी हां । आप ही लोग ब भराग मोन सी ।

छात्र गल गया । बोला बेगन । हमसोग अभी गटे गल महा ता बतिया रह ये । पुरानीवासी दुकान भीमनी की है । यही गनी है । यहीं चुबि दूसरी बार्द दुकान थी गही लाचारी यहीं गायब बन्या था । मच्छा दुकान सोली आपन । ताफ गुयरी है ।

मानती को हमी घा रही थी । हमी को डन करके हा बागी—क्या मगवाए ?

—पहल धाय तो दीजिए ।

—न पहले एक एक सिगरेट दीजिए । बाह बसता है मोहकनर है । दीजिए एक एक बप्पटन दीजिए ।

—घोर नाते बा ? आप है । निलवाए ?

—आप ? बाह ! उस दुकान म बम बगनी घोर बगनी । दीजिए-दीजिए !

टिकली फिर फिर करके हस रही थी । एक ग बहा घर यह महा क्या कर रही है ?

—वह जूठे बसन घाती है ।

—सान का सामान ता नहीं छूती है न !

—नहीं नहीं । गरीब बेचारी

—गरीब ?

—क्या जी ? मैं कोई भमीर हू ? उह । टिकली बाज उठी । उनके बाद हठात् श्रुद्ध स्वर म बोल उठी उ , मैं छोटी गत की हू । टिकली छोटी जात की

—ऐ चुप ! अभी बाहर जाकर बठ । जा ।

टिकली बाहर जाकर बठी ।

कि इतने म हाट के गोरगुल को दबाकर घामाफान बज उठा —

भुवन हाट मे सौदा लाया पूजी सारी साई

तेल नून की बाघ पोटली रतन गवा कर रोई ।

सखि री, दूढ़े मिले न अपना मन !

कहा बज रहा है ? जिनासा भरी निगाह उठाकर मालती देखने लगी, कहा बज रहा है ? श्रीमती की दुबान म ? टिकली ने उसके मुह की तरफ ताककर उगली से दिखा दिया—हा ! वही बज रहा है ।

ओ ! श्रीमती ग्रामोफोन बजाकर गाटक बुसा रही है । वह हसी ।

जो चाहे जितना बजा लो श्रीमती, पूजी तुम्हारी गायब हो गई है सखा ! लाख कहे लो लोगो को माया नही होने की ।

जाकर हाट घाट पर बठी जल म मारी डुबकी

मोती मिला भ्रवाभक उससे खिली जवानी डुबकी

फिर जा डूबी हाय, सो गया रूप और यौवन

। मेरा गोया रे मूलधन !

एक कोई बोल उठा वही ! मन की राधा वाला । नवीन बाऊल हूँ ।

—मन की राधा ?

—बगक !

—उसके ता एक ही मन की राधा का रेकड जानता हूँ ।

—यह भी है । बाजी रक्गो । ज्यादा नहीं । एक डिब्बी सिगरेट ।

उपर गाहक आकर सडे हैं । खूब हैं य छोकरे ! उठने का नाम नही । बातें भी उसकी तरफ ताक-ताककर कर रहे हैं । मालती हसी । अच्छा लगता है । बुरा नही लगता । लकिन अच्छा लगने से तो नही चलेगा ! उसने टिकली स कहा, बठी क्या कर रही है ? गाना सुनन स ही चलेगा ? बतन सब धो ल । नये गाहक आए हैं । सुना ?

टिकली बेंच के सामन जाकर खडी हुई । मालती ने नये गाहको से कहा जो, बम । इन लोगो का हो गया । जरा देर रुकिए । उठ जाए ये लोग ।

लाचार व लाग उठ गए । नये लोग बठे । टिकली ने लत्ते से बेंच को पाछ दिया । उहीने आपस मे एक-दूसरे का मुह देखा । मालती

समझ गई। बोली, ठहरिए, मैं पोछ दू जरा। वह आगे बढ़ी। गाहको मे से एक बोल उठा, रहने दीजिए, हो गया।

—ठीक है तो ? नहीं तो मैं पोछ दू ठीक से।

एक नै कहा हा हा। शहर मे चाय देनेवालो की जात कौन देखता है ? और जात तो गई। साहबो ने जात मारना गुरू किया था, देग स्वाधीन हुआ और खत्म। लो बठी।

—क्या मगवाऊ ? खाने की चीज टिकली नहीं छूती है। सामान ठाकुर तयार करता है। परोसते हम हैं।

बघा बगन कूट रही थी। बोली हम लोग सब कुछ बड़ी शुद्धता से बनाते हैं। और फिर वैष्णव, ब्राह्मणा के दास। हमारे हाथ का खाने मे क्या दोष ? हम देते हैं।

मालती प्लेट में चाँप लाने लगी। बगनी तली जा रही थी। उन लोगो ने बगनी मागी।

उधर हाट मे शोरगुल मचा। चावल धान के व्यापारी ब्राह्मण जगनाथ बाबू दो आदमी के बाल पकडकर खीच रहा था। खीचकर हाट से बाहर ले जा रहा था। लोग बाग उसी तरफ ताकने लगे। कुछ लोग सोदा पाती करना छोडकर उमी तरफ जाने लगे।

क्या हो गया ? मालती ताकने लगी। गाहक भी उधर को ताकते हुए खान लगे। टिकली दौडकर चली गई।

मालती ने जोर से पुकारकर कहा जल्दी आना टिकली। दुकान के अंदर से एक गाहक ने हाट के एक जने से पूछा—ऐ सुरंदर क्या हुआ जी ?

सुरेंद्र दुकान के सामने से ही जा रहा था। वह दात निपोरकर हसते हुए बोला—पिक्पाकेट। पाकिटमार। जगनाथ बाबू न रगे हाथा पकड लिया।

—भार, भार साला को। यहा का है ?

—नही, पछाही है। साल, धूमत रहने हैं तमाम। भाज ही सबदे

गाड़ी से उतरे हैं गायद । फीता कारवाले ने बताया, परसा इह सधिया मे देखा । सधिया की हाट में उस दिन एक बेचारे के अस्सी रुपये निकल गए । यही सारे थे ।

मालती चुप बैठी रही । उसे जेलखाने की बात याद आने लगी । अघेड भुवन और छोकरी सध्या जेब काटा के कसूर म जेल आई थी । वे बताती थी । जेल में कोई कुछ छिपाता नहीं है ।

उन दोना और जगनाथ बाबू को घेरकर काफी भीड बटूर गई । अचानक वान के इस ओर डुगडुगी बज उठी । बड़े जोर से बज रही है । बाजीगर की डुगडुगी जसी । गरदन फेरकर मालती ने देखा । बाजीगर ही है । एक भाल लिए आम के नीचे खड़ा है ।

—अरे बाप रे ! जानती हो मालती दी, तीन तरह की पाशाक पहन हुए हैं वे ।

टिकली लौट आई । एक गाहक ने पूछा, तीन तरह की कसी ?

टिकली बोली पाजामा पहने हुए है न ! उसके अदर हाफ-यट और उसके अदर फिर कपडा ।

—क्या मिला ?

—डेश चीज मिली । पुलिस के हवाले करेगा ।

—पुलिस के हवाले कयो बाबा याबा भुवनेश्वर क दरवार म । यहा तो नकद बमूली है । दुख के बदले सुख, मन के बदले मन । चोरी के बदले मार । मार तो पड चुकी । अब फिर पुलिस म कयो ?

—सो जो कह लो । भुवनेश्वर की हाट का वह महातम अभी भी है । उस दिन सूखो घोपाल रो रहा था । बेटी का ब्याह टूट गया । है न ! कल सूखो घोपाल से भेंट हुई । बड़ा यस्त । मैं खेत पर घान की कटनी की निगरानी कर रहा था । पूछा एस हनहनात हुए किघर चले घोपाल ? बड़ी चुस्ती दख रहे हैं । घोपाल भर गाल हमकर बोला— चुस्ती की बात ता है नहीं । बेटी की गादी पक्की हो गई । बाबायान के सिद्धूर स लग्न पतरी तक लिख दी । हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए

बोला, बाबा का महातम भूटा नहीं है घाप । उस रोज हाट गया था । बाबा के सामने बड़ी बिनती थी बाबा लट्ठी के ब्याह के लिए बन रहे परेशान हूँ । दया करो । यहाँ से निकना । देवी दुकान में चटर्जी से मुलाकात हो गई । दे बाबू को बात मालूम थी । वह बीच में पग । वह मुनकर बात पक्की कर दी । चटर्जी का बेटा एक मास्टरनी के पीछे पागल था । उसीसे ब्याह करेगा । चटर्जी ने मुझमें नहीं बनाया किंतु दे से कह बठा । दे ने उसके बेटे का बुलवाया । हाट फटकार कर राजी किया । कहा, चटर्जी आज ही त करलो । समनपत्री लिखी गई । कहा सीधे बाबायान चले जाओ । सिद्धर लगा सना । दे वही पाग जा रहा हूँ । उसकी जमीन के पास एक टुकड़ा घत है धपना । उस बटी के ब्याह के लिए बेचना है । उसी को बचूंगा । इसीलिए जा रहा हूँ ।

—तो फिर खेत का महातम कहां बाबा का महातम क्यों कह रहे हो ?

—क्यों न कह ? बाबा का महातम न होता तो तुम्हारा बाधा हुआ डेला गिर क्यों पडता ? बाबा उस पूरा क्या करे ? पराए घर की विधवा खडकी

—देखो खबरदार । मुह सभालकर बोलो । तुमने मुझे देखा है डेला बाधते ?

—तुमने खुद ही मुझसे कहा है । नहीं कहा है कहां ?

—नहीं ।—धील उठा वह ।

—हा कहा है । अह आदमी भी उतने ही जोर से चिल्लाया ।

यह आदमी उठ पडा । मालती के पास जाकर बोला एक चाप, एक प्याला चाय । कितना ? उसने एक चवनी फेंक दी ।

मालती मन ही मन हस रही थी । खुदरा पसे हाथ में लेकर पूछा सिगरेट दू ?

—नहीं । खुले पसे लेकर वह चला गया । जरा दूर जाकर वह फिर लौट आया । दुकान के सामने होकर बोला तुम ? तुम जो चाय

नात का यहाँ ल आए, वह बात वह पू

इस आदमी ने कहा, वह दा। तुम क्यों, मैं ही कहे देता हू। मैंने कहा, दुकान अच्छी है। दुकानवाली और भी अच्छी है। चलो, खूबसूरत औरत के हाथ की चाय पी आए। क्या जो, मैं कोई बुरी बात नहीं? यह कोई बुरी बात है? तुमन इसका कुछ बुरा माना।

मालती का चेहरा तमतमा उठा। फिर भी वह बाली न-न। यह बात बुरी क्या है? मैं क्यों बुरा मानने लगी?

चपा बाली दुखियारी है बाबूजी। आप ही लोग इसके चाप-चाचा, भाई-बद हैं। आपलोगों को अच्छी लगती है, यह तो सौभाग्य है उसका।

—ठीक है। मैं डेला बाघने नहीं जा रहा

भालूवाला दुकान के सामने आकर खड़ा हुआ—चाय मिलेगी?

आसपान के लाग, खास करके स्त्रिया दुकान में घुम आई—मैया री मया।

—कोई डर नहीं माताजी। भालू कुछ नहीं करता।

—सो हो। तुम उसे हटा लो। और चाय, प्याले में नहीं मिलेगी। तुम्हारे पास काइ बतन है? हमारे पास माटी का चुक्कड़ नहीं है।

—ए हटा भैया, आ वन का भालूवाला। भालू को हटाओ।

चपा बोल उठी मालती, भूती सरकार सा लग रहा है?

हा भूती सरकार ही ता है। पाव के नीचे की ओर के कपड़े को घुटने तक उठाए बदन पर फतुही, काला गुलदुल चेहरा—भूती सरकार आकर दुकान में घुसा।—पहचान रही है रे मालती? तुम्हें पच-चानन में तकलीफ ही रही है! वह वा, देखने में तू खासी ही गई है। रास्ते में देखने से लगता शायद शहरी औरत हो। वाह वाह! मैं यहा था नहीं न, बदवान में था। तरी सखी गोपा की जायदाद में रुभट हूँ गई है। गोपा का चाप मुझे ले गया था। बडा भमेला है। आज यहा आते ही सुना कि तू आई है। आई ही नहीं हाट मारैस्टैरेंट भी आला

है। और गाव में उधल पुथल कर दी है। गोपा भी तो घाई मेरे साथ। वह विधवा हो गई है सुना है न ?

मालती को पता है। ब्याह के कुछ ही दिन बाद विधवा हो गई। चपा ने बताया। वह जानती है। उसने सूब दुख नहीं पाया। खुशी हुई—विधवा होते हुए भी गोपा आज बहू है—उसके घर द्वार ह। चपा ने बताया है अच्छे घर की बहू है वह।

गोपा का जेठ चुनाव में जीता है। विधान-सभा का सदस्य हुआ है। बसंत ने उसे जिताया है। इसी चुनाव में जीतकर वमत का नाम हुआ है। वह लीडर बना है।

जेठ से गोपा के पति की बड़ी अनबन थी। ये बातें उसने सुनी हैं।

मालती ने सरकार की अगवानी की, आइए आइए। चपा ने कहा, सरकार बाबू का एहसान सदा याद रहेगा। जेल में तुमसे मैंने तीन बार भेंट की थी। इन्होंने ही दरखास्त लिख दी थी। तीनों बार।

सरकार ने कहा यह ऐसा कौन-सा विशेष किया।—वह बठा। मालती ने पूछा चाय तो पिएंगे न ?

—नहीं पिऊंगा ? ता फिर दुकान में आया किसलिए ? ला चाय दे। चाप दे। और वह बड़ाही में क्या हो रहा है ? बगनी है ? वह भी चार दे दे।

चाप तोड़कर मुह में डाला। कहा वाह बड़ा अच्छा बना है। रेस्टुरेंट किया, बड़ा अच्छा किया है। तू दुकान पर बढेगी ता खूब बिक्री होगी।

मालती को यह मालूम है।

—अकल आखिर कुडू की है न ! खनीफा यादमी है। उसके साथ कुछ लिखा-पत्ती हुई है ? दिखलाना। वह देख स्कूल के लडको की जमात में रही है। बेशक यही आ रही है। मैं उठता हूँ। ठोगे में थोड़ी-सी बगनी दे दे, घर ले जाऊँ।

चपा ने पूछा, गोपा का क्या हुआ सरकार बाबू ?

—होगा क्या ? थाना पुलिस करके उसे ले आया । मुकदमा दायर हो गया ।

—गोपा आ गई ? मालती ने पूछा ।

—हां । मामला कुछ आसान थोड़े है । उसका जेठ एम० एल० ए० है । कडा आदमी है, बडा आदमी है । मगर मैं भी भूती सरकार हू । अपना बसत लेकिन बसत ही है । खूब किया उसने, खूब । सच पूछो तो गोपा का जेठ जो एम० एल० ए० हुआ है बहुत कुछ उसीके जोर से । रुपया रहने से ही तो वोट नहीं मिलता । वह फिर बताऊंगा । गाहक आया है ।

सच ही गाहक आए । लडके । दस बारह जने । मालती लेकिन चुप खडी रही । बसत के बारे में पूछ नहीं पाई । बसत ? कहा है वह ? खूब किया है । कहा आया वह ? उसे देखने नहीं आया ? गाहक लोग बात कर रहे थे । मालती को उसका ख्याल नहीं । वह हाट की ओर ताक रही थी । अनमनी हा गई थी । गोपा ! बसत ! बसत गोपा ! कसा तो ! धिसे वाच के उसपार-सा नजर नहीं आ रहा है ।

—मालती ।

मालती ने जबाब नहीं दिया ।

—गाहक आ रहा है ।

मालती ने कहा देखो मौसी, क्या चाहिए ।

चाहिए 'सब कुछ । लडको की जमात है । बैंगनी खाएगा, चाँप खाएगा, सिंघाडा खाएगा, चाय पिएगा । दो-एक के भलावा सभी सिंगरेट भी लेगा ।

चपा ने ठाकुर से कहा, आप भी हाथ लगाए ठाकुर !

धिसे वाच के उसपार सा सारा कुछ खोना ही नहीं जा रहा है, जल की दीवार के अंदर जैसे आवाज भी नहीं आती थी, वैसे ही शब्द भी नहीं



सुन रही थी मालती ।

बसत । बसत गोपा । बसत न गोपा के लिए बहुत किया ।

इसी बीच धुत्रवार की हाट रातम हो गई ।

बपा ने कहा, मालती हो क्या गया तुम्ह । उठो ।

—भो, हां । घर जाना होगा । वह भादमी भा गया ? जो रात को रहेगा ?

—भाया है । वही तो बाहर बठा है ।

—टिकली कहाँ है ?

—टिकली ? घरे राम वह तो शाम से ही बपन है । उस दुकान से चुनरिया और इस दुकान स टिकली, दोनों ही शाम से भागी हुई है । प्रेतनी सी घूम रही हैं वही ।

—हूँ ।

हाट की बत्ती बुझने लगी ।

केवल बीच के खम्भे में एक बत्ती जल रही है । इतनी बड़ी हाट म कसा घुघला घुघला लग रहा है । हाटवाले लोग भ्रमसर जा चुके । जिन के गाड़ी है, उनकी गाड़ी लद रही है । घरनी चाचा की छपरी घधेरी है । वह चला गया है । हठात उस याद भाया, भूल ही गई । घरनी चाचा को बुलाकर चाय पिलाना चाहिए था । ठोगे म थोड़ी-सी बगनी और चाय दे भाने से बूढ़ा पुरा होता ।

बैठकर गिन गिनकर उसने रुपये-पैसे की धाक लगाई । बागज म तिसकर जोडा । साठ रुपये दस भाने तीन पसे ।

रुपयो को धली में भरकर बाधा ।

रात में दुकान म सोनेवाले को कुछ खाने के लिए दिया । और एक उसक हाथ में देकर कहा टिकली को दे देना ।

बपा ने कहा, माला ।

—मोसी ।

—न चल । रास्ते म कहूगी ।

चलते चलते चपा ने फिर कहा, टिकली को कल जवाब दे देना ।  
उसकी खरुरत नहीं । वह सड़की अच्छी नहीं है ।

—मली और बुरी । उससे हमारा क्या मौसी ?

—तुम कुछ समझ नहीं सकी हो ।

—क्या ?

—उसके बच्चा होगा ।

—बच्चा होगा ?

—हा । वह गभवती है । अपनी दुकान में कहा जच्चाखाना करगी ?

—हा । बात तो ठीक है । लेकिन उसकी मा के तो भापडी है ।  
पेडतला है । हमारी दुकान म कयो आएगी ?

—छूत-पवित्र है मौसी

मालती हस उठी । हठात फिर चुप हो गई । कहा, छोडो मौसी ।  
अच्छा नहीं लग रहा है । उसका मन सब कुछ को भाड फेंककर फिर  
मानो शूय हुआ जान लगा ।

बसत । बसत गोपा । बसत एक बार आया तक नहीं । बसत ने गोपा  
के लिए बहुत किया । सब भूठ है । भुवनपुर की हाट की बात भूठी  
है । भुवनश्वर भूठ हैं । दुख के बदले सुख बडव के बदले मीठा  
मिलना तो दूर, यहा कुछ भी नहीं मिलता है । बसत ने गोपा के लिए  
बहुत किया । और उसे आए सात दिन हो गए, वह एक बार आया  
भी नहीं ।

ज्यादा या नही इसका लेखा तो नहीं लगाया है। लेकिन हा, किया है। जो भुंके करना चाहिए जो मैं कर सकता हूँ सो किया है। बसत ने यह खुद ही कहा।

तीन दिन के बाद सोमवार के सवेरे ही बसत आया। चपा और मालती तड़के ही जगी थी। दुकान जाने का इतजाम कर रही थी। हाट का एसे ही जाती है। और और दिन देर से जाती है। हाट के करीब ही है सब रजिस्ट्री आफिस। जरा दूर की दूरी। वहा रोज ही लोग आते हैं। आफिस के सामने सदर रास्ते पर चाय नाश्ते की दुकान भी है। भीड़ वही ज्यादा होती है मगर हाट की दुकाना म भी कुछ कुछ बिक्री होती है। मालती की दुकान मे सबसे ज्यादा होती है। हाट के दिन सुबह स ही खूब बिक्री होती है। जो लोग पिछली रात गाड़ी से माल लेकर आते हैं वह सब सवेरे ही चाय पीते हैं। भुवनेश्वर धान म अभी भी यात्री आते है। बीमारी के लिए मन्त के लिए आते हैं। उनमे से जो रोगी होते हैं जिहे मानता होता है वे तो बगर पूजा किए नही खाते। पर उनके सगी-साय जो आते हैं खाते हैं। सोमवार को ऐसो के लिए मूटो-मुड्य बुतागा मडा बिकता है। उन चीजो को लेकर सोमवार को सवेरे चपा भलग बठा करती है।

भोर म वे जाने की क्षमारी कर रही थीं कि दरवाजे पर पुकार हुई,  
मालती ? कहा है मालती ?

मालती चौंक उठी थी। क्यों ? कलेज के घट्टर घट्टका होने लगी।  
किसका गला है ? वह वही नहीं है ?

—कहा हो, वण्णवी मौमी ?

—भरे, बसत साना। अहोभाग। घाघो घाघो।

मालती मानो परत्पर हुई जा रही थी। केवल दिल के अदर की  
उपन-मुपल बन्ती ही जा रही थी। अवाक हो गई थी वह। घप घप  
साफ पाजामा गरुमा रग का लवा गुरता, धामा पर ऐनक, माये के  
बाल—हमे, बिखरे बिखरे दूसरा बसत हा जस।

बसत भी अदर आकर टिटक गया। अवाक होकर मालती की आर  
ताकता रह गया। यही—यही मालती है !

निडाल-भी सही होकर भी मालती न यह महसूस किया। उसके  
दोना कान गम हो गए। एक बार उसकी तरफ ताककर उसन फिर से  
नजर भुवा ली। चपा ने कहा, देख क्या रह हो सोना ? हूँ ?

बमन न बेभिभव ही कहा, मालती को देख रहा हूँ मौसी। कितनी  
सुन्दर हा गई है वह। और, सुन्दर ही नहीं, एकवारगी माडन स्त्री।

चपा न मालती से कहा, प्रणाम करो माला।

मालती न बढकर प्रणाम किया। बाली, और तुम ?

—मैं क्या ? मेरा क्या हुआ ?

—शहर का लीडर बन गए। भास मूह से चमक निकल रही है।  
चपा ने कहा बठा-बठो सोना।

उसने एक आसन डान दिया।

मालती उसके पास ही खड़ी रही। गजब है ! बंसी बालती ही र

बाली मालती कसी तो भुक् गई है—गूगी हो गई !

चपा ने कहा चाय नहीं पियोगे सोना ?

—नहीं पिऊगा भला ? तुम्हारे यहा भात लाया है। अन्न तो

का रेस्तरा खोल लिया है। चाय नहीं पिऊगा भला ! बल रात मेंने सब सुना। मन ही मन तारीफ की। बाह रे मातली ! साच रखवा था, सबर सीधे हाट ही जाऊगा। रेस्तरा म बँठ जाऊगा। कहूंगा, एक प्याला चाय तो दीजिए ! तुम सब अवाक हो जाओगी।

हस उठा वह।

मालती हसी नहीं। पूछा गोपा के यहा ठहरे हो, क्यों ?

—हा। और कहा ठहरू ? गोपा की यदनसीबी की तो सुनी ही होगी ! मैं उसम उलझ गया हू। भ्राया भी हू उहाँ लोगो के काम से।

—सुना है। सरकार बाबू कह रहा था, तुमन बहुत बिया।

जरा हसकर बसत ने कहा बहुत या नहीं इसका लेखा ता नहीं लगाया। लेकिन हा, किया है। जो मुझे करना चाहिए जो मैं कर सकता हू सो किया है।

गोपा बसत को बदवान लिवा गई थी। गोपा का ब्याह बदवान से कुछ कास दूर एक गाव मे हुआ था। उसकी समुरानवाले दत्त लोग जमींदार और व्यवसायी, दोना थे। गोपा के समुर राय साहब थे। राजादी के बाद भी वे काप्रेस मे समझौता नही कर सके थे। पिछले चुनाव म गोपा के जेठ जनसघ से खडे हुए थे। हार गए थे। जा उसमे जीते थे हठात् उनके मर जाने से गापा क जेठ स्वतंत्र उम्मीदवार होकर फिर खडे हुए। उस समय तुरत तुरत याह हुआ था गोपा का। गोपा ने अपने पति से कहा था जेठजी से कहो वह हमारे गाव के बसत बनर्जी को बुलावें। बहुत अच्छा बोनता है। वोट मोट की बात खूब समझता है। कितना अच्छा बालता है कि क्या बताऊ !

गापा के जेठ इसी बात पर बसत का अपने यहा ले गए थे। बसत ने सचमुच ही काम करके अपना कृतित्व दिखाया। वह उनके चुनाव का सर्वेसर्वा ही नहीं बना उनका राजनतिक परामशदाता भी बन गया। चुनाव के बाद भी उनके साथ रहता था। उन्होंने एक साप्ताहिक पत्र

निवाला था । सपादक उसका था बसत ।

उसके बाद गोपा का पति सहसा चल बसा । और उमने महीने भर के ही बाद गापा के समुर चल बस ।

गोपा के कोई बच्चा नहीं हुआ था । उसके जेठ ने कहा, जायदाद सब मेरी है । यही नहीं, पति के जीते जी गोपा स्वाधीन-सी घूमती फिरती थी—ब्रह्म करा दिया उन्होन । गुरुभान सिनेमा देखने से हुई । घर की गाडी के लिए तिल का ताट हो गया । गापा के पिता उसे लिवाने गए । लौटा दिया ।

बसत से भगडा हो गया ।

बसत ने उसी साप्ताहिक में लिखा जो लका जाता है वही रावण बन जाता है । जो नेता बनता है वही स्याह सफे का मालिक बन बैठता है । वही टिटलर हो जाता है । वही गरदन काटने पर आमादा हो जाता है । मनुष्यके अधिकार को रौंदता है, नारी को जजीर से जकडता है । दासी बनाता है । इस बात के जलते हुए उन्हाहरण हमारे नेता दत्त बाबू हैं ।

इतना ही नहीं दत्त के सामने ही सुना दिया, मैं अपने किए पाप का प्रायश्चित्त करूंगा । गाव गाव में जाकर सभा करूंगा । आपके जुल्मों सितम का कच्चा चिट्ठा खोदूंगा ।

दत्त इससे डर गए । गोपा का मके जाने दिया । उसके गहने दे दिए । जायदाद का सब मुकदमे में जो हो ।

बसत ने कहा आखिर कितना मिला ? गोपा के समुर की जायदाद तीन चार लाख की होगी । उसका कितना-सा मिला, कहो ?

एकटक उमकी ओर देखती हुई सुन रही थी मालती । बसत धम गया । उसने घाम से कहा, और मैं ? मेरे लिए कितना किया है, सो कहो ?

बसत हसा । बाला तेर लिए क्या करना था, बता ?

—कुछ नहीं था ?

—बता क्या था ?

एक लया निश्वास फेंकर मालती गपटा नहीं। कुछ नहीं था। मेरी ही भूल है।—और वह झट्टर चली गई।

—अरे रे ! मालती ! मालती !

उसके पीछे पीछ बमत झट्टर चला गया। मालती उम झार भी खिडकी पकडकर खडी हो गई थी। बाहर की तरफ ताक रही थी।

—मालती ! बसत न फिर उसे पुकारा।

मालती न पलटकर देखा। वह रो रही थी। दोना घामा न घामू वह रहा था।

—रो रही है तू ?

मालती एकटक उसकी ओर देख रही थी। अजीब थी उसकी वह नजर। वह नजर देखकर बसत दग रह गया। स्थिर, अपलक।

—बसत तुम्हारी चाय ?

चाय लिए चपा आई। लेकिन फिर भी उसे कोई सकोच नहीं कोई हडबडी नहीं। मालती की नजर को देखकर चपा न गवित्त हाकर पुकारा मालती, माला !

मालती की निगाह मानो दप से जल उठी। वह चारा पडी—मी सी !

—मालती !

मालती खूसार जानवर-सी उसकी ओर दौडी—जाओ यहा न जाओ कहती हू।

चपा डर से पीछे हट गई। अस्फुट स्वर न बोली माला !

—मार डालूगी मैं तुम्हे। जाओ।

चपा चली गई। किवाड भिडकाकर मालती बमत की ओर पाटी। उसकी आखें अभी भी लटक रही थी। आसू के नीचे नजर की वह आग मानो हर पल अनेक रग निखार रही हो।

बसत देख रहा था। वह चचल नहीं हुआ। स्थिर होकर खडा था। बलिन होठा पर जरा हसी खेत गई थी। मालती न कडा उा खेता की

राह आते हुए एक दिन—याद है ?

—तुम्हे वह बात याद है ?—वसत के हाथों के एक ओर वह हसी ज़रा और ज्यादा फँल गई ।

—तुमने मुझसे विवाह करने की कही थी । मुझे जकड लिया था—। अब मालती टूट पडी । भर भर करके रा पडी । वसत ने करीब जाकर उसके सर को छाती म खीच लिया ।

मालती ने कहा, कदखाने मे ढाई साल तक मैं केवल तुम्हारी ही बात सोचती रही थी । तुम्ह ही सपना देखती रही थी ।

वसत ने उसे छाड दिया । कहा वह बात मैं भूना नहीं हू । मुझे याद है ?

—नही-नही, नहीं है । फिर तुम आए क्यों नहीं ?

—काम से

—काम ! गोपा का काम ?

—नही । काम ! मेरा काम । अब मुझे बहुत काम है !

—जानती हू । अब तुम बहुत बडे आदमी हो । बडा नाम है तुम्हारा ।

—फिर भी मैं तुम्हे नहीं भूला । आज भी तुम्हको प्यार करता हू ।

मालती ने दोनों हाथ बढाकर उसके गले का लपेट लिया । मुह पर मुह रखकर बोली, तुम्हारे बिना मैं ज़िंदा नहीं रह सकूंगी । नहीं नहीं-नहीं ! वह फिर रो पडी ।

—वसत !

बाहर से चपा ने आवाज़ दी ।

पागल की तरह त्राघित आखों से गरदन घुमाकर मालती ने दर-वाजे की ओर ताका । चिल्लाकर ना कहना चाहा । परतु हाथ से उसका मुह दबाकर वसत ने जबाब दिया ज़रा देर बाद बष्णव बहू ।

—तुमको बुला रह हैं । दस-बारह आदमी आए हैं । बाहर खडे हैं सब ।



—भजीव मुसीबत है ! छाड़ मालती ! गेग लू ! मैं तुम्हें घाज भी चाहता हूँ । छोड़ ।

मालती न उस छाड़ लिया । उसका जरा देर पानन क गुगार घोर क्षुब्ध चेहरे पर गजब की लजीली हसी निरार भाई । वाली, बटा मनने की मुसीबत है ! जाभा ।

बसत बाहर निकल गया ।

मालती न घाखें पाछी ।

कुछ क्षण वह स्तब्ध राठी रही । बाहर निकला म गम घा रणी थी माना । चपा मोसी क सामन तो लाज का घन नहीं रहा । एष घप राष बोष ने उसे जैसे नवा दिया । छि छि । य कपा किया उसने पागल जैसा । कुछ देर म घपन को सभालकर वह बाहर भाई । घापाज दी—मोसी !

चपा सिमटी बठी सर पर हाथ रखे नीच का नजर किए सोष रही थी । दुकान का घादमी घागन म बठा था । सामान सब लन-बजे पढे थे । चपा ने मुसकराकर कहा कहो, क्या कहती हो ?

—नाराज हो गई ?

—नाराज ? —चपा हसी—नहीं । गरदन हिलाई ।

—मेरा दिमाग ठीक नहीं था मोसी ।

—वह बात रहने दे ।

—वह मेरा क हैया है मोसी !

—माला ! इसी तरह से ठीक भज पाओगी ?

—जहर ।

—कन्हैया पर विश्वास करती हो ?

—नहीं । सो नहीं करती ।

—तो ? विश्वास के बिना तो नहीं बनता मोसी ।

—देखना ।

वह घादमी बठा बीडी पी रहा था । बीडी को फेंककर वह बोला,

बड़ी देर हो गई। हाट का दिन है। चलिए !

—उठ जा मौसी !

—चलो ।

हाट जम गई। गोर-गुल। आज की हाट ज्यादा जमी है। आज लकड़ी की गाड़िया ज्यादा आई थी—सलुए की सिलपट—बने दरवाजो से भरी गाड़िया बड़ पीपल के जंगल में भावर जमा हुई थीं। वह सब वरागोनला के मेले में जा रही ह। वह मेला बगाल का सबसे बड़ा मेला है। तिसपर श्रीपंचमी और शीतला-पष्ठी करीब है। स्कूल के लड़के और लड़किया सरस्वती पूजा का सामान खरीदन के लिए टूट पड़े हैं। गृहस्थ शीतला-पष्ठी का बाजार करने आए हैं। गाड़ी बंदी डठलें आन विकने की आई हैं। पष्ठी के लिए खासकर बटवा के भालमपुर की डठला की आज बड़ी माग होना है। मटर की छीमी, सम, बगन भी बहुत आया है। उबला मटर सेम बैंगन की तरकारी और साग की डठल तथा पोस्तादाने की तरकारी शीतला पष्ठी के लिए प्रतिवाय है। होनी ही चाहिए। उधर लकड़ी की दुकान के सामनेवाले बरगद के नीचे पकार लोग बकरे बहुत ले आए हैं। लड़के-लड़किया सरस्वती पूजा के लिए खरीदेंगी। पष्ठी के दिन बाबू लोग दिन में बासी खाएंगे रात को बाहर इट के चूल्हे पर मास और खिचड़ी पकाकर खाएंगे। जाड़े के अब रहे हैं दिन ! उस तरफ कुम्हार लोग सरस्वती की छोटी छाटी प्रतिमाएं ले आए हैं। दो चार मभीले बंद की मूर्तिया भी है। कलकत्ते में आजकल जिस फशन की मूर्तिया बनती हैं वसी ही।

एक कारवाला हाक लगाता चल रहा है—बसती रग बसती रग। कार फीते के साथ आज वह रग भी ले आया है। लड़किया बसती रग से कपड़े रगाकर पहनेंगी।

मालती की दुकान में भी आज भीड़ ज्यादा है। मालती आज जैसे खिले कमल-सी टलमल कर रही है। जीवन में खुशी की धूप लगने से उसकी सारी पखडिया मानो फूल गई ह।

सकोच, सस्कार—सब कुछ को ऐरावत की तरह बहा दिया। कोई कुछ भी बहे। जो होना ही हो। उसकी कोई चिंता नहीं, भिन्नक नहीं परवा नहीं। बेखौफ है वह। बसत उसको प्यार करता है। बीच-बीच में वह खिलखिलाकर हसती है।

श्रीमती की दुकान में ग्रामोफोन बज रहा है—

मिलनमधु माधुरी भरी  
 यह रात स्वप्न की बीते ना,  
 जीवन के बिरबे में सुख की  
 यह नेफाली रीते ना। रीते ना।

बड़ा अच्छा लग रहा था। कभी कभी आस-पास को भुलाकर गुणगुनाती हुई वह सुर में सुर मिलाने की कोशिश कर रही थी।

उसकी निगाह आज पिसे काच-सी घुघली न थी, आर पार मिल कर एकाकार हो गया था। लाग और लोग। काले काले सर, घूघट-वाले सर। उसीके हजार मुह—घोचक ही एक चेहरा दिख जाता है और फिर तुरंत खो जाता है। या तो वह झुककर कुछ खरीदता रहता है या पीछे हट जाता है। या इधर के कुछ माधो का पिछला हिस्सा उसे ढक देता है। बेमानी। मगर अच्छा लग रहा था।

भजन की आवाज हुई। चपा ने अफसोस के साथ कहा, तोड़ दिया।

मासती न मुड़कर देखा। घोने में कुछ प्लेट-प्याले टिकली ने तोड़ डाले। अप्रतिभ होकर खड़ी हा गई वह। मालती रज नहीं हुई। हस-कर बोली टूटे टुकड़ों को बटोरकर कूड़ के टिन में डाल दे। चल मैं बत्तन घो देती हूँ।

कमर में फेंग बांधकर वह बढ गई ?

टिन की दीवाल के उस तरफ खड़ा होकर काईधीमें से बह रहा था छोकरा दमने में खूब है भइ !

—हसी दागी है ?

मालती को जोरो की हसी आ गई। वह खुक-खुक करके हसने लगी। वतनो को धोकर उसने चपा के सामन रख दिया और चाय भरे प्याला को उठा उठाकर गाहका के सामन रखन लगी।

—कपडा लीजिएगा ? कपडा। रगीन, डारिया।

कपडावाला आकर खडा हो गया।

—बडे रसिया हो जी ? यह कपडा रखन का समय है ! कपडावाले के पीछे से किसीने कहा, अरे हटो हटो, ऐ !

मालती का कलेजा धक से रह गया। आवाज बसत की थी। भारी गला। भारी ही नहीं, गभीर नी। मभले कद का भादमी—कपडावाल की पीठ के बोभे की तरफ सिफ बाल ही दिखाई दे रहा था। कपडावाला लवा है।

—मुनने हा ?

कपडावाला हटकर खडा हो गया। बसत हल्का-हल्का हस रहा था। हसत हमते ही बोला चाय पीने आया हू। बसत के साथ स्कूल के कइ लडके थे।

जाडे के दिन। फिर भी मालती के कपाल पर पसीना आ गया। हसकर बोली, आइए। आग्रो' नही कह सकी।

बसत दुकान के अदर आया। चारा और और करके बोला, दुरु-आत अच्छी हुई है। लेकिन इस घर को पक्का बनाना होगा। बिजली लेनी पडेगी।

उसके बाद लडका से बोला, देश क वारे मे यहा हाट म क्या बात-चीत होगी भया। किसी और समय आना।

लडको ने कहा कहा मिलें आपसे ? कव ?

—बल तीसरे पहर। इस मालती का घर जानने हो ? वही आना। मैं वही रहूंगा।

मालती खुग हा उठी। अपनी कुर्सी उसकी ओर बढाकर बोली, बठिए।

—बठ गया। जरा बढ़िया म चाय बनाओ। घरे, गिगरट ता है देखता हू। एक डिब्बी दो मुझे।

सिगरेट देकर मालती उधर गई। चपाने चाय का पाना उतारा था। उसके पास जाकर वाली, हटा तुम मौमी, मैं बनाती हू।

चपाने पूछा चाप दू ?

—नहीं। रहन दो।

बसंत ने कहा—उसने वान मुन ली थी—चाप नहीं। प्रगती निगल दो थोड़ी-सी। अच्छी तरह सतल दा।

मालती को बड़ा अच्छा लग रहा था। बसंत उसकी दुबान म आया है। यानी उसन मर दुकान करन की बात का पुरा नहीं माना है। बड़ा अच्छा लग रहा था। सोचन लगी, चीनी घाड़ी-सी क्यादा दे या नहीं।

—बसंत ! नसीब अच्छा है कि भेंट हो गई।

—क्या बात है खबर क्या है ?

—हाट करने आया हू।

मालती न मुडकर देखा। अच्छे कपडो म एक भला घादमी। वह अदर आया।

बसंत ने कहा चाय दो कप बनाना।

उस घादमी ने कहा, चाय नहीं पीऊंगा। तुमसे एक बात पूछनी है।

—कहिए ?

—तुमने यह जुलुम क्यों किया ?

—जुलुम मैं बहुत किया करता हू। आप कौन से जुल्म क्यों कह रहे हैं। पहले यह कहिए।

—मेरे भाजे का ब्याह कायस्य लडकी से क्यों करा दिया ? उसकी जात क्यों मार दी ? उसको तुम्होंने उसकाया।

—तयार ता वह आप ही था। उसने कहा, उससे शादी करुंगा। मैंने इसम कोई बुराई नहीं देखी। कहा करो।

—कोई बुराई नहीं देखी ? ब्राह्मण का लहका—कायस्थ की लडकी

टोककर बमत ने कहा, नहीं। काइ बुराई त्ही।

—तुम हिन्दू समा के

—मैं किसी समा का नहीं हू। मेरी राय मेरी अपनी है। मैं स्वतंत्र हू। हिन्दू-कायस्थ मे शादी क्या, मैं इस ब्याह की ही जरूरत नहीं समझता। नियम के नाम पर समाज द्वारा लादा हुआ यह एक अनियम है। प्यार स्त्री-पुरुष म हाता है। प्यार हाने पर दोना एक साथ रहेगें। इसमे यह ब्याह की घूम घाम क्या है ?

—तुम बटे भारी पाखडी हा।

—आप भा ढागी हैं। घरम के साड।

—बसत।

—आप डाट कैसे रहे हैं?—बसत ने कहा। वह हमा। गजब है। बसत हसत ही हसत बाल रहा है। एक सिगरेट फूक दी। दूसरी सुलगा रहा ह। मालती चाय का प्याला हाय म लिए ही बठी है। ममझ नहीं पा रही है, उठकर दे कि नहीं।

बमत न यह देखा। कहा, चाय दो मानती।

मालती न चाय का प्याला बढाकर उतार दिया।

वह आदमी अब तक चुप बठा था। अब एकाएक बोल उठा, आप ? आप क्या करोगे ?

—मैं ? मुझे बहुत काम है मुखर्जी बाबू। ब्याह करने की फुरसत नहीं है। प्रौर ल्वाहिश भी नहीं है। ब्याह मैं नहीं करूंगा। बसत हमा।

—ब्रह्मचारी बनोगे ? इधर तो यह सुना कि शराय गुरु कर दी है ?

—गलत नहीं सुना आपन ! गुरु की है। रात का पीता हू सेहत के लिए। प्रौर ब्रह्मचारी रहूंगा यह भी नहा कहना। यदि किसी से प्यार कर बढूंगा ता कहूंगा आओ हमदोना मिलकर घर बसाए। बसाए तो ठीक है वरना जा बसत को तयार हांगी उसीकी खोज करूंगा।

चाय की चुस्की लेकर बसन्त ने कहा याह क्या गूब चाय बनाई है !  
दो दो, मुखर्जी बाबू को एक प्याना दा। पीजिए पीकर मिजाज का ठहरा  
कीजिए।

वह आदमी बिना कुछ बोल ही उठकर चला गया। बसन्त हा हा हा  
हा हस उठा चार-पाच गाहब दुकान म भ्रा गए।

—हा भई, दो दा चाय और चाय।

वह सब बेंच पर बठ गए। बसन्त उठ गया हुआ।—ता चलता हू।  
दाम नहीं लोगी ?

मालती ने उदास होकर देखा। कहा नहीं।

बसन्त हसते हसते दुकान से बाहर चला गया। सारी हाट पर नजर  
दौड़ाकर बोला ओ बची भीड़ है आज तो !

चपा ने कहा, होगी नहीं ? तुम तो गहर म रहकर सब भूल गए हो।  
लीडर बन गए हो—

—क्यों, उससे क्या हुआ ? क्या भूल गया हू ?

—आज काहे की हाट है बता सकते हो ?

—ओ। हा हा। सरस्वती पूजा की हाट। इसीलिए स्कूल के लडका  
और क्या विद्यालय की दीदिया की भाड़ है।

—सिफ उही लोगो की ? सरकारी दफ्तर के बाबुआ की। दो हैं।  
कलब की। स्टेशन की। उस दिन हमलोगा न कितनी गिनी थी मालती ?  
दस न ? एक हाट की—हा।

हाट म भी सरस्वती ? यह कसी—नाम विद्या की ?

—जो कह ला। तुमलोग पंडित हा। लीडर। सिफ सरस्वती पूजा  
ही नहीं है। दूसरे दिन गीतला पण्टी। बासी भोजन।

—टिकनी ! बसन्त न पुकारा। टिकली न उधर ताका।

बसन्त ने कहा, जरा देख तो आ, मुर्गी कस बिक रही है ? सरस्वती  
पूजा है। शीतला पण्टी है। लाग मुर्गी तो खाएगे नहीं। जा। मा सरस्वती  
की जय-जयकार हो।

—तुम खाओगे ?—चपा ने अचरज के साथ पूछा ।

—ओ, तुम्हें गायद नहीं मालूम ? मा सरस्वती मुर्गी खून पसद करती हैं । नहीं तो लोग भला इतने विद्वान् हा ।

चपा हस उठी । मालती ने कहा, गाहक क्या माग रहे हैं दगो मौसी ।

एक साथ ही पाच गाहक आ पड़े । बाह । खासी दुगान खुल गई है ।

साफ-मुयरी—

हाट मवडे कौतुक से 'हरि बोन' बोल उठे लोग । उस भीड को ठेलकर एक-एक करके दो जने बाहर निकल आए ।

—घा । घा—घा ।

—चल-चल ।

—हा, चल ।

—हा-हा चल । चल न ।

—चल । मैं बाबा के आगे दैसे फेंक दूगा । तुम्हे उठा लेना पडेगा ।

—जगर उठा लूगा । तू बाबा के भाये पर ही रख देना ।

—कोड फूटेगा ।

—तुम साले को जो हुपा है । हु, साले मेरे दोस्त बने हैं । हाट धूल चोटटा वहीं का ।

कहते कहते दुगान के सामने से ही वे बाबायान की ओर चले गए ।

ठाकुर ने कहा दो मित्तन म भगडा हो गया । तरकारीवाला मित्तन पाल धोर बोडिंग म जो चावल देता है मित्तन पाल । अजीब ह !

मालती भी उह जानती ह । बाप क समय मे देखा है । बाप से, धरनी धाचा से उनके द्वारे मे सुना है । कहते थे, दस माल पहने ती दानां न हाट धल का नाता जोडा था । दोनो ही मत्युजय पाल । तरकारीवाले मित्तन पाल को जगह-जमीन नहीं थी—खरीदकर तरकारी बेचने के लिए खाता था । बाजार मे चावल खरीदता था । हमनाम होने की बजह से दोना





—मालती की भवें सिकुड़ गई ।

चपा न कहा आपलोग अच्छी कह तो अच्छी हैं हम । नहीं तो बुरी । मालती ने भ्रव हसकर कहा आप सबके ही भरोस तो यह दुकान है ! आपलोग ठीक से यहां खाए जब ता !

—ता और दो दो चाप दो ।

—दो मोसी ।

—कहा घर है तुम्हारा ? कहा से आई है ? पूर्वी बगाल की रिफूजी हो गायद । तुम्ही लोग यह सब कर सकती हो । हमारे यहां की औरता में यह जुरत नहीं है ।

—मैं यही की हू ।

—यही की ? किसकी लडकी हो ?

—मेरे बाप का नाम था श्रीमत् दास ।

वह आदमी हा किए उसकी ओर ताकता रह गया । मालती ने समझा उसने उसे पहचाना । बचकत की हा कसी भद्दी ! सामने के कई दात ही नहीं हैं । जो कई हैं, काल हा गए हैं । डर गया क्या ? हमी आई । फिर भी बोली, श्रीमत् दास यहां मनिहारी की दुकान करते थे । उनकी लडकी ने बासदेव दुवे को मछली वाली हमिया से काट डाला था—

—हा ।

मुह स निकलकर थोडा सा चाप तश्तरी पर गिर गया । मालती ने दूसरी ओर मुह फेर लिया । सभी तरफ हाट । अभी हाट म मधुमाछी के छत्ते की भन भन-सी आवाज चल रही थी । वे दोनो क्या फुस फुसा रहे थे । ताकन को जी हो रहा था, पर ताक नहीं पा रही थी । ताकते ही हस पडेगी । बसत चला गया । वह वहा मुरगा का मोल भाव कर रहा है । पैकार उसे बार बार सलाम करके वात कर रहा है ।

—पसा । पसा लो जी ।

उही दो जने म से एक था—चटर्जी । पाच रुपय का एक नोट फेंक निया ! कहा सामान तुम्हारा अच्छा है । चाप अच्छा बनाया है ।

रही है।

टिकली ने पूछा क्यों री, चाप खाएंगी ? खूब अच्छा है। सा।  
मालती ने कहा, दो घाने मे एक।

उस सडकी ने इस बात का जबाब नहीं दिया—सुना और सा बरके  
घूम गई। हतहनाती हुई हाटकी भीड़ में जा मिली।

मालती ने पुकारा मुन मुन।

मगर वह नहीं लौटी।

टिकली बोली इतना पसा वह कहा पाएगी ?

मालती ने पूछा पहचानती है तू ?

—हा। हाट में घाती है।

—घर कहा है ?

—कोमरपुर। समुराल में नहीं रहती। बाप के घर चली आई है।  
पूछा चुमौना (दूसरा याह) क्यों नहीं करती तो कहा मेरी इच्छा।

—बुरी सडकी है ?

—ऐसा तो नहीं लगता। कमा-कोडकर खाती है। हाट के दिन  
गोइठे लाती है, गाव-बाजार में बेचती है।

मालती को अच्छा लगा। बोली उससे कहना न, हम गोइठे देगी।  
जा बुला ला उसे। एक चाप दूगी।

टिकली चली गई। ठाकुर ने कहा ऐ ऐ बत्तन घाकर जा। चपा  
ने कहा हाय राम, यह क्या कर रही हो मौसी। कितने लोग खाते हैं  
भाखिर सब बरामहन-नायय ही तो नहीं हैं। बहुत जात के। अभी अभी  
एक मिया खा गया। मैं पहचानती हू उस।

मालती हस उठी जल में मैंने जुनेदा बीबी का जूठा घोया है मौसी,  
—सो जेहल में दोष नहीं है। वहा की बात और है। मालती ने कहा  
चाय-चाय की दुकान की बात और ही है मौसी। और फिर यह तो  
हाट है। भुवनपुर की हाट। यहा मुसलमान भी मात मानकर देला  
बाघते हैं। पहले बड-पीपल के जगल में मुरगा छोड जाया करते थे।

—हरि बोल ।

—टूटी कमरवाला एक भिखमगा आकर सामने बैठ गया । भिखमगे हाट म आते हैं । कान, लगडे, कोढी । और बाऊल आते हैं । भालू की दुकान मे एक-दो भालू मिचवाला दो मिच, बगनवाला कभी कीडा लगा बगन दे देता है, प्याज देता है । जो बटी चीडा के व्यापारी हैं, वे लगडे-काने, कोढी को एक-एक पसा देने है । कुछ लोग भगा दते हैं । लेकिन हा, असखल्ला वाले बाऊन या गेरआवानी वरागी को नही दुल कारते । और वे हर हाट म आते भी नही ।

टूटी कमरवाला भिखमगा बैठे-बठे चलता है । उसने फिर आवाज लगाई—हरि बोल !

मालती न बत्तन मलते मलते ही कहा, यह लगडा कब से आ गया ? कहा से आया ? वह बुडढा लगडा कहा गया ?

लगडा बोला मैं मेदिनीपुर से आया हू मा जी । तुमने दुकान की है । खूब बित्री होगी मुम्हारी । खूब । उस बुडिया की दुकान मे कोई नही जाएगा, देख लेना । चपा ने उसे वान के दो पकौडे दिए—लो जाओ ।

—कोई नई चीज बनाई है सुना । लोग कहते है बडी अच्छी है । वह नही दागी ?

मालती ने एक टूटा हुआ चाप उसके हाथ पर रख दिया । उस मुह मे डालकर बठे बैठे चलते हुए वह बढ गया ।

टिकली लौट आई बोली न । नही मिली वह । एक आदमी ने बताया वह दौडती हुई भाग गई !

मालती को उस पुराने लगडे का याद आ रही थी । पिछली कई हाट म याद नही आई । आज इस लगडे को देखकर एकाएक याद आ गई । बोली, उस लगडे को क्या हो गया मौसी ?

—उसने देह रखली । पानी में डूबकर मर गया ।

—पानी म डूबकर ?

- हाँ । रात में एक खदक में गिर पड़ा था ।

लगड़ा मर गया । जी गया बेचारा लेकिन भुवनपुर की हाट में उसकी जगह खाली नहीं रही । ठीक दूसरा आ गया ।

घरनी चाचा दुकान के सामने से बोलता हुआ चला जा रहा था—  
भुवनपुर की हाट । आज लगी फल फाट । बाहू बाबा दस पंद्रह साल की प्रीत— गई । घरनी ठिठक कर खड़ा हो गया । हसकर बोला, बाहू, तुम्हारी तो खूब चल रही है बिटिया ।

मालती ने कहा चाय पीजिए न ।

—ठीक है । पी लूँ तुमने दुकान की है । घरनी अदर गया । वहाँ बैठ एक ग्राहक ने कहा बयो भई दास क्या हुआ ? चुक गया ? निबटा सक ?

—न । वह भी भला निबट सकता है । इस अदर थप्पड़ मुक्का के बाद ? दोनों ही घाने पर गए ।

वही चावलवाला मित्तन और तरकारीवाला मित्तन । दोनों ही घाने पर गए ।

घरनी ने कहा, कमूर दोनों ही का है । पहले ऐसा था कि यह उसके यहाँ छोड़कर तरकारी नहीं खरीदता था और वह इस छोड़कर चावल नहीं खरीदता था । अब तरकारीवाल मित्तन की हालत सुधर गई है । जमीन खरीदी है । घाना होता है । चावल कम खरीदता है । चावल वाला मित्तन धीरे धीरे इससे उससे तरकारी खरीदने लगा । आज चावल वाला मित्तन लालचाद से पाच मन धालू खरीद रहा था । तरकारीवाल मित्तन को इगीका गुम्मा हुआ । जाकर कहा तुम तो अन्धे भन घान्मी हो जी । खीर घाना पैसा तुम्हारे लिए कुछ नहीं है ! तुम बड़ घान्मी हो । मेरे लिए मित्तन बड़ा बूढ़ है । चावल मित्तन ने क्या क्या का पैसा ? क्या बना रहे हो तब । तरकारी मित्तन ने क्या तब मधम घान्मी तब

घूल' मर लिए ले आया था। लोग इसका डेढ़ रुपया तक दे रहे थे, उसने नहीं दिया। मैं बोला तो यो ही दे दिया ? उसने कहा चौदह आने की खरीद है। उसी दाम पर दिया। लेकिन मैंने यह नहीं पूछा कि नकद कि उधार। अब तरकारी मित्तन कह रहा है कि दाम दिया नहीं है। चावल मित्तन कहता है कि दे दिया है। इसी बात पर विवाद हुआ। मुझे गवाह माना। जो जानता था मैंने कहा। काहूडा लिया है दाम भी चौदह आना ठीक ही है। लेकिन नकद लिया कि उधार कसे बताऊ ? इसपर चावल मित्तन ने कहा कोढ़ फूटेगा। कहना था कि तरकारी मित्तन ने भट एक तमाचा जड़ दिया। कि चावल मित्तन ने एक मुक्का जमा दिया। आखिर दोनों थाने गए। अब लो दो फौजदारी मुकदम में गवाही ! हाट का प्रेम यही होता है। सस्ता। दा, नहीं दिया कि बुर आदमी हो गए। आज तुम सस्ता दो, दोस्त हो कल कोई और देगा, तो वही दोस्त। देने-लेने का व्यापार। एक बात कही जाती है भुवनपुर की हाट, आज जुड़ी कल फाट। यह हर हाट में होता है।

मालती बठी सुन रही थी। अच्छा ही लग रहा था। बात धरनी चाचा ने ठीक ही कही। गलत नहीं कहा। धरनी उठा। बोला, अच्छी चाय है बिटिया, लो। परे लो।

—नहीं ! आपसे मैं पैसे नहीं ले सकती।

—नहीं-नहीं ऐसा नहीं होता बिटिया। नुकसान होगा। यह तुम्हारा व्यवसाय है।

—जिस व्यवसाय में चाचा से चाय का दाम लिया जाता है मैं वह व्यवसाय नहीं करती।

धरनीदास कुछ कहने जा रहा था, बोल नहीं पाया। जगतपुर के चटर्जी ने उसे ठेलकर हटाते हुए कहा मेरा वह आदमी कहा गया ? वही वही जो माटी के बत्तन सहेज रहा था।

मालती ने कोने की तरफ ताककर देखा। सच तो, वह आदमी नहीं है। मिट्टी के ग्लास और सकोरे बसे ही घघसजे पड़े हैं। वह कहा गया ?

मालती न कहा, सो तो नहीं जानती । बही गया होगा ।

—बहा गया ?

—यह कैसे जानू बहिए ? बहकर तो गया नहीं । इतनी भीड़ में देखा भी नहीं ।

—लछमी, भरे भो लछमी । लछमनवा ? भजीव भापत है । रख पठे उतार कर बहा रख ।

बोरा-बदी पठा । ढालकर रखने लगा ।

मौसी ने कहा, भा । एक कोहड़ के लिए । और यहा इतने काहड़े फेंके चल रहे हैं । ऐं ।

चपा को अफसोस हो रहा था एक कोहड़े के लिए दो मित्तना में इतना भगडा हा गया ।

मालती हसी । चपा मौसी खूब है ।

बसत फिर आया । पीछे-पीछे हाथ में एक जलती बत्ती भुलाए एक आदमी । बसत ने कहा ले इसे रख ले । जलाकर ही लाया । रख दे रे ।

मालती का चेहरा एक बार दप स दमक उठा । पर दूसरे ही क्षण वह दमक नहीं रही । पूछा कहा से ले आया ?

—ले आया । इतना जानने की तुम्हे क्या पडी है ? मिली । दुकान पर लटका दे । सुना पिछली हाट में श्रीमती ने यही बत्ती जलाई थी । रख । बसत हसा ।

बसत दुकान में आकर बठा । कहा, और एक प्याला चाय दे ।

चपा ने कहा बत्ती तो नई लगती है बसत सोना ।

—हा, नई है ।

मालती ने चाय का प्याला लाकर सामने रख दिया । सबाल उसके जो में जगा था लकिन दुकान पर कई ग्राहक बठे हैं । पूछ नहीं सकी ।

बत्ती को भुलाने के लिए । बसत तार भी ल आया था । ठाकुर और टिकली—बत्ती देखकर सभी खुश हो गए । ठाकुर ने तार के सहारे बत्ती को भुलाकर कहा, वाह ।

चाय पीकर बसत जान लगा, तो मालती बोली, बसत-दा। बसत पलटकर खड़ा हो गया।

—कितनी कीमत ली इस बत्ती की ?

—बया ?

—आखिर देनी पड़ेगी न।

बसत उसके मुह की ओर ताकने लगा। फिर बोला, वह बत्ती मैंने तुम्हे दी।

—दी ?

—हा।

वह रुका नहीं चला गया। मालती बत्ती को देखती रह गई। दिन का प्रकाश डूब गया, लेकिन रात का अंधेरा अभी गहरा नहीं हुआ। बत्ती की जोत अभी फीकी और निस्तेज थी। मालती के मन में कैसी तो एक बेचनी होने लगी। बसत मानो दिन की रोशनी में उस बत्ती की जोत-सा एकाएक निष्प्रभ हो गया। आज हाट की पहली वेला में बसत ने उस आदमी से जो सब बातें कहीं वही बातें उसके मन में चक्कर काट रही थी। बसत जैसे उसका अचीन्हा हो गया है। समझ नहीं पा रही है। जुबदा बीबी कहती थी—अरी ऐ कच्ची छोरी सुन ले। सुन ले। तेरे काम आएगी

जि सामने श्रीमती आकर खड़ी हो गई। काली और मोटी श्रीमती क पहनावे में हाथीपजा साड़ी, कलाई में सोने की दो बालिया सर के बाल खींचकर बाधे हुए। छोटा-सा जूड़ा। कान में दो फूल नाक में कील, मुह में पान। दोना हाथ कमर पर रखकर श्रीमती बड़ी अदा के साथ खड़ी हुई। मालती न पूछा, वान क्या है पूछा ?

कटे-कटे गंदा में श्रीमती ने कहा बात क्या होगी ? देखने के लिए आ गई।

—क्या देखने के लिए ?

—यह बत्ती।



चपा ने कहा, नई आई है।

—हूँ। बसत ठाकुर दे गया। सुना। वही देखने आई। यह बत्ती तो देखी है लकिन प्रेम मार्का बत्ती की रोगनी बसी तिलती है, यही देखने आई।

मालती न कहा, तुम्हारी वह बत्ती अब गायद विरह मार्का हो गई है फूझा।

—क्या ? क्या बोली रे बंशरम लडकी

—जो कहा, सो तुमने सुना।

—मालती ! —चिल्ला उठी श्रीमती।

मालती ने भट एक छकनी उठा ली। कहा, सुनो फूझा अब अगर और ज्यादा चिल्लाई तो इसीसे तुम्हारा मुह चूर डालूगी।

श्रीमती डर से पीछे हट गई। मालती चिल्लाकर बोली—हा, जलाई है। प्रेम मार्का बत्ती ही जलाई है। खूब किया है। मैं बेशरम हूँ, जेल खट चुकी हूँ। तुम किरपा करो।

चपा ने आकर उसे जकड लिया मौसी। मालती !

मालती मानो हठात पागल हो उठी। वह घर घर काप रही थी। देखते ही देखते भीड लग गई। हाट के लोग, जो सामने के टूटे फूटे रास्ते से जा रहे थे, ठिठक गए। जो दूर में थे, दौडकर आ गए। और भी लोग आने लगे। श्रीमती भीड में दुबककर अपनी दुकान में चली गई। बाबायान में घटा बज उठा। अधेरा धीरे धीरे बढ़ने लगा। और पेट्रोमेक्स की रोगनी। धीरे धीरे उज्ज्वल प्रकाश होकर भन्मलाने लगी।

अब मानो मालती को होश आया। हाथ की छकनी फेंककर उसने कहा दुकान में घूष दो मौसी। सामन भीड मत लगाइए। हटिए। अब तो कुछ नहीं है।—वह अपनी कुर्सी पर बठ गई।

भीड छटने लगी। किसी एक ने कहा, ले भया, आज हाट में नारद आया है।

जगतपुर का घटर्जी दुकान में आया। उसके साथ घोष। घोष ही

नहा और भी तीन आदमी। उनमें चटर्जी न कहा, ले, सारा सामान गाड़ी पर रखा। पहले मिट्टी के बत्तन उठा ले भैया। दुकान को छेने हुए है। ले। हा हम चाय दीनिए। कुछ चाँप भूनकर ठाग म दात दीजिए।

चटर्जी ब्रूठ गया। घायन कहा ऐवना वातल टूट न जाए। फिर तो चाप लेना ही बेकार हा जायगा।

मातली ने अपना हाथ से उनकी चाय ला ली। अब वह शांत हो गई थी। पूछा मिथाटा—चोरी ?

—दो-न अडे दो। ज्यादा नहीं। हा ठोग म गानीयाना के लिए कुछ सिमाडे द लो।

मालती ने दर्शन उठानेवाले की तरफ मुड़कर ताका। उस उस छोकर की याद आ गई। स्वप्नरत उस छारे की। अचानक चला कहा गया था वह ? उसने पूछा जी वह मिला ? आपलागे का वह सछमनवा ?

चटर्जी हस उठा—उसकी मन कहिए। कवहन की समुराल पास ही है। वहा जान की वह वह अरु र थाया था। वहा था, हाट का काम खत्म करके समुराल जाऊगा। कल आऊगा। मगर कवहन की धीरज नहीं रहा। चार ही बने चपत हो गया।

जाग का उन गब्द करके वाचायान का घटा चुप हो गया। वहुता के बठ की ध्वनि उठी जय बाबा भुवनेश्वर !

मन की बाछा पूण करा बाग। हाटवाले सडे हा-होकर प्रणाम करने लग।

घर में सामान सजोकर बदन धोकर चपा मालती व इतजार में बठी थी। मालती दुकान बंद करके बाबाधान में प्रणाम करके आ रही है। चपा ने उसके साथ रहना चाहा था। एक युवती को बाबाधान और उजड़ी हाट में रात को भेजेगी वसे छोड़ दे। लेकिन मालती हठान् विगड उठी थी। आज जाने उसे क्या हो गया था। बोली—उस रात तो मेरे बगल में खडी थी तुम। तो क्या बासदेव दुबे की गरदन उतारने से रोक पाई थी? तुम मुझे उखाडो मत मीसी। घर जाओ। तुम्हारे रहने से मेरा नहीं चलेगा। जाओ।

वरुण होकर उसकी ओर ताकते हुए चपा ने कहा तुम आज ऐसी क्यों हो गई हो माला?

मालती ने कहा तुम्हारे परो पडती हूँ मीसी। तुम जाओ।

और फिर तुरन्त बोली टिकली तो है ही। वह मुझे घर तक पहुँचा आएगी।

—टिकली। माला

—समझ गई मीसी। टिकली साथ रहेगी तो लोग मुझे क्यादा बुरा कहेंगे। कह—कहने दो। लोग जो कहें मैं वही हूँ। तुम जाओ चिंता न करो।

सो चपा अकेली ही घर लौटी । बदन धाया । कपड़े बदले और इतजार कर रही है । मालती आ जाए, तो वह गोरामको शयन कराके जप करेगी । चूल्हे में उसने लकड़ी-काठी डाल दी है । धुआं हो रहा है । भाग सुलगे तो भात चढा देगी । भोसार पर पेट्रोमेक्स जल रही है । मालती आकर बुताएगी ।

—बैरागी बहू ! मालती !

पुकार सुनकर चपा चौकी । बसत ने पुकारा । बसत धाया है । मालती के लिए वह शक्ति और उत्कण्ठित हो उठी । बसत को यह मालूम होगा कि मालती अभी भी हाट ही में अकेली घूम रही है, घर नहीं आई तो वह नाराज होगा । जरूर रज होगा । मद नाराज होते हैं । क्या करे वह ? जिद्दी लडकी ने एक बार तो अपना सबनारा किया है फिर करेगी ।

—मालती ! मालती !

लाचार चपा ने दरवाजा खोल दिया ।

बसत ने कहा इसी बीच सो भी गई थी क्या ?

—सो जाऊंगी । गरीब का ऐसा नसीब ! तुमने लीडर होकर यह बात कैसे कही ? लो, बठो । उसने एक आसन डाल दिया ।

बसत बठा । पूछा, मालती कहा है ?

—वह ! —जरा रुककर सोच करके बोली—भाज उसे क्या जो हो गया है वही जानती है । भाज तो वह पागल हो गई ! ओह क्या रूप धारण किया ! रण रगिनी हो जसे ।

—श्रीमती के साथ न ?

—तुमने सुना ?

—सुना नहीं ? सुना । हाट का हल्ला है !

—लडकी बड़ी तेजवासी है । क्या जो है उसके भाग में—

—भाग में अच्छी ही है । सोचा मत । सुनकर मुझे कितनी खुशी हुई क्या कहूँ । अभी तो मैं आया ।

—ऐं ? गरमुच गुग हृण हो ?

—सचमुच ।

जरा धुप रहपर चपा बोभी तुम उत प्यार करत हो बमत सोना वह भी तुम्ह प्यार करती है । भरी हाट म उमने क्या कहा, जानत हो ? हा हा यह बत्ती मेरी प्रेम मार्ग बत्ती है । तो । फिर जरा रत कर वाली—तुम उसस ब्याह कर लो बमत । जात-पात तो तुम मानते नही हो । लीडर भी हो । देग म तुम्हारा नाम होगा । धरम भी होगा ।

बसत हसा । बाला जम्रत क्या है ? कहा तो है । मालती घरर सचमुच ही प्यार करती है तो तुमलोगा की राधा जती बलजिनी ही होगी । सिर घासो उठा लेगी ।

—बहते क्या हो बसत ? घादमी की बेटो कही राधा हो सकती है ?

—हो सकती है । हो सके तो हो सकती है ।

ऐन इसी वक्त मालती बाहरी दरवाजे स घदर कदम रतकर ठिठक गई । कहा, बसत दा ?

—हा रे । आ गई तू ? अच्छा ही हुआ । उमीसे पूछ देखो बप्पव बह उसीसे पूछ देखो ।

—क्या ? मालती राधा हो सकती है या नही ?

—हां । सुन लिया है तूने ? बाहर लडी सुन रही थी, क्यों ?

—सुन रही थी ।

—तो फिर मौसी वो बता दे । तूने हाट में श्रीमती से जो कहा, इसे मकीन नही हुआ ?

मालती ने उसके मुह की ओर ताकने हुए कहा बिगड जाने से मुझे होना-हवास नहीं रहता है बसत दा । बात मैंने बिगडकर ही कही थी । मौसी ने ठीक ही कहा । किसी बाप की बेटो राधा हो सकती है या नहीं यह मैं नही जानती, मगर मुझस तो रोना घोना नही चलेगा । आज उस बेला भी, जब बहुत दिनों के बाद तुमसे भेंट हुई मेरा दिमाग

सही नहीं था। क्या कहते क्या कह गईं ! जुवेदा बीवी का कहा याद नहीं आया। जुवेदा बीवी ने कहा था, किताब की, गीत की बात बिल-कुल भूठ है रे मालती। ये मद जो है, सो सँतान, बदमाश की जात है। ये लोग नरकोयल की तरह बोलते बहुत खूब हैं, पर बसेरा नहीं बाधते। दो दिन पास पास रहते हैं, साथ माथ उड़ते हैं। उसके बाद छोड़कर चल देते हैं। स्त्री कोयल रोती नहीं है। कोए के घोसले में भ्रंशे दे देती है, बस। लेकिन मनुष्या में स्त्रिया ऐसा नहीं कर सकती। रोती हैं। उसने कहा था, मालती, कोई स्त्री गादी न करके अगर मुहब्बत करती है, तो या तो वह गले में फासी लगाए, नहीं तो

मालती चुप हो गई।

बसत उसकी ओर ताकता ही रह गया था। विचित्र चरित्र बसत इस जमाने की नई रोशनी का आदमी—मालती की बातों से उसे कौतुक का अनुभव हुआ। मालती के चुप होते ही बोला, नहीं तो क्या ?

—बुरी बात है। जेल में जवान रुकती नहीं थी, बोल पड़ती थी। यहाँ जीम रक जाती है। खुद को ही अचरज लग रहा है।

—समझ गया। जुवेदा बीवी ने कहा होगा, नहीं तो वेश्या होती है। लेकिन मैंने तो वंसी मुहब्बत की बात नहीं कही है। मेरी इच्छा है तुम आज के युग की एक अनोखी स्त्री बनोगी। पढ़ोगी। सदा दुकान क्या करोगी ? पढ़ लिखकर मेरे साथ काम करोगी। आजकल कितनी ही स्त्रिया लीडर बन रही हैं। गादी नहीं करती, जिदगी भर देश की खिदमत करती हैं।

—नहीं।—अजीब-सी हसी हसकर मालती ने कहा नहीं। वह मुझसे नहीं होगा। खाहिरा भी नहीं है। तुम बल्कि दूसरी चेली मूढो।

—तू कर सकती थी मालती।

मालती बोली, नहीं। नहीं कर सकती। बड़ा सर दुख रहा है बसत दा। मैं सोने जा रही हूँ। जाते समय अपनी वत्ती ले जाना।

दूसरे दिन चपा और मालती ने सबेरे दुकान खोली। चूल्हे पर चाय

का पानी चढ़ाकर बंठते न बैठते गाहर भाया । श्रीमती की दुकां भी खुली नहीं थी । ठाकुर भी तर भाया नहीं । टिकली बंठी था । बट बोली ठाकुर भायद नहीं भाएगा दीदी ।

—नहीं भाएगा ? किसन बटा ?

—बल ठाकुर कह रग था ।

—क्या कह रटा था ?

—कह रहा था इतनी महनत है । मुभस न होगा । तनखा कम है ।

—तनखा तो मैंने नहीं त की है । कुडू बायू ने ठीक की थी ।

—सो मैं नहीं जानती ।

—तू जरा देल तो भा ।

टिकली गई । ठाकुर जरा दूर पर गधेश्वरी बाजार के पास रहता है । ब्राह्मण है । इस बुढ़ापे में गलती कर बंठा है । छोटी जात की एक स्त्री के साथ घर गिरस्ती करता है । रसोई अच्छी बनाता है । कभी दे बाबुआ की कलकत्ते की गद्दी में काम करता था । वहा भी एक बुरी भीरत के चगुल में फस गया । बड़े बड़े कष्ट से उससे विड छुटाकर भागा तो यहा आकर भी वही हरकत करके जात से असंग हो गया है । कोई भी उसे अपने यहा नहीं रखता । सामाजिक भोज भात में भी उसकी गुजाइश नहीं । अब तक यहा वहा दावत-बावन में पकाता चुनाता फिरता था । और कुडू की दुकान में बंठा रहता था । कुडू का प्रिय पात्र है । कुडू गाजा पीता है । गाजा यही ठाकुर उसे बनाकर देता । मालती की दुकान खोलने के बाद उसने उसे यहां भेज दिया है । समाज में न चले, घर में न चले चाप चाय की दुकान में कोई घर्षान होगी, यह कुडू को मालूम है । भादमी बुरा नहीं है । अच्छा ही है । अचानक उसके दिमाग में तनखा का कीडा हिला है । इस जमाने का धरम ही यही है ।

इधर गाहक आया । दरअसल ये लोग बलगाडीवाले है । रात को गाडिया लिए चल रहे थे । यहा गाडी खोलकर आराम कर रहे हैं । अभी चाय-चूय पी पा कर फिर चल देंगे । कि यहीं गधेश्वरी बाजार में

सरोद फरोस्त करेगे। हाट मे गाढी रख कर सो गए। दिन भर यहा हाट-बाजार करके खाना हो जाएगे। हा सकता है, रजिस्ट्री आफिस म आए हा। कोई पट्टा-बवाला हा। घर दूर हो। रात ही आ पहुचे हैं कि पहली ही बला म काम-काज करके लौट जाएगे।

भुवनपुर का रजिस्ट्री आफिस हाट के सामने ही है। सडक के उस ओर—ठीक सडक पर। सच पूछिए तो रजिस्ट्री आफिस भी हाट मे ही शामिल है। फक सिफ लाइन का है। हाट के उस तरफ रास्ते के ऊपर पाच-सात कमरे म रजिस्ट्री आफिस के दलाल लोग काम करत हैं। सिनास्त करते हैं। हा दस्तावेज पर गणगाय नम की जगह थी भुवने-स्वर सहाय लिखने हैं। बहुत लोग बाबायान म जाते हैं। प्रणाम करके बहते हैं बाबा साक्षी हैं, राजी-सुगी बेचा है, बाल बच्चो के साथ भोग करो। कोई कहता बाबा की किरपा स विक्री के दाम म ही तुम्हारा काम पूरा हो। दुख हो, तो दूर हो। भ्रभाव हो तो मिटे। उसक बाद प्रसादी खाकर सरोवर म पानी पीकर घर जाते हैं। आजकल एक कुआ भी खुदा है। सरोवर का पानी गदा हो जाता है। वह पानी कोई पीता नही लेकिन उसका स्पग करता है।

मालती ने घपने से चाय बनाई। चार गाहक थ। चार प्याला चाय देकर बोली विस्कुट दू ? अच्छा विस्कुट है।

—बिस्कुट ? खर चार-चार दे दो, सिघाडा नही बना है ?

—नहीं। बासी सिघाडे गरम करके हम गाहको की नही देते हैं। बस, भव बनेगा। घंटे भर म हो जाएगा।

वह मौसी के साथ जुट गई। निमकी सिघाडे की विक्री सवेरे ही होती है। जल्दी-जल्दी बना लेना है। तवीपत ठीक नही है। कल रात नौद नहीं आई। भोर भोर तक जगी ही रही प्राय। तदा-सी आई थी जरा मगर मट्टज तदा। बितरे बितरे सपने घात रहे।

कल रात बसत को बे बातें कहकर मालती कमरे का दरवाजा बन्द करके सो रही थी जाकर। मन कैसा तो हो गया था। अभी अभी गुस्ता



हुमा था, फिर तुरन्त उगवा मन मागे रवाई से टूट पड़ा था। फिर तुरन्त मन दुःखान की घोर जा सगना था। यह रजिग घोर रवाई दोनों को भाट फेंकना चाह रही थी। घोड़ी देर म घाय ही घाय मन उगग हा उठना था।

—तुम घाय ही जुट पड़ी !

मालती मदे म पानी डालकर गमकीत का भग्न तैयार कर रहा थी। उसने नजर उठाकर देगा। ठाकुर बोल रहा था। ठाकुर घा गया। उसकी मौह तिम्रुट गइ। मागे मा की कसवासी धयस्या मभा भी है। रहता है। एवाएव गुम्गा हो घाने सगा। भवें तिम्रोदे ही वह बोली क्या करती गाटक घाए। टिकली ने कहा, तुम भाज नहा घाघोगे।

तनखा ?

रव गई। ख्याल हो घाया गाहका के सामने तनखा के लिए हुज्जत न करना ही ठीक है।

वपा ने कहा छोडो भी माला। ये बातें फिर हागी। सो, काम गुरू कर दो भया। इतनी देर करके।

ठाकुर ने कुरता उतारकर रस्ती का मलगनी पर डालते हुए कहा, तनखा की बात मैंने नहीं कही है। टिकली ने गलत सुना। कल रात स ही बुखार-सा लग रहा है। इसीलिए कहा, कल तो मगल है। शट नहा है। कल शायद। सर—छोड दो।

मालती मदा मलना छोडकर मपनी जगह पर घा बठी। उसका मन फिर उदास ही उठा। बसत न कल रात उसे उसके धाद भी पुकारा था।

—मालती ! सुनो ?

उसने जवाब दिया नहा बसत दा। वह सब बातें मैं नहीं सुनती। लीडर मैं नहीं हूगी। तुम्हारा वह प्यार मुझे गवारा न होगा। मैं एक मामूली स्त्री हू। तिस पर जेल ही आई हू। तुम बहुत बडे लीडर हो। तुम लौट जाओ। मपनी बती ले जाओ। कहा तो, मेरी तबीयत ठीक

नहा है।  
 इसका बाद बसत चला गया था। इसके कुछ ही क्षण बाद चपाने  
 उसे धावाज दी थी।

—कितने पैसे हो गए ?

—चार प्याला चाय। सोलह बिस्कुट। आठ आने।

—बिस्कुट पैसे में एक ?

—हां।

एक रुपय का नोट बढ़ाकर उस आदमी ने कहा दो बडल बीड़ी।  
 कुल कीमत काटकर बाकी पैसे मालती ने रख दिए। वह बोला—

सीफ-मुपारी, कुछ नहीं है ?

—घरे हा।—मुपारीवाली तश्तरी निकालना भूल गई थी

मालती। अभी भी मन उमका कल की ही बातों में धूम रहा था। बात  
 वह कल की ही नहीं आज की भी बात है। और सिर्फ आज की ही क्यों ?  
 भावी कल की भी है। परसा की भी। जलखान के पहले घबके को  
 समाप्तने के बाद से वह बसत की ही बात सोचती रही थी। बीच-बीच  
 में जुबेदा उससे कहा करती, जल से बाहर जाने के बाद खूब होगियारी  
 से चलना मालती। खबरदार—बहुतेरे लोग फुमलाएंगे तुम्हें। खूब सख्त  
 बन जाना। शान्ति करनी ही ता घर-छौर बाघकर करना। सही मानी  
 में शादी। नकली न हो जाए। और घर देह बचने की ही नीबत आ जाए  
 तो गांव में मत रहना। गहर चली जाना। प्रेम के नाम पर न भूलना।  
 खबरदार। वह हसती थी। कहती थी मेरी गादी से हुई हवाई है। वह  
 भी जेल गया हुमा आदमी है। जुबेदा बीवी ने उसकी कहानी सुनी थी।  
 जानती थी। सदेह से वह बोली वही जिसने एक दिन खेता के रास्ते  
 से जाते हुए तुम्हें छाती से लगा लिया था ? कहा कि छोकरा बिरहमन  
 है। लकचर देना है। जरा रुककर उसने हसते हुए कहा तेरा जल  
 घोर उसका जल एक नहीं है मालती। वह जेल से बाहर निकलेगा तो

उसका काला रंग भी गोरा हो जाएगा। इन्द्रजित बड़ेगी। वह तुम्हें शादी करेगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। मालती को रजिग होती। कहती, तुम उसे जानती नहीं हो जुवेदा दीदी। जुवेदा ने इसपर कोई जवाब नहीं दिया। रात को लेटी लेटी वह कल्पना करती थी, बसत उसे देखते ही दोनों हाथ बड़ाकर अपनी छाती में खींच लेगा। कहेगा मैं तेरे इन्ज्जार म बठा हू। चल शहर चलकर रजिस्ट्री कर आए। फिर बद-खाने के मोटे सीतबो और ऊंची दीवारों के अंदर वह कितनी कल्पनाएँ करती थी। ब्याह के बाद क्या करेगी? इरादा तो लीडरी ही करने का था। लेकिन उस कल्पना से अजीब ढंग से जुबदा और नीहार दीदी की नाना कल्पनाओं की कहानी आ मिलती। बाधा बघन, पाप-पुण्य—याय अयाय सब कुछ को तोड़ फोड़कर चूर चूर किया हुआ वामना-वासना का चाहे राज्य कहिए चाहे ससार।

जुबदा बीवी सबसे समझदार थी। सबसे ज्यादा जाननेवाली। कानून जानती थी आदमी के मन को समझती थी। पंडित जसा विचार करती थी। वकील-सा तक। बसत स भी अच्छा। उस बार वह जो एक बड़े आदमी की दूसरी बीवी अपनी सोत के लडके को जहर देकर जेल आई थी उसी बार जुबदा बीवी ने उससे कहा था। शाम के बाद जुबदा बीवी की किस्स की महफिल जमी थी—बुरी-बुरी कहानियाँ कह रही थी। वह बड़ आदमी की स्त्री दूर बठी सुन रही थी। वह अचानक उठकर आई और कहा—कमी हो जी तुम? ऐसे ऐसे किस्स सुना रही हो?

उसके मुह की तरफ ताककर जुबदा जरा देर के लिए अवाक रह गई थी। उसके बाट उसकी भाँसें जल उठी थी।—तुमने कभी नहीं सोचा? नहीं? मन ही मन?

—नहा।

—भूँ। दूसरी बीवी, जो सोत के बटे को जहर तिलाकर मारती है वह एमा नहीं सोचती? हाथ री मरी सती। पुण्यवती। तू जप करती

है। तेरे इष्ट देवता हैं—उह गवाह रखकर बोन कि नहीं सोचा ?

—नहीं-नहीं नहा। वह मेरी तरफ बुरी नजर से ताकता था इसीलिए

भूठ। भूठ। तू चाहती होगी, वह नहीं चाहता होगा। शायद हा कि बाप स कहन की घमकी दी हो, इसीलिए तूने उस जहर खिलाकर मारा है। दस, मैंन अपन खायिद को मारा है इसलिये कि दूसरे से मुहम्बत करती थी। तू तो मुभसे नी पापी है। अपने प्रमी को नहीं पाया, इसलिये जहर देकर मार डाला।

वह औरन कसी तो हो गई। एक कोने म अपनी खाट पर औधी पडकर लट गई।

जुवेना न कहा, पाप। पुण्य। बाह का पाप-पुण्य। उसके बाद उसने आदमा के मन के चेहर के बारे म जावताया, उसे सुनकर सभी सिहर उठी थी या नहीं, मालती यट नहीं जानती। लेकिन सबने खुप चाप सुना था, बहुतरी मुसकरा रही थी पर मालती सिहर उठी थी। अवाक भी हुंर थी। जस जुबदा सत्य ही वह रही हो।

बाद मे उसन जुबदा से बेह वान कही थी। एकात म गात अवसर पर। जुबदा हसी थी। कहा था, तेरा मन बडा कोमल है र मालती। बडी सिगु है तू। आदमी का मन सुख के बगर नहीं बचता। सुख के लिए पाप पुण्य का विचार वह नहीं करता। विचार नहीं करना चाहता। यही दुनिया का नियम है। मनुष्य न पाप-पुण्य को चुना है बनाया है। दुख सहकर पुण्य करके रोते हुए जिह सुख मिलना है उह सलाम। पाप करके लाज से भय से जहर खाती है फासी लगाती है और फिर पुण्य करने के दुख को न सह पाकर नी फासी लगाती है जहर खाती है। यह भी जसा भूठ है वह भी बसा ही भूठ है। देख स, मैंन अपन सुख के लिए अपन पति को जहर दिया है। बडे आदमी की यह बोधी और भी पापी है। तू पापी नहीं है। अपने बाप को बचाने के लिए अचानक खून कर बठी। मैं अगर जज हानी ता तुझे छोड दती।

तू फिर भी दागी हो गई। बाहर जान के बाप इतना ही याद रखना कि किसी भी दुःख मत देना। दुःख करने मुझ की भी तलाश मत करना। और सुख के लिए पागल होकर मुझ की भी लाज मत करना।

ढाई साल मगत तक बामना की प्यास लेकर वह लौटी थी। रोए रोए म बामना। तबिन यह अण्ण भागा भी थी उस कि बसत न बेकरार हो हाकर उसका इतजार किया है। मारा कुछ अजीब तरह स गोलमाल हो गया लेकिन। छूटन के बाद सात घाट दिन तक—जब तक बसत नहीं आया था उसकी भागा उसका सपाठीक था जेल-खाने के हवा-पानी से तयार हुए वासना के राज्य स भी कोई विरोध नहीं था। भुवनपुर म बदम रखकर वह चकित हो गई थी कुछ भी चीहा नहीं जाता। सब बदल गया है। ठीक बदल नहीं गया है सब भवमक, झलमल हो उठा है। उसकी भी उम्मीद और चमक उठी थी। मौसी ने कहा था बसत भी चमक गया है। कल सबेरे भी जब बसत ने ब्याहन करके प्यार की बात कही थी तो उसने नशे म उसपर हामी भरी थी। लेकिन कल तीसरे पहर हाट म उसने हसत हसते जो बातें उस आदमी से कही उससे उमे एक आनक हो गया। जो भागा उसकी चमक उठी थी वह स्याह हो गई। गायद हा कि बसत देवता हो, गायद हो कि वह बहुत पुरा हो। दोनो ही दृष्टि स हाथ बढाना उसकी पहुच से बाहर है।

— ब्याह मैं नहीं करूंगा। इस बात पर खेत वाली उस दिन की बात याद आ गई।— मैं तुम्हको प्यार करता हू। जात-पात मैं नहीं मानता। बाप के मरते ही मैं तुमसे ब्याह करूंगा।'

खच से कलेजे म जस काटा चुभ गया।

वासदेव दुबे पर हसिए का वार करके उसके लहलुहान शरीर का दखकर जैसा एक निष्ठुर आघात लगा था वसा ही आघात लगा। बदलाने मे जाते हुए जसा डर लगा था, वसा ही डर लगा। अदालत म फसला सुनते वक्त वह जसी निढाल हो गई थी वसी ही निढाल हो गई।

इसीलिए हाट टूटने के बाद रात को दुकान बंद करके मौसी का घर भजकर वह बाबाथान के उस पीपल की घोर गई थी, जिसपर बूच की लतर लतराई थी। एक टाच ले गई थी। एक झुंझरा। झुंझरे से बांधे हुए ढले को तोड़-तोड़कर फेंकने के बाद ही वह घर लौटी थी।

भुवनपुर की हाट में जाने कितने का बाधा डेला गिर पड़ता है। बाबा कहते हैं, मनोकामना पूरी नहीं होगी। डेला माटी में गिरकर घूल में मिल जाता है। लाभ की उम्मीद में आकर कितने लोग नुकसान उठाकर लौट जाते हैं। उसका भी डेला जाए।

घर गई तो बसत को लौटा देने के बाद भी वह निश्चित नहीं हो सकी। रोने की इच्छा हो रही थी रोई नहीं। कभी-कभी बेहद गुस्सा आ रहा था, उसने उसको भी सभल लिया। कभी जी में आ रहा था मर जाए। परंतु वह भी मानो नहीं हो सकता। ठिठकना पड़ता। डर लगता।

मौसी ने आकर पुकारा। दरवाजा खोलकर वह फिर लेट रही आकर। मौसी उसके सिरहाने बठ गई। सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, माला !

मालती ने जवाब नहीं दिया।

मौसी बोली लिखना पढ़ना सीखकर—बसत ने जो कहा—लीडर नहीं बन सकोगी ?

—नहीं !

फिर कुछ देर के बाद मौसी ने कहा इससे तो हम दोनों नवद्वीप चल चलें मौसी। मौसी और बहिनचटी, मा-बेटी

मालती ने बीच ही में टोककर कहा नहीं !

मौसी ने फिर कुछ देर के बाद कहा तो क्या करोगी ?

—जो कर रही हूँ। भुवनपुर की हाट में खरीद-बेची करके ही दिन कट जाएंगे मौसी !

—सारी रिदगी ?

—हां, मौसी। सूय मुनापा बरूगी। पस जमा बरूगी। हसूगी यलूगी। बट जाएगा।

मौसी न फिर कुछ नहीं बहा।

मालती न पूछा बती बह स गया।

—हू।

—बसो अब ता लें। भूष लगी है। बस एक बती सरीदूगी।

निमकी सिपाखा तिकालने की गथ भाई। डालडा की गथ। घावाज। कडाही म डालडा उबल रहा था।

दो आदमी हाट की चौहद्दी म आए। अभी भी उस धोर की दुकानें नहीं खुली थी। अभी बहुत सधेरा है। हाट खो-खो बर रही है। जमादार बठा भीम रहा है। हाट के दिन वे भरपट पीते हैं। गुड की दुकान मे भाडू जग रहा था। अजीब है आज श्रीमती की दुकान अभी तक खुली नहीं है। कुछ हनुमान गुड की छत पर उछल-कूद रहे थे खेल रहे थे। पड पर बठा नर रह रहकर चिल्ला उठता था।

मौसी ने कहा टूलूचौधरी आ रहा है। साथ का मुवक्कल भारी भरकम लग रहा है। तुम इसे जानते हो ठाकुर ?

ठाकुर न देराकर कहा, नहीं। बाहर का आदमी है।

—भारी भरकम लगता है न ?

—हां।

—इधर ही आ रहा है।

—चाय पिएगा। वही तो, उगली दिखा रहा है। टिकली, बेंच को पोछ द। ठीक से।

मालती ने गौर किया। हा, टूलूचौधरी ही तो है। महा आने के बाद से मालती ने उसे नहीं देखा। टूलूचौधरी रजिस्ट्री आफिस म दस्तावज लिखता है। महा की जगह जमीन की खबर खतियान दाग नबर—सब उमके हाथ मे है। मामले मुकदमे की पैरवी भी करता है। उमर

वाफ़ी हो गई है। अमत उसे टूलू पढा कहता था। आज के युग का अमनी पढा। विषयेश्वर का पढा। रजिस्ट्री आफिस विषयेश्वर का मंदिर है। आदर कम हो जाने से भुवनेश्वर अब विषयेश्वर होकर आए हैं। भूतों सरकार को भी यही कहना था।

भूती और टूलू के मुह पर ही कहता था।

उन कहता, अरे रुक भी बाबा। नाबू ठाकुर के घर म बठकर लीडरी का दफ्तर खोला है। केंदुली मले का यही पढा था, इसीलिए उस घर का कागज तयार हुआ था। खतियान निशान नबर—सब मेरे होंठ पर हैं। तेरे बाप ने हाथ पकड़कर कहा मैंने लिख दिया। श्रीमन्त ने अपने कागज की लिखाई दो रुपये दी थी। तेरे बाप से पैसा नहीं लिया। आज मुझे पढा क्यों नहीं कहेगा।

अचानक उसे खोका ठाकुर की याद आ गई। उसका गीत गाना याद आ गया। अपने बाप के साथ उसका गाजा पीना याद आ गया। और फिर याद आ गया घरनी चाचा का कहना—अरी विठिया, कहा कि वह दस्तावेज पर सही बनाकर चला गया।

असत कहता था, पागल है, उल्लू।

उस्ताद कहता, गधा है। दिमाग मे गोबर भरा है।

टूलू चौधरी और वह भला आदमी दुकान के अदर आया। टूलू न कहा चाय की दुकान तुम्हारी बड़ी अच्छी हुई है मालती। मुझे पहचान रहे हो न ?

गाहक आने पर उदासीनता में भी मालती को सजग होना पड़ता है। इन कई दिनों में थाड़ा थोड़ा करके इसकी आदत पड़ती जा रही है। वह मुसकरा कर वाली पहचानती कैसे नहीं। आप टूलू चाचा हैं।

—ठीक पहचाना है। हम चाय दो। और खाने को क्या बना है ? निमकी सिंघाड़ा ? वही लाओ। ठाकुर भी अच्छा मिल गया है। ठाकुर, ये बदवान शहर के आदमी हैं। अच्छी तरह से बनाओ। समझ गए ?

मालती ने खुद आकर बेंच को साफ कर दिया। जहाँ चाय बनती



है, वहाँ गई। टूलू चौधरी और बदवान के वह सज्जन घीरे घीरे घात करने लगे। हठात टूलू बोल उठा, मालती भच्छी सिगरेट कौन-सी है ? दी।

उस सज्जन ने कहा—गाल्डपलेक। टिन है—गुला है या मरा हुआ ?

—पूरा टिन भी है।—चाय म दूध मिलाते मिलाते मालती ने कहा। दाप्याला चाय लाकर दी। फिर सिगरेट का टिन लाकर दिया। टूलू न कहा, मालती ये सज्जन बसत की तलाश म धाए हैं। बसत तुम्हारे यहाँ है क्या ?

चकित होकर मालती ने उसकी तरफ देखा। तुरत उसे गुस्सा हो आया। भवो पर बल पड गए—मेरे यहाँ ?

—हाँ। गाडी से उतरकर ये सीधे गोपा के बाप के पास गए थे। उसने कह दिया यहाँ नहीं है। कहा है नहीं जानते हैं। बसत ने घर भी बनाया है। वहाँ भी गए थे। वहाँ भी नहीं है। वही श्रीमती ने बताया, बसत तुम्हारे यहाँ ठहरा है।

खासे कठिन स्वर मे मालती ने कहा नहीं। मेरे यहाँ क्यों ठहरेंगे वे ? हा, बल धाए जरूर थे।

—हाँ हा, वही बल दुकान मे आया था। श्रीमती ने कहा, नई पट्टामेक्स खरीद दी है। फिर—

—हाँ, साभ के बाद भी एक बार गए थे। मगर मेरे यहाँ क्यों ठहरेंगे ? तुम नाराज क्यों हो रही हो ? पहले तो तुम्हारे ही यहाँ बसत का भड्डा रहता था। तुम्हारे घर वह भात तक खाता था।

मालती स्तब्ध रह गई। यह चौधरी कहना क्या चाहता है ? टूलू ने कहा, नहीं खाता था ?

मालती ने कहा, खाता था। रहता था, मेरे यहाँ भड्डा था उसका।

—वही तो कह रहा हूँ।

—उस समय उसे भ्रच्छा लगता था हम लोग को भी भ्रच्छा लगता था—

—अच्छा लगता था ?

—नहीं, प्यार करती थीं उम। आता था रहता था खाता था।  
अब अच्छा नहीं लगता प्यार नहीं करता। कत आए थ चले गए। मगर  
आप चाहत क्या है कहिए तो ?

भले आदमी न कहा नाराज तुम नाहक ही हो र्नी हो। मैं महज  
यही जानना चाहता हू कि वह ठहरा कहा है।

—वह मैं नहीं जानती।

—तुमसे कहा नहीं है ?

मालती को अचानक याद आ गया कि उसन कहा था गोपाल के  
यहा ठहरा हू। फिर भी वह बोली, नहीं।

टून न कहा प्यार म आच रुस आ गई मालती ? बल ही तो  
तुम्ह नइ बत्ती खरीदकर द गया मुना मैंन।

—हा गया आप लागा का ?

—ऐ ठाकुर, दा निमकी दो सिघाटा और दा।

भले आदमी न कहा, तुम जरा उमस कह दना बदवान क  
बीच ही म टाककर मालती न कहा, माफ कीजिए मैं किसीसे कुछ  
नही कह सकूगी।

—कहन स उमका भला होगा।—

—अपना भला वह आप देखेगा। उमक मन-बुरे स मुझे कोई  
वास्ता नहीं।

सबरे महर सारा समार जस बडवा हा गया।

कडवा ही मन लिए वह बठी थी। गाहक आ जा रहे थ। आज  
प्यादातर रजिस्ट्री आफिसवाल लोग थ। मालती चुपचाप बठी ही थी।  
इसी बीच एक अजीब घटना घट गई। हनुमान सब गुड़ की छन पर और  
आसपाम के पडा पर खेल रह थे। उनम से दो बच्चा ने उछल-कूद करत  
करते विजनी के तार का पकड़ लिया और खींच उठे। उमके बाद  
घण्य से भाटी पर गिर गए। भर गए। मा दौड़ी आई। ओह, उसकी

वह तड़प, वह धाबुलता ! हिलाया डुलाया, दुलारा—उसकी वह धाबुलता देव मालती की आंगो म आंगू भर आए । आतिरवार मा उस मरे वच्चे को ही छाती स लगाकर एक हाथ स पड पर चढ गई ।

बटे पटे उठे लगा, वह भी ठीक इसी तरह मुहब्बत की लाग को कलेजे से लगाए बठी है ।

—अजी यह चाप कि क्या कहत हैं—है ? —एक युवक और एक युवती । मालती के अचरज की सीमा नहीं रही । बल का वही लछ मनवा था और वही वाली वाली सी नडकी जो कल चाप की कीमत सुनकर ही भाग गई थी ।

—तुम लछमन हो न ?

—हा ।

और तुम तो बल चाप खरीदने आई थी । दाम सुनकर भाग गई थी ।

लछमन ने कहा, नहीं । यह कल मुझको देल करके भाग गई थी ।

—तुमको देखकर । क्या ?

—यह मरी बीबी ह । तीन महीने से मके भाग आई है । बल चाप खाने की इच्छा हुई थी । खरीदन आई और मुझे जो देला लछमन मुसकराकर चुप हो गया ।

मालती ने कहा इसीलिए तुम गायद इसके पीछे-पीछे दौड पडे थे ?

—हूँ । अब इसे अपने घर लिए जा रहा हूँ । इसीलिए कहा चाप खा लो । बल यही खाने आई थी खा नहीं पाई ।

प्रसन कौतुक की खुशी से पल मे मालती का चेहरा हसी से तिल उठा । मालती अकेली ही नहीं चपा हस उठी ठाकुर हस उठा, टिकली खिसखिला उठी । वह नडकी गम स घूघट काढकर उधर को मुह किए खडी हाकर धीम से बोली नहीं खाऊगी चाप । तुम चलो !

मालती ने कहा, नहीं-नहीं । बठा । तुम दानो जने बठो । अदर आ जाओ । ठाकुर बना दा चाप । सब काम छोडकर चाप निवाल दो ।

उस बेला के लिए सब कुछ तो बनाया ही हुआ है।

—यस दस मिनट। अभी देता हूँ।

वह लडकी लेकिन हरगिज अदर नहीं आई। दुकान के एक ओर एक सूटे का थामकर खड़ी रही। मालती हसमुख सी घूसभरी बिना हाट के दिन की हाट की ओर ताकन लगी। जहा पर हनुमान का बच्चा मरा था उस जगह से उसकी नजर ही नहीं हट रही थी।

घूप भलमला रही थी। सवेरे पूरब क कुछ बरगदा की छाया पडती है। सूरज पेडा के माथे पर आ गया था। थोड़ी थोड़ी गरमी लिए घूप मोठी भी लग रही थी। मालती का मन भी खुशी से भर गया था। वहा न तो टूलू खीघरी था, न बसत। काई नहीं। उसके मन के एक कोने में बासन्त दुब का सर पडा रहता है। वह खवा ही हुआ है, सडता नहीं है। भुवनश्वर थान से लाखो लाख डेल गिरकर गुम हा गए लेकिन बासन्त का माथा उसके मन से न ता खोता है, न ही वह सडता है। वह गजब ढग से जब-तब उसके मन की निगाहा क सामन आ जाता है। वह गाल सर गोया ढालवें से लुडककर बीच म रुक जाता है। आज वह माथा भी नहीं आ रहा है।

भुवापुर की हाट का महातम मरत्य है। अभी सुख अभी दुख। अभी दुख अभी सुख। आज मुनाफा, बल नुकसान, कल नुकसान, परसो लाभ। आज जुडी, बल फाट यही है भुवनपुर की हाट। आज फटकर जा बल नहीं जुडना उसका नसीब जला हुआ है जानो।

धीक उठी मालती।

घर घर आवाज करती हुई तीनक जीप गाडिया रास्ते से मुडकर बड पीपल की बाहर निकली जचो पर से उछलती-सुटकती हाट में घुस आई। सामने की जीप से एक आदमी रास्ता दिखा रहा था। जीप रुक गई। उसके साथ पीछे की भी।

उनपर से टपाटप हवाई शट और पट पहने देशी साहब लोग उनर पडे। आठ दस आदमी।

—देखो चाम है ? जल्दी करो ।

एक ने आकर कहा, अच्छे पिचे प्याल हैं ती ? दरें !

मालती ने हजबडा कर कहा, नये हैं सर । निकाल देती हू ।

यट 'सर' शब्द उसने जलपान म सीखा । पोगाक, रग-डग देखकर समझ गई ये सरकारी कमचारी ३ ।

चाय के प्याले तरीदे हुए थ । दुकान म रबध रहते हैं । टूटते ही रहते हैं प्याले । पिचे प्याले निकालकर तह स्वय ही घोने बठ गई ।

एक न पूछा वह बड-धीपलनला तो भुवनेन्वर का है ? ठाकुर ने कहा जी हा ।

प्याले घाकर मालती न मज पर सजा दिए । चाय का पानी ठीक से उवला नहीं था अभी । आगे बन्कर बोली—बढिया बिस्कुट है सर लाऊ ?

सभी लोग आश्चय से उसकी ओर ताक रह थे । मालती गम स जरा लाल हो उठी । मुह को नीचे झुकाए बोली, ल आऊ ?

—बया, बिस्कुट ?

—पिन अराहूट, सकस

—बाह ! चार चार दो ।

काच के बतन से मालती बिस्कुट निकालने लगी । मालती के बोलने-चालने का ढग देखकर चपा अवाक हो गई थी । जरा भी भिन्न नहीं । भिन्नक तो खर उसे नहीं है । जल म उसने जल सुपरिटेण्डेंट को देखा, कभी-कभी जिलाधिकारी भी आया किए । उन सबसे बात करने की आदत है उसे । बिस्कुट निकालकर उसने ठाकुर से कहा ठाकुर दोनों बच निकाल दो । साहब लोग बठें ।

इस बीच और लोग भी आए । टूलू चौधरी भी था ।

साहबो ने चाय पी । दाम वाम चुकाकर बोले, तुम्हारी दुकान अच्छी है । साफ सुयरी है । उस पार सेटलमट का कप आ रहा है हमारा । दुकान को ठीक से करो ।

साहब लोग जीप लिए उस बड़-पीपल के बन की तरफ चले गए ।  
दुकान के सामने से भुवन सरोवर के किनारे किनारे बाल बनाने वाले  
चाँतरो को मडमडाते हुए धरधराती हुई जीपें निकल गईं ।

मालती खूब खुश हो गई । साहब लोग खुश हो गए । उसने जरा  
भी भूल नहीं की । जरा भी नहीं धरवाई ।

ठाकुर ने कहा, मौसी, अब आदमी बड़ा ला । बड़ी भीड़ होगी ।  
मालती सोचन लगी, भेज कुर्सी हो तो अच्छा । जगह कुछ और ज्यादा  
हा, तो अच्छा हो ।

टिकली थी नहीं । वह लछमन और उसकी बहू से बतियानी हुई  
चली गई थी । लौट आई । बोली मजे की खबर है मालती दी । छिरी  
माती ने दुकान क्या नहीं खोली है जानती हो ? वह, कौन तो उसकी  
हाती है अपनी—विधवा है कम उमर की है उसीको लाने के लिए  
गई है । दुकान में बठाएगी ।

मालती हसी । लेकिन उसके लिए उसके मन में कोई हलचल नहीं  
हुई । वह अपनी दुकान की सोच रही थी । अच्छी-सी, सुदर-सी दुकान ।

दो साल के बाद ।

भुवनेश्वर की हाट में सोमवार का हाट के दिन सबेरे । हाट तीसरे पहर लगती है लेकिन सबेरे से ही मानो जम गई । बहुत से लोग आ पहुँचे । कम से कम सौ डेढ़ सौ दुकानों भी लग गई । लेकिन शाक-सब्जी का बच्चा बाजार नहीं । ताड़ के पत्तों की चटाई सूप टोकरियाँ नहीं आइ थी । खसी मुरगी भी नहीं पर कटा पाठा एक डाल से लटक रहा था । कार पीता का फेरीवाला नहीं पहुँचा । खाने पीने की दुकानें खुल चुकी । चाय की दुकान में बेहद भीड़ । धरनीदास वगैरह ने कपड़े की दुकान खान दी । पान बीड़ी सिगरेट की दुकान लग गई—फलवालों ने बक्सा पर फल सजा दिए ।

हाट की शकल-सूरत भी बदल गई है । हाट के बीचोबीच चारों तरफ स्थायी दुकान घर बन गए हैं । इट की दीवारें पक्की छत । पक्की दीवाल टिन की छत । मिट्टी की दीवाल और टिन या फूम का छप्पर । एक-दो नहीं ।

टूलू चौधरी ही गिन रहा था । गिनकर हरिपुर के एक समय के धनी जमींदार पाटू चक्रवर्ती से कहा तेरह नहीं बारह । फनवाले और पराठा-तरकारी की जो दुकान है न वह वह एक ही है ।

बीच में दीवाल ज़रूर है पर छप्पर एक ही है। किरायेदार दा हैं मालिक एक ही है। हमारे पडा थे हरी मिसिर—उहीकी स्त्री के गहन पाते बेचकर यह घर बना। प्रतूत ठेकेदार ने ठीक एक महीने में घर खड़ा कर दिया। उसी घर को किराय पर उठाकर बेचारी विधवा बच गई। दोनों दुकाना से तीस रुपया किराया आता है। एक प्लाट—भुवनपुर मोजे तीन सौ चार छतियान का हजार पतीस नवर प्लाट।

पाटू चौधरी पेड के नीचे एक मोटे पर बठा था। नया मोठा। उसके कमचारी खज़ूर के पत्ते की चटाई पर बठे थे। खड़ा था टूल चौधरी।

सब लोग सटलमेंट के मामले के लिए आए थे। किसीका कागज दिखाने का नाटिम गया। कोई भगदने आया था। कित्ता की जमीन दूसर के नाम पर दज हो गई है। कुछ सूधे से लाग, कुछ बड पेचीदे दुनियादार। पेचीद स्वभाववाले सपत्ति को बनामी करान आए थे—दूसर एक पक्के दुनियादार स किसी जमीन के लिए उलभन की सखन गाठ लगाकर आए थे। व लोग अभी स सावधान हो रहे हैं। जमींदारी गई, जमीन भी शायद पच्चीस-तीस एकड से ज्यादा नहीं रहणी। इसलिए अभी से उमे बेटा बहू लडकी नाती के नाम स अलग अलग दज करा रह हैं। जमींदार लोग, खास परती जमीन जो जमींदारी हुक्क के साथ जुडी है, खेत, पाखर, नाला जा भी बन रहा है सलामी ले-संकर बदोबस्त कर द रहा है। नहीं ता जमींदारी के साथ साथ यह सब भी सरकार के कजे में चला जाएगा। पुरानी रसीद पर पुराना स्टाम्प लगाकर लिखे दे रहा है। खेतिहर मुकदम की तरह निगले जा रहे हैं। जिन खेतिहरा को जमा-जोत है उनकी हालत इस समय अच्छी है। धान का भाव दस रुपय स नीचे नहीं गिरना। आसाड से बढत बढत सानह सनह अट्टारह पर पहुचा है। उहे गजब की भूल है जमीन की। न टीला देखता है न टेकरा, नदी-नाला भी नहीं लेता ही चना जा रहा है। उह भी कानून मालूम है। जमींदार स कुछ कम नहीं समभत। उह भी पच्चीस-तीस एकडवाली



समस्या है। वे भी सेटलमेंट आफिस आए हैं। उनकी आखो में चमक है, बातों में उमंग। टोठों पर हसी। जो बेचारे निरीह हैं उनका आख मुँह देखत ही समझ में आ जाता है। सका भरी डरी हुई नजर। सारे शरीर में बेबसी की असहायता की एक मायूसी। ये आज दा सात से यहाँ तक वे घिस रहे हैं। शुरू शुरू भीड़ कम थी, अब ज्यो-ज्या दिन जा रहे हैं, त्यो-त्यो ज्यादा लोग आ रहे हैं। तारीख पर तारीख पड़ रही है। पाच पाच सात-सात दिन पर आते हैं। बहुतेरे तो बिना तारीख के भी आते हैं। सेटलमेंट के कमचारी कहते हैं पहाड़ जसा काम है हाथ से आखिर कितना सा ठेला जाएगा। हम टायी तो है नहीं जानवर नहीं हैं—मादमी है। लाग कहते हैं सब दाव-पेच हैं।

दाने ही सब है। इन दो सत्यो की खीचातानी में भुवनपुर की हाट में रोज हाट जसी भीड़ लगती है। भीड़ के तलवों की घिसाई मास-पास घास की निशानी तक न रही। हाट के बीच में गड्ढा हुआ जा रहा था इसलिए इट बिछराकर जाड़ा पर सीमेंट लिया गया है जिन दुकानदारों की अपनी जमीन थी उन्होंने स्थायी घर बना लिया है। पछान दे दावू के यहाँ के हिस्सेदारों ने अपनी अपनी जगह पर मकान बनाकर किराया लगा लिया है। उनमें दुकानें लग गई हैं। माड़ा वाला सजूर की घटाईवाला अब रोज आता है। पाच-स मोढ़े राठ बिन जात है। सजूर की घटाई लाग बटने के लिए सरोत्त है। सक्ठी याल के यहाँ कुर्सी तिराई बिनती भी है किराय पर भी लगाई जाती है।

पाटू बचवर्ती का यह माड़ा सक्ति पर न साया हुआ था। गान्धि निकलन का यह माड़ा। टूटू चौधरी की भी मुख बल निवर्ती है। सब फुटिल तो यह मरममट सगलन में बहीन मुस्तारा का बाल काटता है। हाट में नया दारार गुन गया है। रजिस्ट्रा फानिग के काम के लिए पुराना कामा दारार हा काता है—उग उगवा सक्ता खाना है। पाटू बचवर्ती टूटू चौधरी का मुख बल है। कदिल ता यह पत्नी हा

बार आया है पाटू चक्रवर्ती। अबकी हकूक का पेचदार मामला है। लेकिन डेढ़ साल पहले वह रजिस्ट्री आफिस में एक बार आया था।

डेढ़ साल पहले की हाट से अब की हाट की गबल देखकर चक्रवर्ती न हैरानी भले ही जाहिर नहीं की, तारीफ कर रहा था। वापसी में घरा की गिनती में उसने तेरह गिना, टूलू ने सशोषण करके बताया, बारह। टूलू चौधरी को ज़रा ज्यादा बोलन की आदत है। बोले बिना उसका चलता भी नहीं। खतियान नंबर, प्लाट नंबर आप ही आप जवान पर आ जाता है।

चक्रवर्ती ने चारों तरफ देखकर कहा, मालती का रेस्टोरेंट लेकिन बहुत अच्छा बना है। थोड़ी-सी जगह में बहुत सुंदर बना लिया है। डेढ़ साल पहले तक भी टिन की दीवाल और टिन की छोनी थी। अब एकवारगी पक्का बना लिया। बिजली लगवा ली।

टूलू ने कहा अजी इसकी बात ही क्या! खूनी औरत है, जेल काट चुकी है जाबाब है। निसपर पहले बसत बनर्जी की चेली थी। सभासा में गीत गाया करती थी।

—अकरम-कुवरम कुछ नहीं—क्या ?

—सुनता तो हूँ। कुडू का तो दुह लिया। यह घर तो कुडू की ही जमीन पर है। कुडू लिखकर द गया है यह इकतल्ला दुवान और एक घर उसीने बनवा भी दिया है। ऊपर का हिस्सा इसने खुद बनवाया है।

—सुना है। बुगपे में कुडू की अकन मारी गई थी। पगु हो गया था। लकवा।

—हां। उस समय इसने उसकी सवा की। सो की है। वह एक गजब की औरत है जनाब। कहा नहीं कि पहल बसत की चेली थी। बसत के साथ उसी समय विगड चुकी थी। वह और गोपा। बसत तो कहेया है न। हजार गापिया। सभी उसकी भिन। पहले कहा करता था कि शादी नहीं करूंगा। ब्रह्मचारी रूंगा, लीबरी

करूंगा। यह यानी मालती जब जस स निवर्त्ती यह गोपा स जा जुटा  
 था। यह क्या करती! इसन कुछ का फनाया। गापा स ब्याह कर  
 बसत ने पर बना लिया सगिन। सते भी बाग लिया।  
 एक कमचारी दोड दोडा घाया। बाबू साहब बुला रहा है। बडा  
 उपाड गया है।

चक्रवर्ती काम-बाग म बडा घोर घासी है आसानी स धवराता  
 नहीं। कहा क्या जी भूख सगी है साहब का सन्न नहीं है?  
 टूलू ने कहा मैंने परल ही बताया आदमी यह बदमिजाज है।  
 रुपया पहले दे दने स ठडा रहता।

—तुमने ही तो देरी की। बातो म रम गए। लकिन हा मज  
 की बात म सभी रमत है। तुम भी मसगूल हो गए मैं भी मसगूल हो  
 गया। लो, रुपया लवर जाओ।  
 कमचारी न कहा, आपको जाना होगा। बुला रहा है।

—मुझका जाग पडेगा?  
 —जी।

टूलू ने कहा चलिए न। हज क्या है! आगिर एक वार ता हाजिरी  
 देनी ही पडगी।

चक्रवर्ती उठा। एक तो मोटा आदमी फिर आदमी की छत बचा  
 कर चलने की आदत। फिर भी लाचारी उसस वचते हुए एक बिनार  
 स चलना पड रहा है। हाट के प्रागण म घूष आने म अभी भी देर थी।  
 आन से थोडा और आराम होगा। अगटन का अत। अय की सरदी भी  
 ज्यादा पडी है। दुकानो म खरीद विक्री चल रही थी। विशेष रूप स  
 खाने पीने और पान बीडी की दुकान म। चाय की दुकान म ज्यादा भीड  
 है। मालती के रेस्टुरेंट की छ मेजा की छब्वीस-सत्ताइस लाह की कुर्सियो  
 म से कोई खाली नहीं। श्रीमती की भी दुकान म भीड है। वहा भी  
 भीड बढी है। उसकी दुकान माटी की थी। पक्के खभो पर टिन की  
 छोनी। अय पक्का हा गया है। बगल म एक कमरा बड गया है।

ऊपर कोठा । दूल्हा का दफनर श्रीमती के कोठे पर है । उसने कहा,  
जरा रुकिए—मैं कुरता बदल लू । कुरता स पसीने की बू धा रही है ।  
अफसर जा है पसीने की बू स उखडता है ।

श्रीमती की दुकान म भी सामन कुर्मी पर एक बिघवा युवती बठी  
है । दखने मे सुंदर भी ह जवान भी है—हसती भी खूब है । जरा कुछ  
ख्यादा हल्की किस्म की है—अगालीन ।

श्रीमती चत्रवर्ती का पहचानती है । बोली, अर बाबू ?

—हा । पहचान रही हो ?

—आपको नहीं पहचानूगी भला !

—बूढा हा गया हू न !

—और मैं क्या नहीं हुइ हू ? चाय पीजिए न ।

—रहने दा । पुकार हुई है । देर होन से शायद साहब बाटता है ।

हस उठी श्रीमती । बोली, अरे बाप रे, नाव म ररसी डालकर  
नचाता है !

—समय का महिमा ! और, यह कौन है ?

हसकर श्रीमती न कहा, नाते म मेरी वहिन-बेटा होनी है । उस  
जवान छोकरी न आकर बगल म दुकान खाल दी । मेरी दुकान कानी  
हा गई । बुढिया की दुकान म कौन खाता है । इसीलिए छोकरी ही ले  
आई । अरी नमस्कार कर न रे साबी—

साबित्री न मुसकरा दिया—नमस्कार बाबू । आइएगा । यही चाय  
पीजिएगा ।

इतने मे दूल्हा चौधरी आ पडा, चलिए ।

श्रीमती की दुकान से आग मालती की दुकान । बतरह भीड ।  
अदर चार चार छोट लडके काम कर रहे है । दो दो ठाकुर । उस पुराने  
ठाकुर के साथ यही का और एक छोकरा काम करता है । पहले नौकर  
का काम करता फिरता था । नाम है हाराधन नदी । चपा नहीं है ।  
वह नवद्वीप चला गई है ।

बुट्टे के यहाँ जहाँ ही मामली ग जाता था। धुन किया, चना न  
एक दिन कहा, मौसी घब मुझ किया क्या !

उगव मुझ की धार गेगवर माती ग क्या, अच्छा नहीं लग रहा  
है मौसी !

चपा बोली—ती !

मालती ने कहा, तो फिर जाया। मैं हर महीन कुछ रुपय न  
दिया बन्गी।

—नहीं। रुपये भेजने की जरूरत नहीं।

मालती ने कहा ठीक है !

उसके मन में बहुत-सा बातें थाइ पर उसने पूछा नहा।

मालती आज भी चपा मौसी के बारे में सोच रही थी। आज उसकी  
चिट्ठी आई है। उसने कुछ रुपय मागे हैं। मालती चुपचाप सोच रही  
थी और सामने की तरफ ताक रही थी। भुवनपुर की हाट की ओर ऐसे ही  
देखती रही वह। उस तरह से देखते रहने से कुछ भी देखना नहीं होता।  
मन ही मन लेता लेती और याद करके ही वक्त बटता। आदत हो गई  
है। कभी-कभार अचानक कोई हो हल्ला हो जाता है तो वह देख  
लेती है।

सोच रही थी चपा मौसी को लिखा आएगी। कभी जी में था  
रहा था ले आएगी। खूब सेवा करगी उसकी उसके बाद समझा  
कर उससे कहेगी, मौसी जिसे पाप कहते हैं मैंने वह नहीं किया  
है। नहीं किया है। नहीं किया है। पाप जिसे कहती हो वह तो  
दूर की बात मैंने उसे मन में भी नहीं लाया। लेकिन खेल को अगर पाप  
कहो, तो मैं पापी हूँ। मेरा मन देनवाला वह प्यार उस हनुमान के  
बच्चे-सा ही मर गया था। कुछ दिनों तक मरे बच्चे की नाइ मरे हुए  
प्यार को छाती से लगाए बठी थी। भूठ नहीं बहूगी। भूठ बहू भी क्यों  
मौसी ! मुझे कोई उम्मीद नहीं है। अपने हाथ से बाध हुए डले को मैं

खोल घाई हू। झूठ क्या कहू, अरमान होता है। अरमान है। नहीं रहा होता  
 ता क्या की गहर बाजार में चली गई होनी। उससे घातिर कितना बलक  
 होता। भाष पर एक क बाद दूसरा जा बलक बढ़ रहा है उससे क्या बह  
 ज्यादा होता। नहीं होता। अपना अरमान का जो मैं किसी तरह से भी नहीं  
 छोड़ पा रही हू। मेरा अरमान तो बसत को घेर कर नहीं है। तुम जो  
 भी बसत खाने को बहो खा सकती हू मैं। तुम्हारा धन छूकर बह  
 सकती हू। बसत का लहर अरमान किया था—बसत को दाप नहीं  
 दूगी—बह मेरे हिसाब की भूत थी। अमन को पाप पुण्य भी नहीं है।  
 बह क्या जा है मैं नहीं जानती। उस भय भी नहीं है प्रेम भी नहीं है। उसे  
 अपना काम है और है स्त्रिया के मन से खिलवाए करना। गोपा त खुद ही  
 मुझसे कहा है, उसके विषवा होने के बाद जब जेठ से उसका मामला  
 मुकदमा चला, उस समय बसत उसके जेठ का ही एक साप्ताहिक पत्र  
 निकालता था। नौकर था उसका। फिर भी उसने अपने मालिक का  
 विराप किया था, भगडा किया था जेठ के ही भ्रखवार में जेठ का भडा-  
 फोट किया था। वही उस दिन जो गोपा भुवनपुर आई, उसके दूसरे  
 दिन बसत आया। घरे वही जिस दिन बत्ती की लेकर भयना ही गया,  
 जिस दिन बसत की बात सुनकर मैं चौकी। जिस दिन उससे मैंने गाना  
 तोड लिया। मैंने कहा, बत्ती अपनी ल जाओ। ब्याह न करके हृदय में  
 प्रेम करना, यह मेरे वग की बात नहीं। दूसरे दिन दूल चौधरी बदवान  
 के उस बाबू की लेकर आया। उस दिन क्या हुआ था पता है? बसत  
 वहा से सारा कागज पत्र, दस्तावेज चिठठी-पत्रों भायब कर लाया था  
 उसमें गोपा के जेठ का मृत्युवाण था। उन लोगान पुलिस में खबर  
 दी थी।

—चार कप चाय चार चाप, आठ निभकी !

मालती हिली डुली। नजर उठाकर देखा। एक ही साथ माहक  
 आए थे। जिस नौकर ने उन तागों का सामान दिया था, उसीने, जो  
 दिया था, सो बनाया। हिसाब करके मालती को दाम लेना है।

मासनी उरा ाती । हार ही बालना है । बोली, एव रपया धार  
भाता ।

देव रपया देवर मन घादमी न कहा बाकी की सिगरेट । विस ।  
मासनी ने सिगरेट निवालकर हाथ न हाथ सटाकर ही दा ।  
उमके बा मीफ सुपारी की ततरी बना दी ।

मला घादमी चना गया ।

उसने बाद टू लू चौधरी स फिर एव दिन भेंट हुई थी मौसी  
उम दिन तुम्हारे गौराग का भूलन था तुम दुकान नहीं भाई था । वसन से  
मन फलन हा जान की बात उस समय फल चुकी थी । बात कैसे फलती  
है तुम जानती ही हो, तिसपर भुवनपुर की बात । कहत है

हाट मे बात खुली जहा

फल भर म जहा-तहा ।

घोर फिर यह भुवनपुर की हाट । टू लू चौधरी ने कहा, उमे टिकली  
न यताया । यताया होगा । टू लू न कहा था, मैं यदि लिल दू । लिल दू कि  
चौदह पद्रह की उग्र म जब मैं जेन नहीं गई थी, वसत की चेली थी,  
तभी से मैं और गोपा दोनों उसको प्यार करती थी । वह भी हम दोनों को  
चाहता था । मुझसे कहा था तुझमे ब्याह कख्या । वह जान नहीं मानता,  
कुछ भी नहीं मानता । उसक बाद जल से छूटी तो देखा कि वह मुझसे  
गादी नहीं करना चाह रहा है । इसलिए कि वह गोपा का प्यार करता  
है । उससे उसका गुप्त सम्बन्ध हुआ है ।

कहा था यह कहो तो कुछ भूठ कहना तो न होगा । वह गापा को  
प्यार करता है । नहीं तो तुम्ह वचन देकर आज मुबर बयो रहा है ?  
और तुमने तो हाट म बताई है प्रेम की बात । व बाने तुम तिल गो  
तो गोपा का जन् तुमको एक हजार रपया देगा । साथ ही उन तुमने ब्याह  
करण का मजबूर करेगा ।

मैंने कहा था, नहीं । लेकिन वह गापा को प्यार करता है इसका  
सन्त पाया था । समझने म देर नहीं लगी थी । तुमसे मैंने कहा नहीं ।

उस हनुमान मा की तरह मरे प्रेम को छाती में रखकर बड़ी तकलीफ पाई थी ।

प्रेम भुवनपुर की ही क्या बात, शायद तीनों भुवन में वही नहीं है । शायद हाँ कि हो—सो जैसे ही पदा होता है वैसे ही मर जाता है । मन देकर मन मिल सकता है मन और मानुस, दाना नहीं मिलते । अपने को देकर आदमी एक दूसरा आदमी पाता है, वहा आदमी के साथ मन नहीं रहता । मन मानुस दानो देकर दोना पाने स क्या होता है, जानती हो ? अपने अपने मन को ही वापस लता है । गोपा की बावत भी यही हुआ है मोसी । मेरा मन भी मरा है मेरा मैं भी मेरा है । मैंने किसी का नहीं दिया है । दी है—हसी दी है, बातचीत दी है । और पाया है रुपया-पसा । सुख—हा सुख भी है बगव ।

—पाच प्याला चाय दस बिस्कुट, एक पकेट कप्सटन सिगरेट । ग्राहका का एक दल छटा है । दाम देगा ।

—एक कप चाय सिफ ।

—रुकिए जरा । पहले इनका ले लें ।—भीठी हसी हसती है मालती ।—जरा देर । एक-एक करक । मैं तो अकेली हू न ।

—दस सिघाडा बारह निमकी दा वडे रसगुल्ले—ला दिए है ।

माटर का भापू बज रहा है । सेटलमट की जीप कही जा रही है ।

पेट पर से किसी के ठोस पर चील ने भपट्टा मारा । ठागे मे वह भिठाइ ले जा रहा था ।

एक बज रहा है । चाय की दुकान की भीड़ घट रही है । हा, मिघाडा कचोरी बिक रही है । मालती उठी । नहाएगी खाएगी । उसके बाद फिर आकर बठेगी । ठाकुर नौकर बारी बारी से नहाने जाएंगे । सेटलमट के मुबक्कल खाने जा रहे हैं । अभा होटल में भीड़ है । तीन होटल खुल गए हैं । खूब चलती है उनकी । तालाब में लोग नहा रहे हैं । बहुत से लोग कुण पर सर धो रहे हैं । हाट का खाली करके मुबक्कल लोग हाट के बाहर पेड़ तले डेरा डाल रहे हैं । सोमवार की हाट । हाट



लगेगी। बाबाथान के पडे आ गए। इस समय उनकी खूब चलती है। हाट की आमदनी इसी समय से आने लगी है। सरदियों के दिन हैं, तरकारी का मौसम। इस वार तरकारी उपजी भी खूब है। प्रौर हाट के पास सेटलमेंट आफिस के आ जाने से दूर दूर से बिकन को आती भी है। सेटलमेंट कप अब नाम का ही कप है—आफिस के हिसाब से कप कहा जा सकता है। नहीं तो आफिस के लिए पडों के एक फरीक न—देवेनमिश्र न—घर बनवा दिया है। बड-पीपल के जगल के पास जो परती जमीन पडी है, वह पडो की है। सेवायत के नाते वह उहीके कब्जे म है।

प्रौर प्रौर मकान भी बन रहे है। देखा-देखी दूसरे पडे भी बनवा रहे हैं। उस जमीन के लिए मामला भी चल रहा है। पडो से पडो का।

मालती के घर मे कुप्रा है। छोटा सा आगन। एल भाकार का थोडा-सा बरामदा। रेस्टुरेंट के अलावा दो कमरे। कमरो को मालती ने स्कूल की दीवियों को किराए पर दिया था। लेकिन वे चली गई हैं। मालती की यहां बदनामी बहुत है। स्कूल की व्यवस्थापक समिति ने एतराज किया था। कुछ दिनों तक सेटलमेंट के बाबुओं को दिया था। उनके खिलाफ भी दरखास्त पडी। एक बेइया जैसी प्रौरत के घर कम चारी लोग रहते हैं। वे भी हट गए। उससे मालती को खास नुकसान नहीं हुआ। जिस कमरे का दरवाजा बाहर की प्रौर है, उसे किराए पर देकर दूसरे कमरे को बूडे ठाकुर को रहने के लिए दे दिया है। बूडे ठाकुर की वह रतल भी रहती है। वह मालती का काम बाज कर देती है। उनके चार बच्चा म एक बच्चा भी यही रहता है। नहाकर चूल्हे पर भात चढ़ाकर मालती खिचकी के सामने बठी थी। वह दुल्ले पर रहती है। पर-द्वार खासा सजा-सजाया है। यह पर वास्तव मे उस बूडू बनवा द गया है। बदवान का वह बाबू जिस दिन प्राया था, उसके तीनेक महीन बाद बूडू बीमार पडा। सबका

भार गया। बेट-बहुए उस लेकर मुसीबत म पड गई। उन लोग ने नस रखने को कहा। कुडू ने तन नस का नही रक्खा। वह घर के एक बिनारे के कमरे म रहन लगा। काफी पस पर एक नौजर रख लिया। अस्पताल म मरने के लिए जाएगा? उमन अपन बूते पर इतना बडा र खवार खडा किया, एसा भाग्य बनाया—मला मे घूमा किया। इतन दिनाक बाद अनिम समय सबना आता है सब का घाएगा। मगर इतन तना तक घूमते रहन के बाद वह मरेगा भी घर मे नही? मालती कुडू का एहसान नही भूली, बल्कि उसका मेल जाल कुछ ज्यादा ही बडा।

उन बत्ती क लिए ही उसने श्रीमती से शीख-मुकारकर जो कहा था, उसस गाव म ही क्या सारे इलाके म और भी नमक मिच मिला-कर हलचल हुई थी। और उस बत्ती का खरीदते बकन बसत कुडू से आप ही कह धाया था, आपने कितन रुपये दिए हैं कुडूबाबू जोछ-जाड कर रलिएगा—मैं दे दूगा। उसके बाद खूब मीठी मीठी बितु तेज, जिसे मिसरी की छुरी बहते हैं उसीसे उसने कुडू पर चोटें की थी। अट्टारह साल की लडकी, और आप? कितनी उमर है आपकी? सतर? आपकी बडी पोती के कितन बाल-बच्चे हैं?

कुडू भी अजीब चरित्र का आदमी था। वह खूब हसा था। कहा था, मैं आपके पिता गरत उस्ताद का गगिन था। कितना खाया पिया मोज-मजा किया। उस्ताद ने मुझ तबला सिखाना चाहा था, पर इकताला की बच्चाली म ताल बट गई। मैंन कहा था तबला सीखने से मैं बाज धाया उस्ताद मेरे लिए सुनना ही अच्छा है। उसने कहा वही बेहतर है काका। मुझको काका बहता था। मगर आपसे वह माता जोडने की जरूरत नही—आप लीडर हैं। खैर। ठीक तो है—आपकी उमर चौबीस-पच्चीस है। नए जमान के आदमी हैं। उसी का लेकर आप जो हो, कीजिए।

बसन ने कहा, आप लोग जाल फेंककर आदमी फसाते हैं। जाल

आपको समेट लेना होगा। मैं आपको वह दे दूंगा। समझे ?  
 दूसरे दिन बदवानवाले उस बाबू के आने की खबर पाकर बसत साइकिल स सथिया होकर जाने कहा चला गया। वह साप्ताहिक अखबार का कागज-पत्तर हटाकर यहाँ ले आया था। उस दिन दिन डूबते समय बड़ू स्वयं मालती की दुकान में आया था। मगल का मान मा जसा था। एक अजानी रलाई से भरा। पुकारने पर जवाब नहीं, हिलडोल नहीं। उछल-कूद नहीं। लेकिन उसकी कल्पना स वह बसत को लेकर अपन भविष्य की रचना नहीं कर पा रही थी। चुप बठी थी।

कुछ नहसकर कहा हारे मालती मैं आ पडा। तुभसे एक बात कहने के लिए आ गया।

मालती न कहा, कहिए।

—कह रहा था, तू क्या दुकान नहीं करेगी ?

—बसत बाबू कल एक बत्ती खरीद लाए। और बातें तो उसने

बहुन कही। लेकिन मैंने समझा तू गायद दुकान नहीं करेगी।

ठीक उसी वक्त ठाकुर एक लालटेन जनाकर ले आया। बूड़ न बहा, धरे। लालटेन ? वह नई बत्ती क्या हो गई ?

मालती ने कहा मैंन वह वापस कर दी बूड़ बाबू। जिसकी थी वह ले गया।

—ले गया ? कहती क्या हो तुम ?

—बहा तो मैंन लौटा दी।

—लौटा दी। उमीव लिए बाजार म इतनी हलचल है !

दुर दुर।

—बाजार की हलचल स मेरा क्या हाना है बूड़ बाबू ! मैं जस काटकर घाई हू।

—तो ?

—वह लवा फिमाना है ।

—कहा नहीं जा सकता ?

—बखूबी ! उससे क्या मेरी पट सकती है कुड़ू बाबू । वह और है मैं और हूँ ।

कुड़ू कुछ देर चुप बठा रहा । उसके बाद बोला, देख उस श्रीमती का मैं बहुत किया । उस जमाने में वह बड़ी तूफानी औरत थी । बानती बहुत अच्छी थी हसती अच्छी थी चलती अच्छी थी । मेरी उस समय की जुबान—बुरी बात निकल आना चाह रही है । वह मुझ अच्छी लगती थी । मेरे घर जाया करती थी । मेरी स्त्री से बनती थी । उसके पास नाचती गाती थी । हरफन मौला थी । बुरी भी थी । मुझे फसाने की ताक में थी । मगर कुड़ू मछली मारता है पानी में नहीं उतरता । हसी मजाक—बहुत हुआ तो हाथ पकडा । कुछ अय्या न सोचना ।

मालती का मन मनुष्य का मन था । वह मन बाता बातो में मेरे बच्चे की बात भूल गया था । उस छाती से उतारकर कब बगल में रख लिया था याद नहीं । वह कुड़ू की बात पर हसते हुए ही बोली मैं भी ढाई साल जेल में थी । कहिए आप ।

कुड़ू न वही कहा, जो जुवेदा कहा करती थी । कहा यह सत्तार ही चल है रे । मन ही मन जो हो कह लो । खर । जा कह रहा था । श्रीमती बहुत बार बड़ी-बड़ी भभट में पडी । उसके खसम ने उसे छाड दिया था । मैंने ही उसे बुलाकर कहा था, घर के पागल को छोड देने से ही बाहर वह नगा हागा । पकड लो । घर में रखो । रुपया देकर मैंने व्यवसाय करा दिया । रुपये उन लोग ने दे दिए । रुपये नहीं लिए, सा नहीं कहता ! अच्छा ढग स ही चल रहा था । एक देता था दूसरा लेता था । पति मर गया । हाट की वह जगह मेरी ही थी । सस्ते नाम पर दे दी । हाट उस समय जम रही थी । अब तक किराए



देखकर घोर यह जानकर कि तू दुकान करेगी, मुझे लगा, पास ही अगर तुझे बसी दुकान करके बिठाल दू तो उसे सबक सिखा सकूंगा। जभी मैंने तुझमें पूछा, तू राजी हुई—बिठा दिया। तू अगर नहीं भी करेगी तो मैं उस दुकान को उठाऊंगा नहीं, किसी दूसरे को लाकर वहा बिठा दूंगा।

मालती न कहा, दुकान में करूंगी कुडू वाडू। कहा तो आपसे, उससे मेरा चुक गया।

कुडू उठ खड़ा हुआ। बोला तो मैं चलता हू। एक बत्ती वहीं से जलवाकर भिजवा देता हू। उनलोगों ने बत्ती जलाई है। तुम्हें भी जलानी हागी। कल एक ग्रामोफोन का इतजाम करूंगा। समझ गई। अगर हो सके, तो कल एक बार आना।

बीस ही मिनट के बाद एक जलती हुई बत्ती आ गई। यह बत्ती बसतवाली से बड़ी थी, कीमती, देखने में भी अच्छी।

श्रीमती दुकान में नहीं थी। सबेरे टिकली ने बताया था वह अपनी बिभी वहिनवेटी को लाने गई है।

मालती उस दिन दुकान से घर लौटने के रास्ते में ही कुडू के यहा गई थी। कुडू का मकान पक्के का है। मगर खुद वह माटी की दीवाल और फूस की छौनीवाले घर में रहता है। नौकर है। फूस का घर होने के बावजूद बिगली-बत्ती है पखा है।

कुडू ने हसकर कहा तो रात को मरने के लिए क्यों आई ?

—रात ही आ गई।

—मेरी बदनामी का अंत नहीं है। तेरी भी होगी। मरेगी।

—मैं जेल काट आई हू। मुझे उसका डर नहीं है। आप अपनी सब बात कह जाए, अब मैं अपनी सब सुना जाऊ।

—बहुत खूब। राधा के बदा दूती थी। तेरा मैं हू। आखिर मन की बात कहने के लिए भी कोई चाहिए न।

—नहां। मैं राधा नहीं हू। राधा नहां बनूगी।

—क्या ?

—मैं राधा की तरह रोती नहीं। मुझसे रोया नहीं जाता।

—शाबाश ! शाबाश ! खाएगी कुछ ?

—नहीं। सिर्फ अपनी मुनाकर चली जाऊगी। आप महाजन हैं। मैं खातक हूँ। आपने मुझे बुलाकर दुकान पर बिठाला है। आपको सब कहे बिना नहीं होगा। और उसने जीवन की प्रायः सारी ही बात कही थी। कहने के बाद कहा कहत हैं, भुवनपुर की हाट में मन देने से मन मिलता है। मैंने डेला बाधा था। कल उसे खोल दिया। मन देकर मन लन की जरूरत नहीं है मुझे। इसकी ज़सी भूठी बात और हो नहीं सकती। आदमी मिलने से मन मिलता है। आदमी अपने को देकर आदमी को पाता है—उससे मन नहीं पाता—ऐसा होता है, पाता है, ऐसा भी होता है। लेकिन आदमी को वाद करके मन देकर मन, ऐसा नहीं होता।

—अरे ! आखें दोनों बड़ी-बड़ी हो आई थी कुडू की। उसने अवाक होकर मालती की बात सुनी। बात खत्म होते ही आखें फाटकर कहा जतना जानती है तू !

—जेल में सीखी है। जुबेदा बीवी से।

—यह जुबेदा बीवी कौन हुई ?

मालती ने उसे जुबेदा बीवी के बारे में बताया। कुडू ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। कहा, बाप रे ! काली तारा नहीं कहूँगा, मगर यह तो ढाकिनी-योगिनी है रे !

ढन् से घड़ी में घाघा घटा बजा। आखा पर एक रखकर कुडू ने घड़ी की तरफ देखा— अरे रे, साढ़े ग्यारह बज गए। जरा मजा तो देख।

—क्या हो गया ?

—इतनी रात को जाएगी ?

—मैं मजे में चली जाऊँगी।

—नहीं-नहीं। रोगनी लेकर कोई तुम्हें पट्टा धाए। बदनामी की परवा तो तुम्हें है नहीं। हा। लेकिन एक बात सुनकर जा।

—कौन-सी बात ?

—वसत गोपा के साथ उलझ गया है। बदवानवाला आदमी मरे पास भी आया था। वसत छिप गया है।

वसत ठीक ठीक छिपा नहीं था। विचित्र आदमी है वह। वह चारों तरफ घूमता रहा और गोपा के जेठ से लड़ता रहा। लडा ही नहीं लडकर जीता। वसत के बच्चे में कुछ ऐसे वागजात आ गए थे कि गोपा का जेठ गोपा से समझौता करने को मजबूर हो गया। पचीस हजार नकद गोपा के पति का सारा सामान और बदवान में एक मकान—इसपर सुलह हुई। इनके अलावा गोपा का अपना गहना-गुरिया तो था ही। मामले के समझौते के लिए गोपा बदवान गई थी। समझौता हो जाने पर वसत का हाथ पकडकर वह ब्याह की रजिस्ट्री कराने गई। उन दोनों ने शादी कर ली।

इस बात को भुवनपुर पहुंचने में देर नहीं लगी। बात ही नहीं आई वसत भी आया था। वसत मालती की दुकान पर भी आया था। खरीदकर चाय पी थी।

जाते जाते कह गया, भूल, मुझमें थोड़ी भूल हो गई मालती। मैं अपनी बात रख नहीं सका। परंतु इसके लिए दोषी गोपा है—नहीं-नहीं छोड़ो—उसे दोषी बनाने से क्या लाभ? फिर भी मैं इसे सुधारने की कोशिश की थी। कोई उपाय लेकिन न रह गया था। गोपा गभवती है।

मालती अवाक होकर सुन रही थी।

अभी भी वह बीच-बीच में आता है। सभा अभी भी करता है। हाट में ही करता है। एक दिन सभा में किसी ने पूछ दिया—पहले अपनी कफियत दोजिए तो आप! आपने द के यहा की विधवा लडकी से शादी क्या की? गोपा स?

वसत गरज उठा था—इसलिए कि विधवा विवाह कानून से जायज



है, इसलिए कि विधवा विवाह धर्म संगत है। गोपा मुझे प्यार करती थी, मैं भी गोपा को प्यार करता था, इसलिए। और जात-पात ? जात-पात का भेद पाप है, अशुभ है। जात-पात मैं नहीं मानता।

गजब। एक ही बात में सब मुन्न घसीट गए थे। बसंत उस दिन भी आया था। अभी भी अक्सर आता है। एक भ्रमेला हो गया है। सेटलमेंट के चक्कर में आ गया है। भुवनपुर की माटी का चक्कर भी कहिए। यहाँ की माटी पर उसके पाव गड़ गए हैं। गोपा के रुपये से बसंत ने मकान बनवाया है। बदवान के मकान को बेचकर यहाँ मकान बनवाएगा। लेकिन जमीन का भ्रमेला हो गया है। वह रही वह जगह। भुवनेश्वर के पडो की जगह में दस कट्ठा जमीन। बसंत ने वहाँ इट चूना, बालू गिराया। पडाने एतराज करके काम रोक दिया। वह जगह खोकाठाकुर की है। खोकाठाकुर ने शर्त उस्ताद को स्टाम्प पर अपना मकान लिख दिया था और कहा था मेरा जो कुछ भी है आप से लाजिएगा। लेकिन उस दस्तावेज पर दाग नंबर देकर यह जगह नहीं लिखी हुई है। उस समय यह जगह हाटखालो की मला माटी की जगह थी। अब पडाने आपत्ति की है। चूँकि ये लोग खोकाठाकुर के अपने सगे हैं इसलिए इस जमीन का हकदार यही लोग हैं।

बसंत ने गोपा से रुपये लिए हैं। प्रेस खरीदेगा। अखबार निकालेगा। गोपा के बच्चा हुआ था। गुजर गया।

अब एक दूसरे को जकड़कर दानो मीटिंग में माते हुए हैं। गोपा गायद चुनाव लड़ेगी। गोपा ने हसते हुए मालती से कहा है क्या मजा है मीटिंग करत हैं मीज से रहते हैं।

मानती न पूछा था तूव सुख में है गोपा ?

—सुख-दुख नहीं समझती। मज में हूँ। वह गराव पीता है मैं सिनमा देखती हूँ। मेरे भी दोस्त हैं। वह भी बाघरी लिए रहता है।

उसके बाद धीरे से उसके कान में कहा जानती है ? कभी-कभी मैं भी पीती हूँ।

—क्या ?

—गराब । पार्टी-वार्टी में जाती हूँ । घर में भी कभी-कभी । यह तो आजकल का पैगन है ।

सारी दुनिया ही म नित नूतन है । भुवनपुर में भी । हाट में इसका मला लगता है । मानती स न हो सका । वह मदा खेल ही खेलती गई । भुवनपुर की हाट में आज मन देकर, मन लेकर आज-कल कल परसों लोटा दना चल पडा है ।

मान जसने लगा क्या ?

भट उठी वह । थोड़ा सा पानी ढालकर चलाया । हा, जल ही गया । आज नसीब में नला हुआ भात ही है । मालती ने उतार लिया ।

अकसर होना है—बाई नई बात नहीं । ससार में गायद एक वही पुरानी रह गई । होत-हाते भी नई नहीं हा सकी । कभी-कभी सोचती है काग, यदि वह गोपा की तरह बसत को पकड़ पाती बाघ पानी, तो वह भी गोपा की नाइ सुख-दुःख समझे बिना मजे में रहती । मीटिंग करनी । बसत शराब पीता वह सिनेमा देखनी । पार्टी में पीती ।

न यह उससे नहीं हाता । उसमें एक गजब की प्यास है ।

मात्र मन ही नहीं मात्र मनुष्य ही नहीं, मन और मनुष्य दोनों पाकर भी गायद उसका प्यास नहीं मिटेगी । मगर अब वह ज़िदगी को खाच नहीं पा रही है । और फिर भी बदनामी का अत नहीं ।

ओ । पहली बदनामी कुनू को लेकर ।

कलक लगा—मौसी चली गई । उसके मन ने कहा, जाओ ।

कुडू क लववा हुआ । अपने उम बगले में एक प्रकार से अकेला ही पडा रहना । वह जाती सिरहात के पास बठती । कहा घर-द्वार बडा गदा हो रहा है कुडूबाबू ।

कुडू न पीका हसकर कहा, कौन करे ? किससे बहू ? लडके कहत है अस्पताल जाओ । अस्पताल में नहीं जाता । मरने क समय मेरे

मुह में तुलसीदल दगा बहा, दूध गगाजल देगा ? मैं भला अस्पताल जाऊ ?

—कोई नर्स रख लीजिए ।

—नर्स ? दुर-दुर ।

—ठीक तो है । मुझे रख लीजिए ।

—तू ? तू रहेगी ?

—रहूंगी । दोनों शाम सफाई कर जाऊंगी ।

—उह । रह सकेगी ?

—तो—। जरा सोचकर हसती हुई बोली—हा, सकूगी । रसिए । कुडू ने बगल के कमरे में जगह कर दी थी । छि छि से भुवनपुर भर गया । कुडू के लडके-बडके लग आ गए । उन्होंने आपत्ति की—बननामी जो फल रही है नहीं मुन रह है ?

कुडू ने कहा नहीं !

काई न महीने के सेवा जतन के बाद कुडू चगा हो गया । लाठी के सहारे थोडा थोडा चलन लगा ।

उधर दो महीने से दुकान में नुकसान हो रहा था । श्रीमती ने बहिन-बेटी को लाकर अपनी दुकानदारी जमा ली । मालती कुडू को छाठकर दुकान आ नहीं रही थी । कुडू न सुना ता कहा यह नहीं होगा । चल, रिक्शा करके मैं खुद जाऊंगा ।

दुकान गया । ठेकेदार को बुलाकर कहा तीन महीने का अदर पक्के का मकान बन जाना चाहिए । ज्यादा पैसे दूंगा मैं ।

चार महीने सगे थे । उस अरत के लिए कुडू टिन की दुकान को वहाँ से खिचकर ज्यादा खिराए की जगह में ल गया था । चार महीने के बाद कुडू स्वयं उस मकान में रहने का निग घाया था । मकान मालती के नाम लिए दिया था ।

दुकान का कुडू ही सजाकर द गया है ।

मालती दुकान में बठ करती । बीच बीच में उठकर कुडू का दग

आया करती। बाहर गाहका की भीड़ आती। वह हसती हुई फिर आकर कुर्सी पर बठ जाती।

बुड़ू आखिर गुजर गया। इसी मकान में मरा।

उसके सिरहाने में मालती ने तुलसी का बिरदा रक्खा था। उसके बेटे बेटा का बुला लाई थी। उन लोग ने दूध गगाजल दिया था।

उसके बाद एक एक करके बित्तनो के साथ उसकी बदनामी हुई, इसका टिभाव नहीं।

मन कभी-कभी चंचल हुआ। सेंटलमट आफिस का एक बाबू। कम उमर का। बड़ा अच्छा लगता था। वह मालती को चाहने लगा था। मालती डावाडोल हुई थी। लेकिन सुना कि उसके स्त्री है। उसके बाद से उसने हसी मजाक ही किया। इससे ज्यादा नहीं।

और भी बित्तनो के साथ। लेकिन वह असह्य हो आया। अब नहीं। बीच बीच में नाटक को खत्म करने की इच्छा होती। उसकी वासना कभी कभी नदी की वात-सी उमड़ आती।

भगवान को भी नहीं पुकार सकती। भगवान पर भी तो उसे विश्वास नहीं। रहता तो, तुम्हारे ही पास मालती जाती मौसी।

श्रीमती की दुकान में ग्रामोफोन बज उठा। नाच का गीत। हाट गुरू हुई।

न देर है अभी। डेढ़ बज रहा है। ठाकुर आकर खड़ा हुआ। तरकारी लेकर आया था। आलू की भुजिया, गोभी की तरकारी, मछली।

—और वह क्या है ?

ठाकुर ने कहा भंडे की तरकारी।

मालती ने कहा बाप रे ! इतना क्यों ?

—साधो न ! दुनिया में खाओगी नहीं तो क्या करोगी ?

गुस्सा हो आया। फेंक देन की इच्छा हुई उठाकर। मगर अपने को जव्त किया। कहा, नहीं। ले जाओ। वह ले जाओ।

—खामोगी नही ?

—नही !—खुब चिल्लाकर बोली ।

अड की तरकारी का बटोरा लेकर ठाकुर चला गया । वह खाने बठी । अचानक यह बया हो गया उस । सब उठानकर खँक करके हसिए से जैसे बासदेव को काटा था, वैसे ही अपन का काटन की इच्छा होने लगी ।

ग्रामोफोन म दूसरा गीत बज उठा ।

कार फीतावाला उसकी खिडकी के ही पास चिल्ला रहा था, कार, फीता । फीता कार । जमाई को बाघो तो खुलेगा नही—

उठ बठी वह । खिडकी से उभककर देला हाट लग गई है । आज सवेरे सवेरे ही लग गई । लेकिन दोपहरी ढल रही थी । अभी चाय के गाहक कम होंगे । बीडी सिगरेट विकेगी ।

हाथ धोकर वह जरा लेट गई । तद्रा घा गई । अचानक प्राप्त खुली । ठाकुर पुकार रहा था माजी ।

—क्या है ?

—बसत बाबू गोपा—ये सब घाए हैं । बुला रहे हैं ।

—बसत ! गोपा ! किसलिए ?

—बठेने जरा ।

सीभकर उठी वह । दरवाजा सोलकर निवली । गोपा लडी थी ।

बाहर क दरवाज क पास बसत रिक्शा का किराया चुना रहा था । उसक साथ एक और कार्ई । एक नही दो जने । एक की पागाक अजीब-सी । गरमा भया । पहनाव का कपडा सफे । सर पर गरमा रग की पगडी । घासा पर नीला घामा । घहर पर चेचक का दाग । वह एक घामा का हाथ पकडकर घर घा रहा था । अया है क्या ? कौन घायन घा किस स घाया ?

है ? बसत घा किस स घाया ? यह भी कोई पटा है । वह सामने । घायन कोई सभा करणा । यह भी कोई पटा है । वह सामने । घायन घा किस स घाया ?

बसत न कहा, हा ।

अधा ही है वह । बड़ी होगियारी के साथ टटोलकर पाव रख रहा था । उसन आवाज दी मालती ।

कौन ? —अचरज म पड गई मालती ।

बसत ने पुकारा, मालती ।

मालती सीढिया से नीचे उतर आई ।

उधर ग्रामोफोन बज रहा था । अदकी उसीके रेस्टुरेंट मे । वही गीत—

कहा ठिकाना मन राधा का कहा भुवन म कौन भवन मे ।

मालती बरामदे पर आई । नीरस गले से ही बोली, भाग्यो ! लेकिन उसकी वह पुकार कोई नहीं सुन पाया । नीला चश्मावाला पगडवाला भादमी बोल उठा, हाय-हाय-हाय । और साथी का हाथ छोडकर सामने को हाथ फैलाते हुए गा उठा

कह सकती है कौन सज्जनिया कौन स्वजन रे ।

अरे

अरे किस बस्ती में किस नगरी मे किस जगल म,

किस निजन म !

ओ मरी मन राधा का—

अचानक गाना बद करके बोल उठा मेरी गुदगुवागुब' कहा है ?

बसत ने उसके बदन पर हाथ रखकर कहा, होगा ? फिर होगा ?

—फिर होगा ? क्यों ?

—वह देखो, मालती छठी है ।

—एँ ! मालती ! बलिहारी, बलिहारी । कहा है रे शरीर छोरी कहा है ? वीर बाकुरी कहा है ? बाप को बचाने के लिए दासदेव जसे पहनवान, राक्षस कहो, उसे काट डाला और सजा काटी—तू वीर है । कहा है तू ? मैं अधा हू रे । कहा है ?

मालती बोल उठी, कौन ? उसके भाश्चय की सीमा नहीं थी ।

शामोफोन न रेकड की आवाज और इस आदमी का गला टूबह  
एक !

बसत ने कहा, पहचान नहीं रही हो ?

—पहचान नहीं रही है ?—हा हा करके हस उठा वह आदमी ।  
उसके बाद गा उठा—उज्ज्वल नीला तारा !

सोनाठाकुर ! नोबूठाकुर ! लेकिन शकल कसी हो गई है ? सारे  
चेहर पर चेचक का दाग । वह रग होत हुए भी जस नहीं रहा है । लवा  
दुबला । आखें नीले चश्मे स ढकी । कहता है अघा हो गया है । वे आखें ?  
गजब की ! ओह ! उसके मन म चुपचाप एक ओह हुआ और तुरन्त  
यह क्या हो गया ? आखा म जलन हो गई—ठीक जलन जसी । तुरन्त  
ही उसने महसूस किया कि उसकी आखो म आसू आ गया है । उसके  
मन मे खोकाठाकुर का वही रूप वही काति नाच उठी । चपा मौसी  
कहती थी सोनाठाकुर ! आ । आसू शायद टुलकता आता है । उसने  
भटपट आसू पोछा । उसके बाद आगे बढ़ी । पाव छूकर प्रणाम किया ।

—मालती । वाह वाह ! प्रणाम कर रही है !—भुक्कर उसने  
उसके बाल पर हाथ रक्खा । मालती खडी हो गई । उसने सर पर हाथ  
फेरकर वह बोला ख जा । देखू जरा तू कसी हुई है । अपने हाथ वालो  
पर कपाल पर फिर कई बार सहलाकर बोला वा वा वा तू तो खूब  
सुदर हो गई है रे ! खूब सुदर !

मालती समझ गई सोकाठाकुर पागल ही हो गया है । उसने बात  
को उलटकर कहा तुम्हारी यह कसी शकल हो गई ठाकुर !

—क्या हा गई है ?

—देख नहा पात हो ?

खोकाठाकुर ने चश्मे को उतार दिया कसे देख पाऊ ? आ  
दोना आखें गल गई हैं । आ । मेरी आखा म आसू आ रहा है ।  
बसत न कटा चल, अब बाहर खडे-खडे नहीं । बठने की जगह दे  
जरा ! सवेरे हवटा म गाडी पर तवार हुआ हू । क्या भई नहा

भोगे न ?

—भर्रे बाप रे ! नहाए बिना तो मर जाऊगा । लेकिन वह फिर होगा । पत्ने तुम्हारा काम । जिसके लिए भ्राया गया है । समझ गए ! बाप रे ! तब स मुना है चन तही है । दिए हुए का हरण करनवाला ! बाप रे बाप ! दम्नावज मे लिखा नही है तो क्या हुआ ! मैं तो उस्ताद से कह गया था, मेरा जो भी है सब ल लेना । मेरी गुरु दक्षिणा । टूलू चौधरी गवाह है, घरनीदास है श्रीमत मर गया ।

मालती जगह बनाकर उहें अदर निवा गई । बिठलाकर एक टेबिल पन तगा दिया । कहा थाडा तलपान कर लो बसत दा ।

बमत न कहा, चाय दे ।

खोकाठाकुर ने कहा, मुझे थोडा पानी पिला पानी । और भर चेने को चाय बाय दे । क्या खाभाप मन्ना ?

मन्ना लडका सा है । वह बोला चाय ही पिऊगा ।

मालती जा रही थी । खाकाठाकुर ने कहा, अर, अपने आदमिया से कह दे । तू बठ । बठ ।

खाकाठाकुर ने कहा, मीनी नवद्वीप चली गई है । तुम्हने नही पटी । तूने खून मच्छी दुकान है । पक्क का घर । बिचली की बत्ती । बडी चलनी है । वाह ! वाह ! नौकरा से कह द, ल भाए । तू बँठ । अन्तिम दिने म तून खुडू की बडी सेवा की । मैं कहता हू वाह ! वाह !

मालती का मन तमह म सन्त हो उठा । किनु अपने को जवन किया उमन । वाली अभी अभी बठनीहू ठाकुर । नौकरों से भी यह सब बनता है भला ! कितन दिना के बाद भाए हो जरा । आदर जतन करू । बसत दा लोडर है । पात से बूना भी गिर जाए तो कित्ती दिन मीटिंग म पोल खोल देगा । गाया नहाभागी तुम ? कर दू इतजाम ?

खोकाठाकुर बोल उठा ठीक ठीक । ठीक कहा है । जा-जा ।

मालती चली गई । उमन मुना कि खोकाठाकुर गुनगुना रहा है । पहन वह गोपा का लेकर खुभा लले गई । वह नहाएगी । गोपा ने उससे



कहा खोकाठाकुर इस समय मशहूर भ्रादमी है रे। ग्रामोफोन रेकड  
म उसका गीत आता है। वह जो कौन सजनिया कौन स्वजन रे वाला  
गीत है न वह तो उसीका गाया हुआ है। अच्छा पसा मिलता है। वही  
सांस्कृतिक आयोजन कुछ होता है तो इसे रुपये देकर ले जाते हैं लोग।

मालती म अब भ्रवाक होने की भी शक्ति नहीं थी। उसका भीतर  
कसा तो निर्वाक हो गया। जो बातें वह कहती रही वह उसी तरह से वही,  
जसे दुकान में सोचते सोचने भी हसकर गाहको से कहती है। अपने मन  
म वह उस खोकाठाकुर और इस दुबले, अर्धे मले रगवाले खोकाठाकुर  
की सोचने लगी। दोनों हरगिज नहीं मिल रहा है। सिफ बात और मन स  
मिल रहा है—वह भ्रादमी वही है।

खोकाठाकुर का बड़ा नाम है। बड़ी भ्रामदमी है। यह बात मानो  
उसके मन म नहीं पठी।

वह जरा हसकर चली गई। जरा देर म लौटी—नौकर क हाथ म  
द्र पर चाय चाप सिघाडा। अपने हाथ म शरबत का ग्लास। एक टिन  
गोल्डफ्लक सिगरेट। उसे खोकाठाकुर के बीड़ी पीने की गाजा पीने की  
याद हो आई। ठाकुर बठा बठा तब भी गुनगुना रहा था। बसत बग म  
स निकालकर कागज-पत्तर देल रहा था।

शरबत का ग्लास ठाकुर के हाथ में देकर मालती ने कहा पियो।

—अरे भीठी भीठी गध आ रही है। रोज सिरप। वा वा वा।  
तू बहुत अच्छी हो गई है मालती। बड़ी अच्छी। जाती है मेरी इन  
आँखों के गए पाच छ साल हो गए। चेचक निकला। उसके बाद से  
एक चीज समझ म आई। चेहरे पर हाथ केरकर मैं समझ सकता हूँ  
कि रूप कसा है। और बदन की गध से यह समझ लता हूँ कि मन  
कसा है। साबुन-त्तल की गध नरी। मुझे एक गध मिलती है। तेरे बदन  
की गध मुझ मिली है।

—पी ला। शरबत पी लो।

शरबत पीकर शरार स ग्लास को रखने जा रहा था। मालती ने

उसके हाथ से ग्लास ले लिया—दो । देने-लेने में दोनों के हाथ एक-दूसरे से लगे ।

—एक जा । एक जा ।

हाथ पर हाथ फेरकर कहा, देवों । बड़ा मुतायम है रे । बड़ा मीठा ।

—छोड़ो । यह लो । उसने सिगरेट का टिन और दियासलाई दी—

पीयो ! जो बीड़ी पूका करते थे—और—

हा-हा करके हस उठा खोकाठाकुर ।—याद है ? हा-हा-हा हा ।

एक ही कश में बीड़ी को साफ कर देना था । और, उस मास्टर का कान पकड़ना ? हा-हा हा-हा ।

बमरा हसी के मारे कापने लगा । एकाएक हसना बंद करके बोला, लेकिन अब तो मैं यह सब पीता-बीता नहीं हू ।

—नहीं पीते हो ?—मालती को आश्चर्य लगा ।

हाथ बड़ाकर बमत ने सिगरेट दियासलाई ले ली—मुझको दो । गाल्डफ्लेक है । वाह !

—अब तो ठाकुर एक नामी आदमी है—काफी बमाई—गोल्डफ्लेक के सिवा दे सकती हू मला । सो तुम भी मशहूर आदमी हो—तुम्हो लो ।

बमत ने क्वा हा । नवीन बाऊल बहुत बड़ा आदमी है । प्रसिद्ध आदमी । वर । मैं कप से ही आता हू तुम बँटो नोब ।

मापा नहा रही थी । खोकाठाकुर के माथ का वह लडका हाट देखने गया । बमत चला गया । बठ रह खोकाठाकुर और मालती । मालती न कहा तुमने यह सब छोड़ दिया है, ताज्जुब लगता है ।

खोकाठाकुर ने कहा, गला बठ जान लगा । हरगिज ठीक नहीं हो रहा था । अपनी न कहा डाक्टर को दिखाओ । डाक्टर ने कहा, अत तक कैसर हो जाएगा । मैंने कहा सो हो । आप मेरा गला ठीक कर दीजिए । बस हो गया । कहा बीड़ी सिगरेट पियोने ता गला दिन दिन बठता ही जाएगा । कसर भी होगा । समझा ? क्या करू ? गाना-वाना बंद ही जाएगा । बाप रे ! छोड़ दिया ।

—कसर ! —मालती रो पड़ी—इलाज नहीं कराया ?

—कराया ! जाच-वाच की । गले का मास वास देखा ! कहा, नहीं, कसर नहीं हुआ है । लेकिन सिगरेट गागा पीने स होगा । गला ठीक हो गया । वह गा उठा—

कुल रखू कि कलक बताए कौन हाय रे  
कुल साने की सेज कलकी काजल केशमुहाय रे ।

कुल रखू कि रखू कन्हैया  
कुल से रह न काहू री दैया

कुल खोज तो कूल नहीं फिर, बीच भवर रह जाए रे !

मालती के भ्रासू अब रोके नहीं सके । गाल से हाकर भरन लग । यह गीत मानो उसी का हो । यह तो वही है । उसका कुल भी गया कन्हैया भी । माथे पर केवल कलक का धाभा लिए भुवनपुर की हाट म सौदा करती फिरती ह । जीवन म आकठ तृष्णा । एक का उसने मन दिया अपने आपको दिया उसे नहीं पाया नहीं पाया । भुवनपुर की हाट मे केवल पसों की ही लेन देन ह । इसके सिवा सब भूठ ह ।

गानाबद करके खोकाठाकुर ने कहा अब मरे गले म कुछ भी नहीं है । खूब अच्छा हो गया ह । और भी खुल गया ह । समझी ? गीत की कतर भी खूब है । खूब । गीत भी मेरा ह । मेरा । मैंने लिखा ह । अरे चुप हो गईं ! तारीफ नहीं की ? मालती खली गईं ?

मालती हट गई । खोकाठाकुर न उसके मुँ की ओर हाथ बढ़ाया । देखने लगा, वह है या नहीं ।

फिर आवाज दी मालती । तेरी गध मिल तो रही ह मुझ । खसो तो नहीं गई है ?

मालती उठ खड़ी हुई । आँखें पाछकर वाली लाधागे क्या, सो कहो । मछली-बछती ता खात हो न ?

—खाता हू । समझी—मास । पाटा-भा मास चाहिए ।

—मास खाते हो ?

—खाना पडता है। डाक्टर ने कहा है। जानती हो कसर तो नहीं हुआ, हो गया टी० बी०। देख नहीं रही है, दुबला हो गया है।

—टी० बी० ?

—हां। बुखार होने लगा। उसके बाद मुह से खून आने लगा। सोचा, गला फट गया होगा। फिर डाक्टर से दिग्वाया। उसन छाती की तसवीर ली। वहा, टी०बी० है। कहा, अस्पताल म भर्ती हो जाओ। मैंने ना किया। गाना बद हो जाएगा। बठकी बद हा जाएगी। मरना है तो गाते गाते ही मरुंगा। मरने के समय के लिए गीत लिखूंगा एक लिखा भी ठीक मरने के समय का नहीं कुछ पहले का। सुनेगी ?

और वह शुरू हो गया—आ !

मालती की बोलती बद हो गई। वह ना नहीं कर सकी।

खोकाठाकुर गान लगा—

खत्म हुई बेला मला की, हुआ घाट का वहा इगारा  
बोझ कहा रखू यह सरका विकट नदी है नहीं किनारा  
दरदी कहा, कहा अपने जन  
जो लेगा माये का कचन

मन मान ना फकू जल म बडे जतन का यह धन सारा।

अचानक थक गया। बोला तू रो रही है मैं समझ रहा हू। रहने द।

मालती ने आखा को पोछ करके कहा तुम यटा कहा आए हो ? वह जगह तुमने बसत को दी है, सटलमट की अदालत म यही कहन के लिए ?

—हारे। बसत बहादुर है। खूब बहादुर है। खोज करके ठीक ही निवान लिया। समझी ! कहा मैं आया हू कि तुम कुछ रुपय ले ला और लेकर मुझे लिख दो। तुम्हे कुछ कमी तो है नहीं।—ठीक ही कमी मुझे नहीं है। अच्छा मिल जाता है। और मिल चाहे नहीं मिले गुरु को जवानी दिया है लिखने म ही चूक हो गई, तो क्या उसका रुपया लू ! और फिर बसत बहादुर है अच्छा आदमी है कसेजावाला

है। गोपा को म्याह कर लिया। चोट्टे का काम तो नहीं किया न। नींदर है। भक्ति करता हूँ उमरी। एमा की मैं भक्ति करता हूँ। मैंने पढ़ा, हमारे लिए क्या किस बात का? क्या किसलिए? चला चलो कह दूंगा। मैंन दात किया है। गुद को लिया है। यमन मेरे गुद का बटा है। चला आया। बट दूंगा, काम बन जाएगा। बल चला जाऊंगा। तुम लोगो से भेंट हो गई। बाबा भुवनेश्वर को दंडित कर आया। जाते यकत फिर एक बार कर लूंगा।

बाहर हाट लगी थी। एक बहुत बड़े छत्ते में मामुम मधुमाटी भन भन गुन-गुन कर रह थी। बीच बीच में दो चार मूब ऊंचे गले की पीत पुवार।

या तो भगडा होगा, या कोई किसी को पुवार रहा होगा। या फिर जोर जोर से कोई अपने मोदे की हाक लगा रहा है। लेकिन मानती को लगा सारा भुवनपुर आधी रात जसा सन हो गया है। कहीं कोई जाग नहीं रहा है। उसी में वह सोई जा रही है। बात चुक गई है चिंता खो गई है। जीवन ही गायद समाप्त हो जाए।

अजीब है खोकाठाकुर।

नवीन बाऊल का नाम सुनकर सेटलमट आफिस के साहब ने कहा गाना सुनाना पड़ेगा।

खोकाठाकुर खुग हो गया। बहुत खुश। बोला बेशक। लेकिन वहा, हाट पर।

हाट में जोरा की बत्ती जनाकर महफिल जमी। भीड़ बहुत हुई। सारे भुवनपुर के लोग जुटे।

मालती ने मना किया नहीं। यह क्या कर रहे हो?

जा लडका साथ में था वह अपने तो मना नहीं कर सका। मालती से कहा मना करने के लिए। लेकिन खोकाठाकुर ठठाकर हस पडा।

मालती बोली ऐसे हसो मत ठाकुर। तुम अपना भला-बुरा नहीं

समझत हो ।

अधा ठाकुर परा म घुघरू बाधन हुए बोला, अरे, भुवनहाट म गा लन दो जी की भोली खाली करके । अरे यह तो पद ही बन गया । बाह-बाह !

भुवनहाट मे गा लेने दा जी की भाली खाली करके ।

ले जाने दो दुख उतारकर सुन से अपना आचल भरके ।

यहा बधा मनत का डेला ।

गिरकर जा खोया उस बेला ।

किस जादू मे किया रतन उसको अलबेला ।

स्वण मून म पहन उसे नू गले गूथ करके ।

अवाक हो गई मालती । बात नहीं पुरी । उसने हाथ पकडकर उस ले जाकर महफिल म उतार दिया । देखते ही देखते नोबूठाकुर एक और ही आदमी बन गया । गरुआ भगा पहनकर मस्त हो उसने गाना गुरु किया । सबसे पहल वही गीत । उसके बाद गीत पर गीत । घुघरू बाधे नाचा । लाग मत्रमुग्ध हा गए । बाह-बाही उसने खुद दी । हाय हाय करके सरस बाह खुद ही किया । कभी बोला—अहा हा—

साडे दस बजे के बाद महफिल टूटी । फिर भी उस रिहाइ नहीं मिली । मालती की दुकान के सामने कुर्सी डालकर सटलमट का साहब बैठा । बीच म खाकाठाकुर का बिठाया । कहा अब आपका बात सुनूगा ।

नोबूठाकुर तो हसत हसत बेहाल—बात ! बात क्या ?

—आपकी कहानी । यहा से बाज्ज होकर चल गए थे आप ।

नोबूठाकुर सहसा गभीर हो गया । फिर अचानक ही हसकर वाला, उरा आदमी के मन को तो देखिए । गुस्सा हा आया । राम राम । यानी उस समय बड़ा दुख था । समझ गए । गुरु बुरा कहता था लोग राम बोलने मे । गाजा पिया करता था । कि ऐस म जयदेव क मेल म



एक बाऊल का गीत बड़ा भा गया। मैंने पकड़ा उसका पल्ला। मुझे गाना सिखाओगे? वह बोला, होगा तुझमें? अच्छा जरा गा तो कोई एक पद देखू, कैसा गाता है। मैंने उसको उसी का गीत सुना दिया। बहुत खुश हो गया। बोला, चल। लेकिन बड़ी तकलीफ होगी। मले मे मेरा वह उस्ताद था। थीमत था। थीमत को मैंने पोखरा दे दिया। आ यही देखिए। जबानी दान। बाबुआ ने बात पलटकर कसा किया, देखिए जरा। मालती लडकी बड़ी अच्छी है। मेरा गीत सुनन की ताक मे लगी रहती थी। बड़ा अच्छा लगता था। उसका क्या हुआ सो देखिए।

जरा देर चुप रहकर बाला खर। जो हुआ सो हुआ। भुवनपुर की हाट मे रोज रोज फौजदारी। आदमी का स्वभाव है यह। मारता है, मार खाता है। सजा भोगता है। लेकिन इस लडकी ने भोगकर भी जीत लिया है। क्या गजब किया है देखिए।

किसी ने कहा अपनी बात कहिए।

—मेरी बात? यह भी तो मेरी ही बात है। मालती को देखकर क्या खुशी हुई, वह नहीं सकता। क्या बताऊ। वसी ही खुशी बसत को देखकर हुई। अलबत। मद है। याह वा। वाह वा मैं भी हू। मेरी भी बाहवाही है। कुछ दिनों तक दो साल घूमा किया। चक्क हुई। भयंकर चेचक। पहले हुई गुरु को। गुरु चल बसे। मुझरो हुई। मैं कैसे जिंदा रह गया नहीं जानता। बच तो गया पर दोना आखें गइ। रास्तो की खाक छानता रहा। गुरु ने कहा था जा, तुझे मैंने दिया। अब अपने मे अभ्यास करने रहना—रास्ते रास्ते गाते चलना—लाग सुनेगे तेरा भी अभ्यास हागा। उसीसे जो मिलेगा तेरा गुजारा हो जाएगा। जो सोचना हो मन मे सोचना। याद रखना, पाप नहीं है, पुण्य भी नहीं है। लेकिन एक हिमाय है। उसी हिमाय से मुक्त कहा है यह खान। खोजने-खानन कष्ट हागा फिर खुशी भी होगी। मन मे उमी भाव का छत्र में पिराना पद बनेगा। यही गाया करना। मैं बसा ही

करता चल रहा था। एक दिन एक जगह नदी के किनारे बड़ी हलचल हो रही थी। आखा सं देख तो पाना नहीं। लाठी से टक्कटोर कर चलता हूँ। एक आदमी स पूछा, क्या भैया क्या है? तो बोला, तसवीर ले रहा है। वायस्कोप। उस समय सिनमा फिलिम क्या होता है नहीं जानता था? अब बहुत सीखा। बहुत। अब पढना पढता है लिखता-पढता हूँ। सो मैं भी खडा हो गया। बाता से कुछ-कुछ समझ रहा था। इतने म उनम से एक आदमी ने मेरा रग-रग देखकर पूछा क्या है? तुम क्या देख रहे हो?

मैंने कहा भरे बाबा, सुन रहा हूँ। सुनकर समझ रहा हूँ।

—पोशाक ता बाकल की है। गाना आता है?

—आता तो है। मुनिएगा? मेरा तो काम ही सुनाना है बाबा।

बोला तो बठ आओ।

कुछ दरम व लोग खाने बठे। मुझसे पूछा, खाम्रोने? कहा, दो। बोला मुरगी? मैंने कहा जो भी दाग बाबा वही खाने का आदेश है गुह का। लेकिन मुरगी कभी खाई नहीं है मास मत देना, बाकी सब दो।

बहुत हसे लोग। फिर गाना-बाना सुनाया। वही गाना समझ गए—मन राधा का कहा ठिकाना।' सुनकर वे बडे ही खुश हुए। कहा, पूरण से कम नहीं है। उस समय तक मैंन पूरण को नहीं सुना था। बाद म सुना। बहुत अच्छा। खर जा भी टा। उनलोगा न मेरे गीत का रेकड किया। बीस रुपय दिए। उनम से एक ने मुझसे कहा मेरे साथ कलकत्ता चला। लाभ होगा नाम होगा। रेकड म तुम्हारा गाना आएगा। मैं चला गया। यह दो साल पहल की बात है। लोगों ने बताया, उस आदमी ने मुझे ठग लिया। भर गीत के रेकड का सौ रुपया मुझे दकर रायल्टी वे ल लेते हैं। उनके पाम स मैं दूमर सज्जन के पास गया। उसके बाद चेला जुट गया। आनाडेरा हुआ। अब ता लोग काफी खातिर करत हैं। लेकिन कहत हैं, मुझे ठगते हैं लोग। मैं जानता हूँ। दो-तीन औरतो ने पीछा पकडा था। मेरे साथ-साथ घूमती थीं। मैं तो बड़ी आफत मे



पढा ! कोई रुपया लेकर लिसस पगती ! कोई घुन सीसाकर घपन ! कोई कहती, मुझमे गादी कर सो । मगर ब्याह मैं किसस करू ? इनम अपने गुरु का हिसाब है । जो लडकी मरी सरबत हो, जो मुमी म डूब, उस छोडकर किसस ब्याह करू ? गो गुरु न बचा लिया, जस ही सुना कि मुझे तपेदिक हो गया है, यसे ही एक एक करके भाग गइ । मैं सम भता हू, तपेदिक नहीं, यह गुरु का प्राणीवाद है । जय गुरु । समझ गए । एक बार की बात है, तविए क नीचे हजार रुपय रख थ । एक औरत ने देख लिया था, उठा लिया । उसके बाद बोली, कुछ रुपय उधार दा घर म बडा सभाव है । छुटकारा मिल गया । अब मुझ स भूत की तरह डरती ह—

इतना कहकर वह हा-हा करके हस उठा ।

फिर बोला, बसत मेरे गुरु का लडपा है । इसने जो बिना गुरुपुत्र के सिवाय और कोन कर सवता है ! मुझे यहां ले आया—भुवनपुर । मिट्टी का बधन इसने मिटा दिया । भुवनपुर की हाट—महा—

भुवन हाट म गा लेने दो—

समझ गए यह गीत आज ही बनाया है !

मालती अपनी कुर्सी पर बैठी सुन रही थी । नींद घा रही थी शायद ! भेज पर सर रखकर सो रही थी मानो ।

महफिल टूटी । रात के चारह बज रहे थे । नोबूठाकुर कमरे मे अपने विस्तर पर बठा था । सोया तो नींद नहीं आई । बचपन की बातें याद आने लगी । एक के बाद दूसरी तसवीर तर जाने लगी ।

कभी-कभी लगने लगा, वही कोई एक आदमी जाग रहा है । बाकी सब सनाटा । रात के करीब तीन बज रह होंगे ।

एकाएक दरवाजा खुल गया ।

नोबू ने पूछा—कोन ? और फिर तुरंत ही बोला—मालती ?

उसे उसके बदन की गंध मिली ।

मालती ने कहा हा ।

—क्या है रे ?

मालती ने नि सकाच कहा, सुनो । बल तुम्हारा जाना नहीं होगा ।  
बल तुम नहीं जा पाओगे ।

—क्यों रे ?

—बल ही नहीं, कभी नहीं जा पाओगे । मैं तुम्हारी सेवा करूंगी ।

—मालती ! मालती ! मेरे पास आ—सुन ।

मालती उसके पास जाकर बठी । नोबूठाकुर ने उसके भाये पर,  
मुह पर हाथ फेरकर कहा, सेवा करगी ? मेरी सेवा करेगी तू ?

—तुम्हारी सेवा करूंगी । तुम्हारा इलाज कराऊंगी । तुम्हें  
बचाऊंगी । मैं तुम्हारे रुपये नहीं चुराऊंगी ठाकुर तुमसे उधार भी नहीं  
मागूंगी । तुम्हारी धुन भी नहीं सीखूंगी । यदि हो सके तो तुम मुझे  
अपन छाप को देना ।

—एँ रो रही है तू ?—पैरा पर भासू टपका—मालती, तू मुझे  
लेगी ?

मालती उसके पैरो म मुह गाडकर झोंधी पड गई । कहा, मुझने  
अब नहीं सहा जाता । तुम मुझे स्वीकारो ।

नोबू ने कहा चल । मेरा हाथ पकडकर मुझे ले चल । भुवनेश्वर  
थान म थावा का साक्षी रखकर तुझे ले आऊ । ले पकड मेरा हाथ ।

रास्ते में दद से कोई कराह रही थी । कोई स्त्री । टिकली की बहन ।  
आसन्नप्रसवा थी । उसके बच्चा हो रहा था ।

नोबू ने कहा, कौन है ? क्या है ?

उधर कोई रो रही थी । चुनरिया । उसका बाप बीमार था ।

मालती बोली, वह कुछ नहीं है चलो ।

दोनां भुवनेश्वर थान चले गए ।



